विद्यालय

शिक्षक मार्गदर्शिका

सामाजिक अध्ययन

कक्षा 7

लेखिका :

रजनी गुप्ता

विद्यालय प्रकाशन

दिल्ली • मेरठ

© प्रकाशक

New Edition

मूल्य : ₹ 30:00

विषय-सूची

इकाई - I : भूगोल

1. हमारा पर्यावरण और इसके घटक 3
2. पृथ्वी की संरचना (आभ्यंतर, गतियाँ तथा भू-आकृतियाँ) 7
3. वायु और वायुमण्डल 15
4. जल तथा जल-चक्र 21
5. प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन 27
6. मानव अधिवास, यातायात एवं संचार 32
7. उष्णकटिबंधीय तथा उपउष्णकटिबंधीय प्रदेशों का जन-जीवन 39
8. रेगिस्तान में जन-जीवन 44
9. विश्व के शीतोष्ण प्रदेशों में जन-जीवन 48

इकाई II : विश्व और भारतीय समाज

1. कब, कहाँ और कैसे? 52
2. क्षेत्रीय राज्यों का उदय-I 56
3. क्षेत्रीय राज्यों का उदय - II 61
4. दिल्ली सल्तनत (1206 - 1526 ई.) 66
5. मुगल और उनका साम्राज्य 73
6. शासक और उनकी स्थापत्य कला 81
7. नगर, व्यापारी और शिल्पकार 87
8. जनजातियाँ, खानाबदोश तथा स्थायी समुदाय 92
9. धार्मिक जागरूकता 96
10. क्षेत्रीय संस्कृतियाँ 100
11. 18वीं शताब्दी का भारत 104

इकाई III : नागरिक जीवन

1. प्रजातंत्र में समानता 109
2. राज्य सरकार 113
3. लिंग और इसकी भूमिका 117
4. जनसंचार माध्यम और विज्ञापन की दुनिया को जानिए 123
5. बाजार : हमारे क्रय केंद्र 130

आदर्श प्रश्न-पत्र : I, II व III **135**

इकाई 1 : भूगोल

1 हमारा पर्यावरण और इसके घटक

रचनात्मक कार्य

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) परिस्थितियों का समूह (ii) (a) पर्यावरण विज्ञान

(iii) (c) जैविक और अजैविक घटक

(iv) () वायुमंडल (v) (d) ये सभी

2. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) भौतिक (ii) आदि मानव (iii) जलराशियों

(iv) जैवमंडल (v) घेरे रहती

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) मनुष्य के चारों ओर पायी जाने वाली प्राकृतिक, परिस्थितियाँ पर्यावरण कहलाती हैं।

(ii) पर्यावरण तीन प्रकार का होता है–भौतिक या प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा मानव पर्यावरण।

(iii) प्राकृतिक पर्यावरण में जैविक और अजैविक दोनों प्रकार के घटकों को सम्मिलित किया जाता है।

(iv) मानव के द्वारा किए गए आविष्कारों, खेती, यातायात, भोजन और रहन-सहन के तरीकों में आए तीव्र परिवर्तनों से निर्मित पर्यावरण मानव पर्यावरण कहलाता है।

(v) पर्यावणव ेक्ष ेत्रोंव ेन ाम–स्थलमण्डल,व ायुमण्डल,ज ैवमण्डल तथा जलमण्डल।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) जैविक और अजैविक कारक पर्यावरण के भौतिक या प्राकृतिक घटक कहलाते हैं। जैविक कारक में पौधे और मानव सहित सभी जंतुओं को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हें जैविक घटक कहा जाता है; जबकि अजैविक कारकों में वायु, जल, स्थल, धूप आदि कोस म्मिलितक ियाज ाताह ै।इ सप्रकारप्राकृतिकप र्यावरणम ें भूमि, जल, वायु, पौधों और जंतुओं को सम्मिलित किया जाता है।

(ii) पारिस्थितिक तंत्र, विज्ञान की एक क्रियाशील इकाई है, जिसमें पर्यावरण के अजैव घटकों व जीव समुदायों की परस्पर सक्रियता का अध्ययन किया जाता है। इस तंत्र का निर्माण सभी जैविक घटकों के पारस्परिक संबंध के द्वारा होता है, जो कि पर्यावरण के भौतिक और रासायनिक घटकों, जिनसे जीवों में ऊर्जा और पदार्थ के माध्यम से सहसंबंध विकसित होता है, के द्वारा होता है।

(iii) जैवमंडलप र्यावरणक ास बसेम हत्त्वपूर्णक्ष ेत्रह ै।प ौधेअ ौरज ंतु दोनों एक साथ मिलकर जैवमण्डल का निर्माण करते हैं। यह पृथ्वी का एक संकरा क्षेत्र है। यह जीवों को आवास प्रदान करता है। जैव क्षेत्रों का विकास पौधे और जंतुओं के अनुसार होता है। भूमि, वायु और जल एक-दूसरे से ताल बैठाकर जीवों को सहारा प्रदान करते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 8 पंक्तियों में दीजिए :

(i) पर्यावरण के चार क्षेत्र हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

(क) स्थलमण्डल : पृथ्वी की ऊपरी ठोस कड़ी परत, स्थलमण्डल कहलाती है। इसमें चट्टानें, खनिज और महीन मिट्टी पायी जाती है। पर्वत, पठार, घाटियाँ, वन, घास के मैदान, फसलें तथा मानव बस्तियाँ आदि सभी स्थलमण्डल में सम्मिलित किए जाते हैं।

(ख) वायुमण्डल : पृथ्वी के चारों ओर पायी जाने वाली वायु की

पतली परत, वायुमण्डल कहलाती है। इसमें विभिन्न गैसें, धूल के कण तथा जलवाष्प पायी जाती है।

(ग) जलमण्डल : पृथ्वी की सतह पर पायी जाने वाली जलराशियाँ जलमण्डल कहलाती हैं। इसके अंतर्गत सागरों, समुद्रों, नदियों, हिमखंडों, झीलों, खाड़ियों आदि को सम्मिलित किया जाता है।

(घ) जैवमण्डल : ये पर्यावरण का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। पौधे और जंतु दोनों एक साथ मिलकर जैवमण्डल का निर्माण करते हैं। यहप ृथ्वीक ाए कस ंकराक्ष ेात्रह ैाय हज ीवोंक ोअ ावासप ्दान करता है।

(ii) आदिमानव ने स्वयं को प्राकृतिक पर्यावरण के अनुकूल कर लिया था। वह सादा जीवन व्यतीत करता था तथा अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति से किया करता था। समय के बीतते-बीतते उसकी आवश्यकताओं में बदलाव आया तो उसका पर्यावरण भी बदला। उसने आग और पहिए का आविष्कार किया, जिससे उसके खेती, यातायात, भोजन और रहन-सहन के तरीकों में तीव्र परिवर्तन आया। उसने आदिमानव के जीवन के बदले सुविधायुक्त स्थापित मानव का जीवन जीना शुरू कर दिया। उसने व्यापार और वाणिज्य जैसी क्रियाओं को आरंभ कर दिया। उसने भोजन, वस्त्र और रहन-सहन में प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ बदलने वाले तरीकों को पहचाना। मानव पर्यावरण में परिवार, समुदाय, धर्म, शिक्षा तथा आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों को सम्मिलित किया जाता है। पार्क, इमारतें, पुल, सड़कें, रेलवे मार्ग, उद्योग तथा ऐतिहासिक स्मारक सभी मानव निर्मित पर्यावरण हैं और ये सभी स्थलमण्डल के अंग हैं।

4. निम्नलिखित में अंतर बताइए :

(i)

जैविक घटक	अजैविक घटक
जैविक कारकों में पौधों और मानव सहित सभी जंतुओं को सम्मिलित किया जाता है, जिन्हें जैविक घटक कहा जाता है।	अजैविक कारकों में वायु, जल, स्थल, धूप आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन्हें अजैविक घटक कहते हैं।

(iii)

क्र.सं.	स्थलमण्डल	जलमण्डल
1.	पृथ्वी की ऊपरी ठोस कड़ी परत स्थलमण्डल कहलाती है।	पृथ्वी की सतह पर पायी जाने वाली सभी जलराशियाँ जलमण्डल कहलाती हैं।
2.	पर्वत, पठार, घाटियाँ, वन, घास के मैदान, फसलें तथा मानव बस्तियाँ आदि सभी स्थलमण्डल में सम्मिलित किए जाते हैं।	इसके अंतर्गत सागरों, समुद्रों, नदियों, हिमखण्डों, झीलों, खाड़ियों आदि को सम्मिलित किया जाता है।

5. निम्नलिखित कथनों को पढ़कर पर्यावरण के प्रकार को पहचानिए और उसका नाम लिखिए:

(i) प्राकृतिक पर्यावरण

(ii) विशिष्ट पर्यावरण

(iii) मानव पर्यावरण

2 पृथ्वी की संरचना (आभ्यंतर, गतियाँ तथा भू-आकृतियाँ)

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) आग्नेय (ii) (b) पपड़ी (क्रस्ट)

(iii) (b) अवसादी शैलों में (iv) (a) 50 से 5 किमी

(v) (a) कायांतरित चट्टानों में

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(v) असत्य (vi) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) सीमा (ii) ऊपरी (iii) आग्नेय (iv) ग्रेनाइट

(v) काँच

4. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
कायांतरित चट्टान	बेसाल्ट
अवसादी चट्टान	बलुआ पत्थर
आग्नेय चट्टान	संगमरमर
मैदान	उत्तर का विशाल मैदान
पर्वत	हिमालय

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) पृथ्वी का आकार गोल है परंतु यह ध्रुवों पर चपटी है।

(ii) पपड़ी (क्रस्ट) पृथ्वी की बाह्य सतह होती है।

(iii) मेटिंल पृथ्वी की पपड़ी के नीचे वाली परत है।

(iv) मेग्मा पृथ्वी की पपड़ी की ठोस चट्टानों के नीचे पाया जाने वाला पिघला पदार्थ है।

(v) ज्वालामुखीश ांक्वाकारप र्वतह ै, ि जसकेव ेटरस ेल ावाग ैसोंव े साथ बाहर आता है।

(vi) भूकंप की तीव्रता रिएक्टर पैमाने पर मापी जाती है।

(vii) पठार पर्वतों और मैदानों के मध्य स्थित ऊँची भूमि है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में दीजिए :

(i) पृथ्वी का निर्माण तीन परतों से मिलकर हुआ है–पपड़ी, सीमा और कोर।

पपड़ी : यह पृथ्वी की सबसे बाह्य परत है। इसका निर्माण चट्टानों, मिट्टी ओर खनिजों से मिलकर बना है।

सीमा : क्रस्ट (पपड़ी) की नीचे वाली परत सीमा या मेटिंल कहलाती है। यह कठोर और सघन चट्टानों से बनी है।

कोर : यह पृथ्वी की सबसे आतंरिक परत है, जो दो भागों से मिलकर बनी है–आंतरिक कोर तथा बाह्य कोर। आंतरिक कोर में लोहा और निकिल द्रव्य अवस्था में विद्यमान है। बाह्य कोर ठोस अवस्था में पायी जाती है।

(ii) पृथ्वी की आंतरिक शक्तियाँ भूगर्भ में कार्य करती हैं तथा बाह्य शक्तियाँ पृथ्वी की सतह पर बल लगाती हैं। आंतरिक शक्तियाँ अचानक उत्पन्न होने वाली गतियों को जन्म देती हैं; जैसे–ज्वालामुखी तथा भूचाल आदि की उत्पत्ति, जो धरातल पर महाविनाश का कारण बनते हैं। बाह्य शक्तियाँ अपक्षयकारी; जैसे–सूर्यातप, वर्षा तथा वनस्पति एवं अपरदनकारी; जैसे–पवन, तरंगें, लहरें, नदी, हिमानी आदि होती हैं।

(iii) पृथ्वी के अंदर क्रस्ट में स्थित पिघले हुए गर्म मेग्मा के ठंडा होने पर बनने वाली चट्टानें अंतर्भेदी चट्टानें कहलाती हैं। पिघला हुआ मेग्मा धीरे-धीरे ठंडा होता है, जो दाने की तरह दिखाई पड़ता है और

इसलिए इसे ग्रेनाइट शैल कहते हैं।

(iv) वायुमण्डलीय ताप और दाब के कारण आग्नेय और अवसादी चट्टानों में परिवर्तन होने के कारण बनने वाली नई प्रकार की चट्टानें कायांतरित चट्टानें कहलाती हैं। उदाहरण–चीका मिट्टी से क्लेट, चूना पत्थर से संगमरमर, बलुआ पत्थर से क्वाट्र्ज आदि।

(v) पृथ्वी की तीन समानांतर परतें निम्नलिखित हैं–

सियाल :य हप ृथ्वीक ीस बसेब ाहरीप रतह ै,ि जसका िनर्माण सिलिका और एलुमीनियम से मिलकर बना हुआ है। इसलिए इसे सियाल (si + Al = Sial) कहते हैं।

(पृथ्वी की आंतरिक संरचना का चित्र पाठ्य पुस्तक पर पेज - 11 से देखें।)

सीमा : यह परत सियाल के नीचे पायी जाती है तथा इसका निर्माण सिलिका (si) तथा मैग्नीशियम (Ma) से मिलकर हुआ है; इसलिए इसे सीमा (Si + Ma = Sima) कहते हैं।

नीफे : सीमा के नीचे वाली परत नीफे कहलाती है। यह निकिल (Ni) और फेरस (Fe) से मिलकर बनी है। इसलिए इसे नीफे (Ni + Fe = Nife) कहते हैं।

(vi) ज्वालामुखी लगभग शंक्वाकार पर्वत होता है, जो भूगर्भ से नली के द्वारा उष्ण वाष्प, गैसें, लावा तथा अन्य चट्टानी पदार्थों का प्रवाह धरातल पर लाता है। गर्म पिघले हुए चट्टानी पदार्थों को लावा कहते हैं। ज्वालामुखी पर्वतों के ऊपरी सिरे जिसका आकार पहाड़ीनुमा,श ांक्वाकारख ाालीन लीव ेस मानह ोताह ै,क ोव्रेटर कहते हैं। इस क्रेटर से लावा बाहर निकलता है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 8 पंक्तियों में दीजिए :

(i) पृथ्वी की सतह पर तीन प्रकार की परतें पायी जाती हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

पपड़ी : यह पृथ्वी की सबसे बाह्य परत है। महाद्वीपों में यह 50

किमी तक गहरी है जबकि महासागरों में इसकी गहराई 5 किमी तक है। इसका निर्माण चट्टानों, मिट्टी और खनिजों से मिलकर हुआ है। ऊपरी पपड़ी का घनत्व 2.8 तथा निचली पपड़ी का घनत्व 3.0 है।

कोर : यह पृथ्वी की सबसे आंतरिक परत है, जो दो भागों से मिलकर बनी है–आंतरिक कोर तथा बाह्य कोर। आंतरिक कोर में लोहा और निकिल द्रव्य अवस्था में विद्यमान हैं। बाह्य कोर की मोटाई 5150 किमी है और आंतरिक कोर 5150 से 6371 किमी तकम ोटीह ैत थाय हठ ोसअ वस्थाम ेंप ायीज ातीह ै।क ोरक ा घनत्व 9.50 है तथा व्याय 7040 किमी है। दूसरे शब्दों में, इसका घनत्व मेटिंल के घनत्व का दुगना है। इसका ताप 2000° से. से 5000° से. तक रहता है।

सीमा : क्रस्ट की नीचे वाली परत सीमा या मेटिंल कहलाती है। यह कठोर और सघन चट्टानों से बनी है और इसकी मोटाई 2900 किमी है। मेटिंल के मुख्य खनिज सिलिकॉन और मैग्नीशियम हैं। इसका घनत्व 4.75 है।

(ii) **स्वेस के अनुसार पृथ्वी की आंतरिक संरचना :** स्वेस के अनुसार पृथ्वी तीन सामानांतर परतों से मिलकर बनी है। ये परतें निम्न प्रकार हैं–

सियाल (Sial) : यह पृथ्वी की सबसे बाहरी परत है, जिसका निर्माण सिलिका या एलुमीनियम से मिलकर बना हुआ है। इसलिए इसे (Si + Al = Sial) कहते हैं। इसकी गहराई 50 से 300 किमी के बीच है। इसका निर्माण मुख्यत: ग्रेनाइट चट्टानों से हुआ है।

सीमा (Sima) : यह परत सियाल के नीचे पायी जाती है तथा इसका निर्माण सिलिका (Si) तथा मैग्नीशियम (Ma) से मिलकर हुआ है; इसलिए इसे सीमा (Si + ma = Sima) कहते हैं। इसकी गहराई 1000 से 2000 किमी तक है। यह बेसाल्ट चट्टानों से बनी

है तथा ज्वालामुखी उद्‌गार के समय इससे लावा बाहर निकलता है।

नीफे (Nife) : सीमा के नीचे वाली परत नीफे कहलाती है। यह निकिल (Ni) और फेरस (Fe) से मिलकर बनी है। इसकी प्रकृति बहुत कठोर है तथा यह ठोस रूप में पायी जाती है। इसका घनत्व 11 है। इसका व्याय 6880 किमी है। लोहे की उपस्थिति के कारण इस परत में पृथ्वी शक्ति विद्‌यमान है।

(iii) **चट्‌टानों का आर्थिक महत्त्व :** चट्‌टानें हमें अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाती हैं, जिनमें से प्रमुख निम्न प्रकार हैं–

(1) चट्‌टानों के अपभ्रंशन से मिट्‌टी का निर्माण होता है।

(2) प्राचीनकाल में आदिमानव पत्थर से बने औजारों और कृषि यंत्रों का प्रयोग करता था।

(3) कठोर चट्‌टानों से सड़कें, इमारतें और रेलवे लाइनों के किनारे बनाए जाते हैं।

(4) हीरा, क्वार्ट्‌ज आदि जो शैलों के ही दूसरे रूप हैं, आभूषण और जवाहरात बनाने में प्रयोग किए जाते हैं।

(5) काँच, चट्‌टानों में पाए जाने वाले खनिज सिलिका से तैयार किया जाता है।

(6) चट्‌टानें सीमेंट, ग्लास, चीनी मिट्‌टी के बर्तन तथा रासायनिक उद्योगों में प्रयोग किए जाने वाले कच्चे माल की पूर्ति करती हैं।

(7) खनिज जल तथा गर्म पानी के झरने (गंधक जल वाले) आग्नेय चट्‌टानों में पाए जाते हैं।

(8) खनिज तेल (पेट्रोलियम) का निर्माण भी पेड़-पौधों के चट्‌टानों के बीच दबने से होता है। इस कार्य में लाखों वर्षों का समय लगता है।

(iv) **चट्‌टान चक्र :** तीन प्रकार की चट्‌टानों में परस्पर परिवर्तन होते रहने से एक से दूसरी का निर्माण होता है। जैसे–आग्नेय से अवसादी और अवसादी से कायांतरित चट्‌टानें बनती हैं। इस प्रकार

एक चट्‌टान से दूसरी चट्‌टान के रूपांतरण की प्रक्रिया को चट्‌टान चक्र कहते हैं। इस प्रक्रिया को आसानी से समझने के लिए द्रवित गर्म मेग्मा ठंडा होकर आग्नेय चट्‌टानों को जन्म देता है। वायु और जल आग्नेय चट्‌टानों को छोटे-छोटे अवसादों में तोड़ते हैं जिनसे अवसादी शैल बनती हैं। यही अवसादी शैल ताप और दाब के प्रभाव के कारण कायांतरित चट्‌टानों में बदल जाती है। कायांतरित चट्‌टानें पुनः पिघलकर द्रवित मेग्मा का रूप धारण कर लेती हैं और चक्र निरंतर चलता रहता है।

(v) भूकंप के प्रभाव निम्नलिखित हैं–

विनाशकारी प्रभाव : (1) भूकंप इमारतों, घरों, रेलवे लाइनों, सड़कों, पहाड़ियों, बाँधों आदि को नष्ट करता है।

(2) भूकंप से नदियों के मार्ग बदल जाते हैं, जो बाढ़ का कारण बनते हैं।

(3) भूकंप से बड़े पैमाने पर जन-धन की हानि होती है।

(4) भूकंप से बिजली के तारों के टूटने तथा ईंधन आदि के फैलने से आग लग जाती है, जिससे बहुमूल्य संपत्ति जलकर नष्ट हो जाती है।

निर्माणकारी प्रभाव : (1) सीज्मिक तरंगों का अध्ययन करके पृथ्वी की आंतरिक संरचना को जाना जाता है।

(2) नदी मार्गों के नष्ट होने से झीलों का निर्माण होता है।

(3) भूमि के नीचे बैठने से खाड़ियों का निर्माण होता है और इस प्रकार प्राकृतिक पत्तनों की सुविधा उपलब्ध हो पाती है।

(vi) धरातल पर पाए जाने वाली भू-आकृतियाँ निम्न प्रकार हैं–

पर्वत : सामान्यतः पर्वत धरातल के ऊँचे भाग हैं। ऊँची संरचना वाली भूमियाँ, जिनमें तीव्र ढलान वाली सतहों में चोटियों और शिखर बने होते हैं, पर्वत कहलाती हैं।

मैदान : नीची और समतल भूमि मैदान कहलाती है। इसका निर्माण

नदियों और जलधाराओं के द्वारा लाई गई गाद (silt) के जमाव से होता है। भारत का उत्तर का विशाल मैदान बहुत उपजाऊ है, जो बहुत बड़ी मात्रा में अनाजों का उत्पादन करता है।

पठार : पर्वतों और मैदानों के मध्य ऊँची भूमि को पठार कहते हैं। इसे Table land भी कहा जाता है। इसका निर्माण कठोर और पथरीली भूमि से हुआ है, इसलिए यह खेती के लिए उपयुक्त नहीं है। भारत में नागपुर और छत्तीसगढ़ के पठार इसके उदाहरण हैं। ये पठार खनिज पदार्थों के भंडारों के लिए पूरे भारतवर्ष में जाने जाते हैं।

4. निम्नलिखित में अंतर बताइए :

(i)

क्र.सं.	पपड़ी	मेटिंल
1.	पपड़ी पृथ्वी की सबसे बाह्य परत है।	क्रस्त (पपड़ी) की नीचे वाली परत मेटिंल कहलाती है।
2.	इसका निर्माण चट्टानों, मिट्टी और खनिजों से मिलकर हुआ है।	यह कठोर और सघन चट्टानों से बनी है।
3.	ऊपरी पपड़ी का घनत्व 2.8 तथा निचली पपड़ी का घनत्व 3.0 है।	इसका घनत्व 4.75 है।

(ii)

रूपांतरित चट्टान	अवसादी चट्टान
वायुमण्डलीय ताप और दाब के कारण आग्नेय और अवसादी चट्टानों में परिवर्तन होने के कारण बनने वाली नई प्रकार की चट्टानें रूपांतरित चट्टानें कहलाती हैं।	हवा, पानी, धूप आदि प्राकृतिक अभिकारकों के द्वारा बनी चट्टानों के किसी-न-किसी रूप में संगठित हो जाने तथा परतों में व्यवस्थित हो जाने से बनी चट्टानें अवसादी चट्टानें कहलाती हैं।

(iii)

ज्वालामुखी	भूकंप
ज्वालामुखी लगभग शंक्वाकार पर्वत होता है, जो भूगर्भ से नली के द्वारा उष्ण वाष्प, गैसें, लावा तथा अन्य चट्टानी पदार्थों का प्रवाह धरातल पर लाता है।	पृथ्वी की पपड़ी की गति के कारण पृथ्वी के हिलने को भूकंप कहते हैं।

5. निम्नलिखित के उचित कारण बताइए :

(i) सीमा के नीचे वाली परत नीफे कहलाती हैं क्योंकि निकिल (Ni) तथा फेरस (Fe) से मिलकर बनी है।

(ii) आग्नेय चट्टानों को मूल (प्राथमिक) चट्टानें भी कहते हैं क्योंकि पृथ्वी पर इन चट्टानों का निर्माण सर्वप्रथम हुआ था।

(iii) वायुमण्डलीय ताप और दाब के कारण अवसादी चट्टानें रूपांतरित चट्टानों में परिवर्तित हो जाती हैं।

(iv) कभी-कभी चिड़ियाँ विशेष प्रकार की आवाज करने लगती हैं तथा मछलियाँ तालाबों में बेचैनी महसूस करती हैं, जिनसे लोगों को भूकंप आने के बारे में पूर्वानुमान हो जाता है।

3 वायु और वायुमण्डल

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) ये सभी (ii) (b) 78% नाइट्रोजन

(iii) (a) समतापमण्डल में (iv) (a) थर्मामीटर

(v) (b) वायु की गति मापने में (vi) (b) 100° से.

(vii) (b) बर्फ के बेडौलकार टुकड़े

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
ताप	थर्मामीटर
वायुदाब	बैरोमीटर
वायु की गति	वायु गतिमापी
वर्षा	वर्षा मापी
पुरवा हवाएँ	ध्रुवीय पवनें

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) वायुमण्डल (ii) सर्वाधिक (iii) दिशा

(iv) चिनूक (v) आर्द्रता

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) पृथ्वी के चारों ओर 480 किमी की ऊँचाई तक पाया जाने वाला मिश्रित गैसों और जलवाष्प का आवरण वायुमण्डल कहलाता है।

(ii) किसी स्थान विशेष की निश्चित समय पर वायुमण्डलीय दशाओं को मौसम कहते हैं।

(iii) पृथ्वी पर वायु का आवरण चढ़ा है। यह आवरण, जिसमें अनेक प्रकार की गैसें पायी जाती हैं, पृथ्वी पर दाब डालता है, जिसे वायुमण्डलीय दाब कहा जाता है।

(iv) ग्रीष्म ऋतु की सुबह को घास या पौधों की पत्तियों पर सघनित जलवाष्प ओस कहलाती है।

(v) किसी स्थान, राज्य या देश की अधिक लंबे समय की वायुमण्डलीय दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं।

(vi) अवक्षेपण, जो धरातल पर द्रव के रूप में गिरता है, वर्षा कहलाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i)

क्र.सं.	मौसम	जलवायु
1.	किसी स्थान विशेष की निश्चित समय पर वायुमण्डलीय दशाओं को मौसम कहते हैं।	किसी स्थान, राज्य या देश की अधिक लंबे समय की वायुमण्डलीय दशाओं के योग को जलवायु कहते हैं।
2.	मौसम दिन-प्रतिदिन बदल सकता है।	अनेक स्थानों की जलवायु उनके ताप, वायुमण्डलीय दाब, वर्षा, धूप, बादल, वायु तथा आर्द्रता के कारण भिन्न-भिन्न हो सकती है।

(ii) **वाष्पोत्सर्जन :** वह भौतिक क्रिया, जिसमें जल सूर्य की किरणों से गर्म होकर जलवाष्प में परिवर्तित होता है, वाष्पोत्सर्जन कहलाता है।

संघनन : जलवाष्प के जल में परिवर्तित होने की क्रिया को संघनन कहते हैं।

(iii) वायुमण्डलीय दाब को वायुदाब मापी के द्वारा मापा जाता है। यह किसी बिंदु पर संपूर्ण वायु स्तंभ का भार होता है। एक लीटर वायुदाब लगभग 1033.62 ग्राम-सेमी के बराबर होता है और इसे एक वायुमण्डल कहते हैं।

जब दो स्थानों के वायुदाब का अंतर ज्यादा होता है, तब वायुगतिमापी (ancometer) से वायु की गति मापी जाती है। इसकी घूमने वाली शाफ्ट पर तीन या चार कप लगे होते हैं। कपों पर लगने वाला वायुदाब शाफ्ट को घुमाता है तथा इससे जुड़ा हुआ मीटर इसकी गति को दर्शाता है।

(iv) हवा चलने का प्रमुख कारण धरातल पर वायुदाब में अंतर का होना है। धरातल के निकट वाली वायु गर्म होकर भार खो देती है तथा हलकी हो जाती है और ऊँचाई वाले स्थानों की ओर चलना प्रारंभ कर देती है, जबकि ठंडी वायु निम्न वायुदाब वाले स्थानों की ओर बहने लगती है। ऐसा वायुमण्डलीय दाब को समान बनाए रखने के लिए होता है। इसी कारण से वायु चलती है।

(v) सामयिक पवनें (हवाएँ), जो मौसम के अनुसार चलती हैं, मौसमी हवाएँ कहलाती हैं। मानसून मौसमी पवनें हैं, जो भारत से होकर चलती हैं। इनकी दिशा समयानुसार बदलती रहती है। भारत के अतिरिक्त ये पवनें श्रीलंका, चीन और उत्तर पश्चिमी आस्ट्रेलिया में भी चलती हैं।

(vi) चार स्थानीय पवनों के नाम–चिनूक, फोहन, सिरोक्को एवं मिस्ट्र हैं। इनका वर्णन निम्नलिखित है–

चिनूक : उत्तरी अमेरिका में रॉकी पर्वत के पूर्व में चलने वाली गर्म-शुष्क हवा को चिनूक कहा जाता है।

फोहन : यूरोप में आल्पस पर्वत की उत्तर दिशा में चलने वाली गर्म-शुष्क हवाएँ फोहन कहलाती हैं।

सिरोक्को :ग र्मत थाअ ार्द्रतायुक्तह वाएँज ोस हाराम रुस्थलस`

आइबेरिया प्रायद्वीप की ओर चलती हैं सिरोक्को कहलाती हैं।

मिस्ट्रल : मध्य फ्रांस के पठार की ओर से नीचे की ओर चलने वाली ठंडी हवा को मिस्ट्रल कहते हैं।

(vii) निम्न वायुदाब वाले क्षेत्रों में वृत्ताकार मार्ग में चलने वाली शक्तिशाली पवनें चक्रवात कहलाती हैं। यह सामान्यत: विनाशकारी होते हैं। चक्रवात के मध्य में वायु का दाब हुत कम होता है तथा चारों ओर क्रमश: बढ़ता जाता है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 10 पंक्तियों में दीजिए :

(i) वायु के संघटन, दाब, ताप आदि के आधार पर वायुमण्डल की निम्नलिखित परतें होती हैं–

क्षोभमंडल (निचली परत) : वायुमण्डल की यह परत धरातल से सबसे समीप पाई जाती है, जो समुद्र तल से 15 किमी की ऊँचाई तक विद्यमान रहती है। यह जलवाष्प, धूल के कणों और आर्द्रता से भरपूर होती है इसलिए यह अधिक सघन होती है।

समतापमण्डल : यह परत समुद्र तल से 15 किमी से 50 किमी तक की ऊँचाई तक विस्तृत होती है। इस परत में जलवाष्प, धूल तथा बादल आदि नहीं पाए जाते हैं। इसे ओजोन वाली परत भी कहा जाता है।

आयनमण्डल: यह परत समतापमण्डल और बाह्यमण्डल के मध्य स्थित होती है जो धरातल से 60 से 400 किमी की ऊँचाई तक फैली रहती है। इसमें वायु अति विरल होती है।

तापीयमण्डल : यह आयनमण्डल के मध्य का भाग है, जिसका ताप 100° से. से अधिक होता है। यह पृथ्वी की सतह से 400 किमी से 450 किमी की ऊँचाई तक स्थित है।

(ii) वायुमण्डल में विद्यमान वायु में 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन, 0.03% कार्बन डाइऑक्साइड तथा शेष 0.07% में हीलियम, ओजोन तथा जलवाष्प सम्मिलित रहती हैं। इनके

अतिरिक्त, वायु के कुछ मात्रा में धूल के कण भी पाए जाते हैं। पृथ्वी पर वायुमण्डल की उपस्थिति के कारण ही इसे सौर परिवार का अनोखा ग्रह कहते हैं। धरातल से वायुमण्डल की सीमा 1000 किमी तक जाती है परंतु पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण वास्तविक वायुमण्डल की सीमा 32 किमी तक है।

(iii) पृथ्वीप रव र्षात ेिनप्रकारक ेिह ेतीहै–संवाहनीयय ेिव ेिहनिक, पर्वतीय तथा चक्रवातीय वर्षा, जिनका वर्णन निम्नलिखित है–

संवाहनीय वर्षा : दिन के समय सूर्य की किरणों के कारण वायुमण्डल गर्म हो जाता है, जिसके कारण यह हल्की होकर ऊपर की ओर उठती है, फैलती है तथा ठंडी होकर संतृप्त हो जाती है और बरसना प्रारंभ कर देती है। यह वर्षा गर्जन और बिजली की चमक के साथ होती है।

पर्वतीय वर्षा : जब भाप से भरी गर्म हवा समुद्र से आकर किसी पर्वतय ेिऊँचेस् थानस ेट करातीहैत ेिय हऊ परउ ठतीहै।ए क निश्चित ऊँचाई पर पहुँचकर यह संतृप्त हो जाती है तथा संघनित होकर भारी वर्षा के रूप में नीचे गिरने लगती है। हिमालय प्रदेश में वर्षा का यही रूप दिखाई पड़ता है। पर्वत का हवा की दिशा वाला भाग अत्यधिक वर्षा प्राप्त करता है जबकि विपरीत ढाल पर वर्षा न्यूनतम होती है या अन्य शब्दों में, उस भाग में नाममात्र की वर्षा होती है और इन प्रदेशों को वृष्टिछाया प्रदेश कहते हैं। पर्वतीय वर्षा की मात्रा सर्वाधिक होती है।

चक्रवाती वर्षा : ठंडी और गर्म हवाओं के घनत्व बिलकुल भिन्न होते हैं, इसलिए वे ठीक प्रकार से मिश्रित नहीं हो पातीं तथा चक्रवात की उत्पत्ति इसी कारण से होती है। गर्म वायु ऊपर उठकर ठंडी होती है। इसकी नमी संघनित होकर बादल बनती है जो भारी वर्षा के रूप में बरसते हैं। यह वर्षा थोड़े समय के लिए बिजली की चमक और गर्जना के साथ होती है।

4. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए :

(i) **पछुआ हवाएँ :** पछुआ हवाएँ स्थायी हवाएँ हैं, जो उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में अयनरेखीय उच्च वायुदाब क्षेत्रों या पेटियों के उपध्रुवीय निम्न वायुदाब वाली पेटियों की ओर चलती हैं।

(ii) **चिनूक :** उत्तरी अमेरिका में रॉकी पर्वत के पूर्व में चलने वाली गर्म-शुष्क हवा को चिन्क कहा जाता है।

(iii) **बोरा :** ठंडी और शुश्क हवा, जो हंगरी से इटली के उत्तर की ओर चलती है, बोरा कहलाती है।

(iv) **कोहरा :** वायुमण्डल में निलंबित रज-कणों पर जलवाष्प के संघनन से कोहरा बनता है, जो धुएँ के समान दिखाई पड़ता है।

5. निम्नलिखित के उचित कारण दीजिए :

(i) ऊँचे तापमान वाले स्थानों पर निम्न वायुदाब अनुभव किया जाता है। ऊँचाई के साथ-साथ वायुदाब में कमी आती है। आर्द्रतायुक्त वायु का वायुदाब कम होता है। इसलिए हवाएँ उच्च दाब वाले स्थानों से निम्नदाब वाले स्थानों की ओर चलती हैं।

(ii) कंकड़, पत्थर और रेत वाली भूमि दिन के समय बहुत तेजी से गर्म हो जाती है और रात्रि में बहुत जल्दी ठंडी हो जाती है, इसलिए रेगिस्तान में दिन-रात के तापमान में अंतर काफी पाया जाता है।

(iii) उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों से उत्पन्न होने के कारण पछुआ हवाएँ गर्म हवाएँ होती हैं।

(iv) पर्वत का हवा की दिशा वाला भाग अत्याधिक वर्षा प्राप्त करता है जबकि विपरीत ढाल पर वर्षा न्यूनतम होती है। उस भाग में नाममात्र की वर्षा होती है इसलिए पर्वतों के वायु संपर्क वाले ढलानों के विपरीत ढलानों को वृष्टिछाया प्रदेश कहा जाता है।

4 जल तथा जल-चक्र

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) भाटा (ii) (a) लघु ज्वार

(iii) (a) प्रवाह (ड्रिफ्ट) (iv) (d) उपरोक्त सभी

(v) (a) अटलांटिक महासागर में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
गल्फ स्ट्रीम	गर्म महासागरीय जलधारा
लेब्राडोर	ठंडी महासागरीय धारा
गीजर	भूमिगत जल स्रोत
क्रोसीवो	उत्तरी प्रशांत महासागर
निम्न ज्वार (भाटा)	लघु ज्वार

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) ऊपर (ii) 0.0001% (iii) गुरुत्वाकर्षण बल

(iv) लघु ज्वार

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) वहप्र्क्रिया,ि जसकेम ाध्यमस`ज लि नरंतरअ पनीअ वस्थाक ो विशाल जलराशियों; जैसे—महासागरों, सागरों, झीलों, नदियों, पोखरों, वायुमण्डल तथा भूमि के मध्य बदलता रहता है तथा चक्कर लगाता रहता है, जल चक्र कहलाता है।

(ii) समुद्र का जल लवणीय होता है, जिसमें मुख्य रूप से नमक (सोडियम क्लोराइड) घुला रहता है।

(iii) नदियाँ, झीलें, सागर, पोखर आदि धरातलीय जलराशियाँ हैं।

(iv) जल तरंगों का उठना और गिरना लहर कहलाता है।

(v) समुद्री जल के तल का ऊपर उठना एवं नीचे गिरना ज्वार-भाटा कहलाता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) धरातल के नीचे पाया जाने वाला जल भूमिगत जल कहलाता है। यह भी मृदु जल होता है तथा विश्व में पाए जाने वाले कुल जल की मात्रा का 0.68% भाग भूमिगत जल है। सामान्यत: मिट्टी वर्षा जल को अवशोषित कर लेती है और यही अवशोषित जल पृथ्वी के नीचे पहुँचकर भूमिगत जल का रूप ले लेता है। भूमिगत जल गीजर, पातालतोड़ कुँओं, कुँओं और स्रोतों के माध्यम से पृथ्वी से बाहर आता है।

(ii) **नदियाँ:** विश्व में विद्यमान कुल जल की मात्रा का लगभग 0.0001% भाग नदियों में बहता है। पर्वतों पर हिमपात होने तथा सूर्यक ीग र्मीस`ि हमव ेर्ि पघलनेप रन दियोंक ाज न्मह ुआह ै। नदियाँ ऊँचे स्थानों से नीचे स्थानों अर्थात् ढलान की ओर बहती हैं।

झीलें : धरातल पर रुके हुए पानी की विशाल जलराशि को झील कहते हैं। हमारे देश में कई झीलें हैं। विश्व में विद्यमान कुल जल का 0.0019% भाग झीलों में पाया जाता है।

(iii)

क्र.सं.	गर्म धाराएँ	ठंडी धाराएँ
1.	ये धाराएँ विषुवत् रेखा से ध्रुवों की ओर बहती हैं।	ये धाराएँ ध्रुवों या ठंडे प्रदेशों से लगे महासागरों से बहती हैं।
2.	इनका तापमान उच्च होता है।	इनका तापमान निम्न होता है।
3.	इनसे तटीय भागों का	इनसे तटीय भागों का

	तापमान बढ़ जाता है।	तापमान घट जाता है।
4.	इनसे तटीय क्षेत्रों में भारी वर्षा होती है।	इनसे तटीय क्षेत्रों में बहुत ही कम वर्षा होती है।
5.	ये नौकायान में सहायक हैं।	ये नौकायान में सहायक नहीं हैं।
6.	गल्फ स्ट्रीम एक गर्म समुद्री जल धारा है।	लेब्राडोर एक ठंडी समुद्री जलधारा है।

(iv) समुद्री जल के तल का ऊपर उठना व समुद्र जल के तल का नीचे गिरना ज्वार-भाटा कहलाता है। इसके प्रकार निम्नलिखित हैं–

वृहद् अथवा दीर्घ ज्वार : जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी को एक ही दिशा में आकर्षित करते हैं तो समुद्री जल में उत्पन्न होने वाला ज्वार वृहद्य ाद ीर्घज् वारक हलाताह ै।ए ेसीअ वस्थाप ृथ्वी,स ूर्यअ ौर चंद्रमा के एक ही सीध में होने पर होती है।

लघु ज्वार : जब सूर्य या चंद्रमा, पृथ्वी से 90° का कोण बनाता है तो सूर्य और चंद्रमा दोनों ही समुद्री जल को भिन्न दिशाओं की ओर प्रभावित करते हैं, जिससे ज्वार की ऊँचाई में कमी आ जाती है, जिसे लघु ज्वार कहते हैं।

(v) ज्वालामुखी विस्फोट, भूकंप या जल के नीचे होने वाला भू-स्खलन भयंकर तथा ऊँची जल लहरों को समुद्र में उत्पन्न करता है। इन लहरों को सुनामी कहते हैं। ये लहरें ऊँचाई में 15 मीटर तक उठ जाती हैं। ये लहरें अति भयंकर तथा विनाशकारी होती हैं। अधिकतर ये लहरें जापानी तटों पर उठती हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 10 पंक्तियों में दीजिए :

(i) समुद्री जलधाराएँ मानव जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित करती हैं, जिनमें प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं–

(1) जलधाराएँ उन क्षेत्रों की जलवायु को प्रभावित करती हैं,

जिनसे लगे तटों से होकर ये बहती हैं। गर्म जलधारा; जैसे–गल्फ स्ट्रीम अपनी उत्पत्ति के क्षेत्र के ताप को बढ़ा देती है। ठंडी धारा अपनेक्ष ेत्रक ो हमम ेप रिवर्तितक रद ेतीह ै।ल ेब्राडोरज लधारा ग्रीनलैण्ड के पास स्थित महासागर के तटों से होकर बहती है, जो उस क्षेत्र को बर्फ में बदल देती है।

(2) गर्म और ठंडी धाराओं का मिश्रण मत्स्य उत्पादन के लिए समताप की स्थिति उत्पन्न करता है क्योंकि यह मछलियों के लिए एक समुद्री भोजन, प्लैंकटन को पैदा करता है। कनाडा स्थित ग्रांड बैंक मछली उत्पादन के बढ़िया क्षेत्रों में से एक है।

(3) समुद्री जलधाराएँ वर्षा को भी प्रभावित करती हैं। गर्म धाराओं के ऊपर से गुजरने वाली हवाएँ आर्द्र हो जाती हैं, जिनके कारण समुद्री तटों पर अच्छी वर्षा होती है। इसके विपरीत, ठंडी धाराओं से होकर गुजरने वाली हवाओं में बहुत ही कम वर्षा होती है।

(4) समुद्री जलधाराएँ व्यापार को भी प्रभावित करती हैं। जिन क्षेत्रों से होकर गर्म धाराएँ बहती हैं, वहाँ वर्षभर नौकायान या जल-यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं। इसके विपरीत, ठंडी धाराओं वाले क्षेत्रों में बर्फ जम जाने के कारण जल यातायात संभव नहीं हो पाता है।

(5) समुद्री जलधाराएँ पर्यावरण को भी प्रभावित करती हैं। गर्म और ठंडी जलधाराओं के मिलने से घने कोहरे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे जहाजों का आवागमन रूक जाता है तथा जहाजों में संबंधित दुर्घटनाएँ होना आम बात होती है।

(ii) संसार की प्रमुख समुद्री जलधाराएँ निम्नलिखित हैं–

उत्तरी अटलाटिण्क महासागर की धाराएँ : उत्तर विषुवत रेखीय जलधारा, गल्फ स्ट्रीम, कनारी धारा, लेब्राडोर, सरगासो सागर।

दक्षिणी अटलांटिक महासागर की धाराएँ : दक्षिण विषुवत

रेखीय धारा, विषुवतरेखीय काउण्टर धारा, ब्राजील की धारा, फाकलैण्डध ारा,द क्षिणीअ टलाण्टिकड्रिफ्ट,ब ेगुंएलाक ीध ारा, उत्तरी प्रशांत।

महासागर की धाराएँ : उत्तरी विषुवत रेखीय धारा, क्यूरी सीवो जलधारा, पीरुबियन जलधारा, अण्टार्कटिक ड्रिफ्ट।

दक्षिणीप्र शांतम हासागरक ीध ाराएँ: दक्षिणी विषुवतरेखीय धारा, भूमध्यरेखीय काउण्टर धारा, पूर्वी ऑस्ट्रेलिया धारा पीरूवियन जलधारा, अण्टार्कटिक ड्रिफ्ट।

उत्तरी हिंद महासागर की धाराएँ : ग्रीष्मकालीन कानसूनी ड्रिफ्ट, शीतकालीन मानसूनी ड्रिफ्ट, विषुवतरेखीय काउण्टर जलधारा।

दक्षिणी हिंद महासागर की धाराएँ : दक्षिणी विषुवत रेखीय धारा, मोजाम्बिक धारा, अगुलहास जलधारा, पश्चिमी आस्ट्रेलियाई जलधारा।

4. निम्नलिखित में अंतर बताइए :

(i)

क्र.सं.	झील	समुद्र
1.	धरातल पर रुके हुए पानी की विशाल जलराशि को झील कहते हैं।	समुद्र भी विशाल जलराशि है जिनका जल लवणीय होता है। इसमें विभिन्न प्रकार के घुलनशील, अघुलनशील लवण पाए जाते हैं।
2.	विश्व में विद्‌यमान कुल जल का 0.0019% भाग झीलों में पाया जाता है।	महासागरों में विश्व का कुल जल का 97.3% भाग भरा पड़ा है।

(ii)

क्र.सं.	ताजा जल	लवणीय जल
1.	नदियों, पोखरों, झरनों, हिमखंडों तथा वर्षा का जल ताजा जल कहलाता है।	महासागर,झ ीलें,स मुद्रअ ौर खाड़ियाँ विशाल जलराशियाँ हैं। इनमें लवण बड़ी मात्रा में घुले होते हैं, जिससे इनमें पाया जाने वाला जल लवणीय जल कहलाता है।
2.	इनमें अल्पमात्रा में अघुलनशील अशुद्धियाँ पायी जाती हैं।	सामान्यतः इस जल में नमक या सोडियम क्लोराइड की मात्रा प्रमुख होती है।

(iii)

क्र.सं.	ड्रिफ्ट जलधारा	स्ट्रीम जलधारा
1.	पवन की दिशा में बहने वाली धारा को ड्रिफ्ट जलधारा कहते हैं।	निश्चित दिशा में तेज गति के साथ बहने वाली स्ट्रीम जलधारा कहलाती है।
2.	उदाहरण के लिए, उत्तरी अटलाण्टिक ड्रिफ्ट तथा अण्टार्कटिक ड्रिफ्ट।	उदाहरण—गल्फ स्ट्रीम।

(iv)

उच्च ज्वार	निम्न ज्वार
जब सूर्य और चंद्रमा पृथ्वी को एक ही दिशा में आकर्षित करते हैं तो समुद्री जल में उत्पन्न होने वाला ज्वार उच्च ज्वार कहलाता है।	जब सूर्य या चंद्रमा पृथ्वी से 90° का कोण बनाता है तो सूर्य और चंद्रमा दोनों ही समुद्री जल को भिन्न दिशाओं की ओर प्रभावित करते हैं, जिससे ज्वार की ऊँचाई में कमी आ जाती है जिसे निम्न ज्वार कहते हैं।

5 प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) सहारा (ii) (b) गेहूँ की खेती के लिए

(iii) (b) पृक्षी (iv) (a) भूमध्य सागरीय क्षेत्रों में

(v) (b) ठंडे क्षेत्रों में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
सवाना	मध्य अमेरिका
वेल्ड्ज	दक्षिणी अफ्रीका
डाउन्स	दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया
प्रेयरी	उत्तर अमेरिका
स्टेपी	मध्य एशिया

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) प्राकृतिक (ii) वन (iii) शुष्क

(iv) वन्य जीव (v) गेहूँ

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) स्वयं उगने वाली वनस्पतियाँ प्राकृतिक वनस्पति कहलाती हैं।

(ii) एक बड़ा क्षेत्र, जो पेड़-पौधों से आच्छादित रहता है, वन कहलाता है।

(iii) घास वाली भूमियाँ घासभूमियाँ कहलाती हैं।

(iv) रेत या बर्फवाला विशाल क्षेत्र मरुस्थल कहलाता है।

(v) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन में पाए जाने वाले जंतुओं के नाम–बंदर, साँप, कीड़े-मकोड़े, घड़ियाल, अनाकोण्डा आदि। उष्णकटिबंधीय पतझड़ वाले वन में पाए जाने वाले जंतुाओं के नाम – चीता, शेर, हाथी, बंदर, कंगारू आदि वन्य जीव पाए जाते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों में सदाबहार हरे वृक्ष बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। ये वृक्ष अपनी पत्तियों को कभी भूमि पर नहीं गिराते। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 200 सेमी है। वृक्षों की लकड़ी कठोर होती है। वृक्षों की सामान्य ऊँचाई 55 मीटर तक पायी जाती है। इन वृक्षों के नीचे अनेक लताएँ और झाड़ियाँ उगी होती हैं। प्रमुख वृक्षों में एबोनी, रोजवुड, ताड़, महोगनी, रबड़, सीवा, पैरानट, सीडार आदि हैं।

(ii) शीतोष्ण घासभूमियाँ मध्य अक्षांशों में स्थित हैं। इसलिए इन घास भूमियों को मध्य अक्षांशीय घासभूमियों के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ औसत वर्षा (वार्षिक) 25 से 75 सेमी तक होती है। संसार के अलग-अलग हिस्सों में इन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है; जैसे–कनाडा और यू.एस.ए. में प्रेयरीज, मध्य एशिया में स्टेपीज, दक्षिणी अमेरिका में पम्पाज, दक्षिणी-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में डाउन्स तथा दक्षिण अफ्रीका में वेल्ड्ज के नाम से जानते हैं। ये घास भूमियाँ लगभग वृक्षहीन होती हैं, केवल नदियों के किनारों पर कुछ वृक्ष पाए जाते हैं।

(iii) भूमध्य सागरीय वन भूमध्य सागर के चारों ओर स्थित क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इनका विस्तार यूरोप, अफ्रीका और एशिया महाद्वीपों में है। शीत ऋतु में इन क्षेत्रों में पछुआ हवाओं से वर्षा होती है तथा ग्रीष्म ऋतु में यहाँ व्यापारिक हवाएँ चलती हैं। वृक्षों की ऊँचाई कम तथा

इनके बीच में जगह छूटी रहती है। इन खाली जगहों में झाड़ियाँ उग जाती हैं। प्रमुख वृक्षों में सनोवर, बलूत, ओक, यूकेलिप्टस, कॉर्क, अंजीर, मलबेरी, जैतून आदि हैं।

(iv) ये घासभूमियाँ भूमध्य रेखा के चारों ओर तथा उष्ण कटिबंधों तक विस्तृत हैं। यहाँ घास 3 से 4 मीटर की ऊँचाई तक उगती है। इन मैदानों में 26 से 75 सेमी औसत वार्षिक वर्षा होती है। अफ्रीका में सूडान, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया, मध्य अमेरिका तथा पश्चिमी भारत में सवाना घास के मैदान पाए जाते हैं।

(v) गर्म रेतीली भूमि वाले मरुस्थल गर्म मरुस्थल कहलाते हैं। कालाहारी के अतिरिक्त अफ्रीका में सहारा, भारत का थार मरुस्थल गर्म मरुस्थल हैं। इन मरुस्थलों में साँप, रैंट (साही), छिपकलियाँ, कीड़े-मकोड़े; जैसे—बिच्छू, चींटी, दीमक आदि जीव निवास करते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 10 पंक्तियों में दीजिए :

(i) संसार में छः प्रकार के वन पाए जाते हैं—उष्णकटिबंधीय, सदाबहार वन, उष्णकटिबंधीय पतझड़ वाले वन, भूमध्य सागरीय वन, शीतोष्ण सदापर्णी वन, शीतोष्ण पतझड़ वाले वन, शीतोष्ण शंकुधारी वन।

(1) **उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन :** उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों में सदाबहार हरे वृक्ष बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। ये वृक्ष अपनी पत्तियों को कभी भूमि पर नहीं गिराते। यहाँ वर्षा का वार्षिक औसत 200 सेमी है। वृक्षों की लकड़ी कठोर होती है। वृक्षों की सामान्य ऊँचाई 55 मीटर तक पायी जाती है। इन वृक्षों के नीचे अनेक लताएँ और झाड़ियाँ उगी होती हैं। प्रमुख वृक्षों में एबोनी, रोजवुड, ताड़, महोगनी, रबड़, सीवा, पैरानट, सीडार आदि हैं।

(2) **भूमध्यसारगीय वन :** भूमध्य सागरीय वन भूमध्य सागर के चारों ओर स्थित क्षेत्रों में पाए जाते हैं। इनका विस्तार यूरोप, अफ्रीका

और एशिया महाद्वीपों में है। शीत ऋतु में इन क्षेत्रों में पछुआ हवाओं से वर्षा होती है तथा ग्रीष्म ऋतु में यहाँ व्यापारिक हवाएँ चलती हैं। वृक्षों की ऊँचाई कम तथा इनके बीच में जगह छूटी रहती है। इन खाली जगहों में झाड़ियाँ उग जाती हैं। प्रमुख वृक्षों में सनोवर, बलूत, ओक, यूकेलिप्टस, कॉर्क, अंजीर, मलबेरी, जैतून आदि हैं।

(3) **शीतोष्ण सदापर्णी वन :**य ेव नस ामान्यत:स ंयुक्तर ाज्य अमेरिका,द क्षिणच ीन,द क्षिण-पूर्वीब्र ाजील,द क्षिण-पूर्वीभ ागों; जैसे—इजराइल, सीरिया तथा ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। प्रमुख वृक्ष ओक, पाइन तथा यूकेलिप्टस हैं।

(ii) विश्व में दो प्रकार की घासभूमियाँ पाई जाती हैं—उष्णकटिबंधीय घास के मैदान तथा शीतोष्ण घास के मैदान।

उष्णकटिबंधीय घास के मैदान : ये घास भूमियाँ भूमध्य रेखा के चारों ओर तथा उष्णकटिबंधों तक विस्तृत हैं। यहाँ घास 3 से 4 मीटर तक की ऊँचाई तक उगती है। इन मैदानों में 25 से 75 सेमी तकअ ौसतव ार्षिकव र्षाह ोतीह ै।अ फ्रीकाम ेंस ूडानम ें,उ त्तरी ऑस्ट्रेलिया, मध्य अमेरिका तथा पश्चिमी भारत में सवाना घास के मैदान पाए जाते हैं। ब्राजील का कैम्पोज तथा वेनेजुएला में लानोज भी उष्णकटिबंधीय घास के मैदान हैं। भारत के तराई क्षेत्रों में 3.6 मीटर से 4.5 मीटर तक ऊँचाई वाली हाथी घास उगती है। इन घास भूमियोंम ेंि जराफ,ज ेब्रा,ह ाथी,ि हरन,ए ंटीलोप,ि सयार,ह ायना, सिंह, खरगोश, गिद्ध, शतुरमुर्ग आदि जंतु एवं पक्षी पाए जाए जाते हैं। इसलिए इसे विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर कहा जाता है।

शीतोष्ण घास के मैदान : ये घासभूमियाँ मध्य अक्षांशों में स्थित हैं इसीलिए इन घास भूमियों को मध्य अक्षांशीय घास भूमियों के नाम से जाना जाता है। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 25 से 75 सेमी तक होती है। संसार के अलग-अलग हिस्सों में इन्हें अलग-अलग नामों सेज ानाज ाताह ै;ज ैसे—कनाडाअ ौरय ू.एस.ए.म ेंप्र ेयरीज,म ध्य

एशिया में स्टेपीज, दक्षिण अमेरिका में पम्पाज, दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में डाउन्स तथा दक्षिण अफ्रीका में वेल्ड्ज के नाम से जानते हैं। ये घासभूमियाँ लगभग वृक्षहीन होती हैं, केवल नदियों के किनारों पर कुछ वृक्ष पाए जाते हैं। प्रेयरीज में बड़े पैमाने पर गेहूँ की खेती की जाती है। छोटी घास पौष्टिक होती है, जो वन्य जीवों के लिए प्रचुर मात्रा में भोजन उपलब्ध कराती है। इन घास भूमियों में कंगारू, बाइसन, भेड़िए, कोमोर, हिरन, गजेल, रोबक (हिरन), नीलगाय आदि वन्य जीव पाए जाते हैं।

(iii) जिन क्षेत्रों में 30 सेमी से कम वर्षा (वार्षिक) होती है, उन्हें मरुस्थल कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–गर्म मरुस्थल और शीत मरुस्थल।

गर्म मरुस्थल : गर्म रेतीली भूमि वाले मरुस्थल गर्म मरुस्थल कहलाते हैं। कालाहारी के अतिरिक्त अफ्रीका में सहारा, भारत का थार मरुस्थल गर्म मरुस्थल हैं। इन मरुस्थलों में साँप, रैंट (साही), छिपकलियाँ, कीड़े-मकोड़े; जैसे–बिच्छू, चींटी, दीमक आदि जीव निवास करते हैं।

शीत मरुस्थल : अत्यधिक कम तापमान के कारण भूमि बर्फ से जम जाती है, जिसे शीत मरुस्थल कहते हैं। ऊँचे पर्वत तथा ध्रुवीय प्रदेश शीत मरुस्थल भूमियाँ हैं। मांस, लाइकेन, बेरी वाली झाड़ियाँ तथा क्षुद्र-पुष्पीय पौधे यहाँ कभी-कभी दिखाई पड़ते हैं। एशिया दक्षिण अमेरिका तथा उत्तरी यूरोप में टुण्ड्रा ऐसा ही मरुस्थल है।

(iv)

क्र.सं.	सदाबहार वन	पतझड़ वन
1.	वे वन जो अपनी पत्तियों को कभी भी भूमि पर नहीं गिराते, सदाबहार वन कहलाते हैं।	वे वन जो शुष्क मौसम में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं, पतझड़ वन कहलाते हैं।
2.	प्रमुख वृक्षों में एबोनी, रोजवुड, ताड़, महोगनी, ओक, पाईन तथा रबड़ हैं।	प्रमुख वृक्षों में पीपल, आवंला, चंदन, शीशम, नीम, मेपल, चेरी, अखरोट आदि हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर केवल एक शब्द में दीजिए :

(i) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन।

(ii) उष्ण कटिबंधीय वर्षा वन।

(iii) भूमध्यसागरीय वन।

(iv) दक्षिणी अमेरिका।

(v) सहारा।

6 मानव अधिवास, यातायात एवं संचार

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) ये सभी (ii) (a) जेम्स वॉट ने

(iii) (c) कोलकाता और अमृतसर (iv) (c) मुंबई

(v) (c) पवन हंस लिमिटेड (vi) (d) इनमें से कोई नहीं

(vii) (a) 1876 ई. में (viii) (c) गुगलीमो मारकोनी

(ix) (a) कागज से (x) (a) इलेक्ट्रॉनिक मशीन

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
स्थायी अधिवास	पक्के घर
अस्थायी अधिवास	पर्वतीय गुफाएँ

सघन अधिवास	शहर और कस्बे
जे.ए.एल.	जापानी एयरलाइंस
लुफ्थांसा	जर्मनी
इंसेट 1-ए	कृत्रिम उपग्रह

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) शहर (ii) जानवरों (iii) टी.जी.वी.

(iv) स्वेज नहर

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) मानव द्वारा धरातल पर बस्ती स्थापित करने की क्रिया अधिवास कहलाती है।

(ii) मनुष्यन ेज ैसे-जैसेर् विभिन्नक्ष ेत्रोंम ेंउ न्नतिक ीत ेउ सनेग ाँवों, कस्बों की स्थापना की तथा ईंट, गारा, कंकरीट, लोहे की छड़ों, लकड़ी के फर्नीचर से बने मकानों, जिनमें बिजली, जलापूर्ति, टेलीफोन आदि की सुविधा उपलब्ध थी, में रहने लगा। इन्हें स्थायी अधिवास कहा जाता है।

(iii) बिखरे हुए मकानों अर्थात् एक-दूसरे से काफी फासले पर स्थित मकानों को प्रकीर्ण अधिवास कहते हैं।

(iv) जोल ोगश हरोंय ाक स्बोंम ेंनि वासक रतेह ैं,व ेअ पनेघ रइ ेंट, कंकरीट, सीमेंट, लोहा, पत्थर, लकड़ी, टाइल्स आदि से बनाते हैं। इन घरों को पक्का घर कहते हैं और उनका यह अधिवास शहरी अधिवास कहलाता है।

(v) मनुष्य द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रयोग में लाए जाने वाले परिवहन के साधन यातायात कहलाते हैं।

(iv) यातायातव ेस ाधनोंव ेन ामह ैं-सड़कम ार्ग,र ेलमार्ग,व ायुमार्ग, जलमार्ग आदि।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) प्राचीन समय में आदिमानव सर्दी, गर्मी और वर्षा के दौरान पर्वतीय गुफाओं तथा सघन वनों में रहा करता था ये सभी आवासीय स्थल अस्थायी अधिवास कहलाते हैं।

(ii) प्राचीनस मयस ेह ील ोगमि ट्टी-गारा,प ूस,प ेड़क ीश ाखाओं, बाँस आदि से बने घरों में रहा करता था। उन घरों को कच्चे घर कहा जाता था। आज भी भारत के कुछ गाँवों में हम कच्चे घरों को देख सकते हैं क्योंकि एशिया और अफ्रीका के देशों में निवास करने वाले अधिकांश लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, इसीलिए उनमें से अधिकतर किसान हैं और वे अपने आस-पास मिलने वाली कच्ची सामग्री से अपने मकानों को बनाते हैं। उनके घर शहरी घरों की अपेक्षा सादे तथा साधारण और बिना आधुनिक सुविधाओंयुक्त होते हैं। इस प्रकार के अधिवासों को ग्रामीण अधिवास कहते हैं।

(iii)

क्र.सं.	सघन अधिवास	प्रकीर्ण अधिवास
1.	समतल भूमि पर संकरी और कम हवादार गलियों में बने मकानों को, जिनमें कई मंजिले भी हो सकती हैं, सघन अधिवास कहते हैं।	बिखरे हुए मकानों अर्थात् एक-दूसरे से काफी फासले पर स्थित मकानों को प्रकीर्ण अधिवास कहते हैं।
2.	इस प्रकार के अधिवास नदी-घाटियों में ज्यादातर देखने को मिलते हैं।	इस प्रकार के अधिवास पर्वतों और पहाड़ों पर ज्यादातर देखने को मिलते हैं।

(iv) भारत के प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण राजमार्गों के नाम निम्नलिखित हैं–

(1) आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग

(2) कोलकाता–मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग

(3) दिल्ली–मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग

(4) चेन्नई–कोलकाता राष्ट्रीय राजमार्ग

(5) मुंबई–चेन्नई राष्ट्रीय राजमार्ग।

(6) दिल्ली–लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग

(7) असम ट्रंक रोड।

(v) भारत में गंगा, गोदावरी, कावेरी तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ नौवहन की सुविधाएँ उपलब्ध कराती हैं। गंगा में इलाहाबाद से लेकर कोलकाता तक नौवहन किया जाता है और भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया है। पटना और हाजीपुर के बीच गंगा में स्टीमर सेवाएँ उपलब्ध हैं। ब्रह्मपुत्र नदी में भी नौवहन सुविधाएँ मुहैया कराई गई हैं। इसी के माध्यम से असम से कोलकाता को चावल, बाँस, जूट तथा चाय आदि को ढोया जाता है। उड़ीसा स्थित चिल्का झील में नाविकों को नौवहन का शिक्षण प्रदान किया जाता है। इनके अतिरिक्त पश्चिमी तटीय नहर तथा बकिंघम नहर को भी नौवहन के लिए उपयोग में लाया जाता है।

(vi) वायु मार्ग के लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) वायुमार्ग से मनुष्य लंबी दूरी की यात्रा कम समय में तय करता है।

(2) एक बड़ी एयर बस एक साथ 400 यात्रियों को लेकर हवा में उड़ सकती है।

(3) वायुयान बर्फ से ढकी चोटियों, घने जंगलों, विस्तृत मरुस्थलों, दलदली भूमियों, ऊँचे पर्वतों तथा गहरे सागरों के ऊपर से समान गति के साथ आसानी से उड़ जाते हैं।

(4) वायुयान न केवल यात्रियों और सामान को ढोते हैं बल्कि युद्ध के समय भी उपयोगी सिद्ध होते हैं। युद्ध के दौरान संकट काल में वायुसेवा बहुत महत्त्वपूर्ण होती है।

(5) इसका उपयोग हलके भार वाले सामानों, डाक तथा कीमती और जल्दी खराब होने वाली खाद्य वस्तुओं को दूर स्थित स्थानों को ले जाने में किया जाता है।

(vii) एयर इंडिया विश्व के लगभग 50 देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय विमान सेवाएँ प्रदान करती है।

इंडियन एयरलाइंस विमान कंपनी देश के अंदर 59 शहरों तथा 16 राष्ट्रों के लिए उड़ानों का आयोजन करती है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 10 पंक्तियों में दीजिए :

(i) मानव के आवासीय स्थल को अधिवास कहते हैं। मानव अधिवास दो प्रकार के होते हैं–स्थायी अधिवास तथा अस्थायी अधिवास।

(1) स्थायी अधिवास : मनुष्य ने जैसे-जैसे विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति की तो उसने गाँवों, कस्बों की स्थापना की तथा ईंट, गारा, कंकरीट, लोहे की छड़, लकड़ी के फर्नीचर से बने मकानों, जिनमें बिजली, जलापूर्ति, टेलीफोन आदि की सुविधा उपलब्ध थी, में रहने लगा। इन्हें स्थायी अधिवास के नाम से जाना गया।

(2)अ स्थायीअ धिवासः प्राचीन समय में आदिमानव सर्दी, गर्मी और वर्षा के दौरान पर्वतीय गुफाओं तथा सघन वनों में रहा करता था। ये सभी आवासीय स्थल अस्थायी अधिवास थे।

इसके अतिरिक्त अधिवास को दो समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है–ग्रामीण अधिवास तथा शहरी अधिवास।

(1) ग्रामीण अधिवास : प्राचीन समय से ही लोग मिट्टी–गारा, फूस, पेड़ की शाखाओं, बाँस आदि से बने घरों में रहा करता था। उन घरों को कच्चे घर कहा जाता था। आज भी भारत के कुछ गाँवों में हम कच्चे घरों को देख सकते हैं क्योंकि एशिया और अफ्रीका के देशों में निवास करने वाले अधिकांश लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है, इसीलिए उनमें से अधिकतर किसान हैं और वे अपने आस–पास मिलने वाली कच्ची सामग्री से अपने मकानों को बनाते

हैं। उनके घर शहरी घरों की अपेक्षा सादे तथा साधारण और बिना आधुनिकस ुविधाओंय ुक्तह ोतेह ैंइ सप ्रकारव ेअ धिवासोंक ो ग्रामीण अधिवास कहते हैं।

ग्रामीण अधिवास को पुनः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–सघन अधिवास तथा प्रकीर्णन अधिवास।

(2) शहरी अधिवास : जो लोग शहरों या कस्बों में निवास करते हैं, वे अपने घर ईंट, कंकरीट, सीमेंट, लोहा, पत्थर, लकड़ी, टाईल्स आदि से बनाते हैं। इन घरों को पक्का घर कहते हैं और उनका यह अधिवास शहरी अधिवास कहलाता है।

(ii) विश्व के प्रमुख रेलमार्ग निम्नलिखित हैं–

ट्रांस-साइबेरियन रेलमार्ग : यह विश्व का सबसे लंबा रेल मार्ग है। यह रुस में स्थित है जो मास्को के पास स्थित पीटर्सबर्ग को ब्लाडीवोस्टक नगर से जोड़ता है।

(2) यूनियन पैसिफिक रेलमार्ग : इसकी दो शाखाएँ हैं–दक्षिणी पैसेफिक रेलवेमार्ग (संयुक्त राज्य अमेरिका) तथा उत्तरी पैसेफिक रेलमार्ग। पहला रेलमार्ग पूर्वी तट पर स्थित न्यूयॉर्क को पश्चिमी तट पर स्थित सैनफ्रांसिस्को से जोड़ता है तथा दूसरा रेलमार्ग साल्ट लेक सिटी तक जाता है।

(3) कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग : यह कनाडा स्थित बैंकुवर से कर्बी, रेगीना, विनिपेग, फोर्ट विलियम से होता हुआ माण्ट्रियल तक जाता है।

(4) ग्रांड ओरियण्ट एक्सप्रेस रेलमार्ग : यह रेलमार्ग यूरोप में स्थित फ्रांस की राजधानी पेरिस से शुरू होकर स्ट्रासबर्ग, स्टुटगार्ट, क्यूनिश्‍व, वियना, वुडापेस्ट, वेलग्रेड, सोफिया तथा प्लोवडिन होता हुआ इस्ताम्बुल तक पहुँचता है।

(5) केप काहिरा रेलमार्ग : यह काहिरा को केपटाउन से जोड़ता है। केपटाउन से यह किम्बरले तक चला जाता है।

(6) टोकियो-ओसामा एक्सप्रेस रेलमार्ग : यह रेलमार्ग जापान में स्थित है। यह जापान की राजधानी टोकियो को ओसाका नगर से जोड़ता है।

(7)अ ॉस्ट्रेलियाट ्रांसक ॉण्टीनेण्टलर ेलमार्गः यह रेलमार्ग ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट पर स्थित पर्थ नगर को एडिलेड से जोड़ता है। आगे यही रेलमार्ग मेलबॉर्न कैनबरा होते हुए सिडनी नगर तक जाता है।

(iii) भारत के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अडड् निम्नलिखित हैं–

(1) इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन, नई दिल्ली।

(2) सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय विमान पतन, कोलकाता।

(3) पालम हवाई अड्डा, नई दिल्ली।

(4) सहर अंतर्राष्ट्रीय विमान पतन, मुंबई।

(5) मीनाम्बकम अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन, चेन्नई।

(6) राजा साँसी अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन, अमृतसर।

(7) तिरुवनन्तपुरम अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन, त्रिवेन्द्रम।

इनके अतिरिक्त भारत में लगभग 120 आंतरिक हवाई अड्डे हैं। भारत में प्रथम उड़ान 1911 ई. में आयोजित हुई। एयर इंडिया विश्व के लगभग 50 देशों के लिए विमान सेवाएँ उपलब्ध कराता है।

इंडियन एयरलाइंस : यह विमान कंपनी देश के अंदर 59 शहरों तथा 16 राष्ट्रों के लिए उड़ानों का आयोजन करती है।

वायुदूत : इसकी स्थापना 1981 ई. में की गई थी। यह कंपनी पर्वतीय क्षेत्रों के सुदूर इलाकों के लिए उड़ानें उपलब्ध कराती है।

पवन हंस लिमिटेड : यह एशिया महाद्वीप की सबसे बड़ी हेलीकॉप्टरव ंपनीह ै,ज ोप र्वतीयक्ष ेत्रोंम ेंस ुदूरस ्थानोंक ेलि लए हेलीकॉप्टर सेवा प्रदान करती है।

सहारा, जगसन तथा जेट एयरवेज भी देश में विमान सेवाएँ प्रदान करती हैं।

4. निम्नलिखित कथनों का उचित कारण बताइए :

(i) आदिमानव अपना घर नदी-घाटियों के निकट बनाता था क्योंकि वहाँस ेव हन दीव ेम ाध्यमस ेख ोतीअ ौरव यापारज ैसी क्रियाएँ करने लगा।

(ii) तीर्थ नगरी के निवासी अपने आवास मंदिरों, स्मारकों आदि के पास बनाना पसंद करते हैं क्योंकि पर्यटकों और तीर्थयात्रियों से उन्हें रोजगार प्राप्त होता है।

(iii) अधिकांश हाईवे जंगलों या खेतों से होकर गुजरते हैं क्योंकि वहाँ अबाध गति से वाहन बिना एक दूसरे का मार्ग पार करे दौड़ते हैं।

(iv) इंग्लैंड और भारत के बीच की दूरी 7000 किमी कम हो गई है क्योंकि केप मार्ग से लिवरपूल (इंग्लैंड) और मुंबई के बीच की दूरी 17268 किमी है। लेकिन स्वेज नहर के बन जाने से यह दूरी 9960 किमी रह गई।

7 उष्णकटिबंधीय तथा उपउष्णकटिबंधीय प्रदेशों का जन-जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) अमेजन (ii) (b) अमेरिकी-इंडियन

(iii) (d) ये सभी (iv) (a) गंगा ब्रह्मपुत्र डेलटा में

(v) (b) ब्राजील का एक बंदरगाह (iv) (a) कहवा

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) नदियाँ (ii) कम उपजाऊ (iii) इकट्ठा

(iv) सुंदरी (v) सीढ़ीदार

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
अमेजन	नदी
आबनूस	एक प्रकार की लकड़ी
टूकान	एक विशेष प्रकार का पक्षी
पीट	एक प्रकार का कोयला
सारनाथ	बौद्ध तीर्थ-स्थल
काजीरंगा	जंगली जीव अभयारण्य

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों काउत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) 10° उत्तरी तथा 10° दक्षिणी अक्षांशों के मध्य स्थित भूमध्य रेखा के चारों ओर विस्तृत प्रदेश उष्णकटिबंधीय प्रदेश कहलाता है। इनका विस्तार 10° उत्तरी तथा 10° दक्षिणी अक्षांशों के मध्य स्थित है।

(ii) टूकान, बंदर, स्लोथ, चींटीभक्षी, टेपिर, मगरमच्छ, साँप, अनाकोण्डा,अ जगर,ज ेआ,अ नेकप,कारक ेम छलियाँ परान्हा यहाँ पाए जाने वाले अन्य प्रमुख जंतु हैं। सघन वनों में गोरिल्ला और चिंपैंजी आदि जंतु भी मिलते हैं।

(iii) गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन की जलवायु सम है। गर्मियाँ गर्म और जाड़े ज्यादा ठंडे होते हैं।

(iv) गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के दो महत्त्वपूर्ण शहरों के नाम–मेरठ और कानपुर हैं।

(v) अमेजिन बेसिन में गर्म जलवायु और अधिक वर्षा के कारण सघन वन पाए जाते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) अमेजिन बेसिन उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के अंतर्गत आता है, जो दक्षिणी अमेरिका में स्थित है।

अमेजिन बेसिन की वनस्पति : गर्म जलवायु और अधिक वर्षा के कारण इस बेसिन में सघन वन पाए जाते हैं। वृक्ष सदाबहार तथा चौड़ी पत्ती वाले होते हैं। प्रमुख वृक्षों में महोगनी, बाल्नी, सिल्क, कॉटन, रोजवुड, आबनूस, बाँस, रबर आदि हैं। पेड़ों के तनों के चारों ओर लियानाज नामक मोटी लकड़ी वाली बेल लिपटी रहती हैं। इन वनों से तेल, सेल्युलोज, रेशे तथा गोंद आदि पदार्थ भी मिलते हैं।

(ii) अमेजिन बेसिन में वर्षा वाले वन अनेक प्रकार के जंगली जीव-जंतुओंस ेभ रेप ड़ेह ैं।य हाँट ूकानज ैसा ि वशेषप क्षीप ाया जाता है, जो विशेष प्रकार की आवाज 'हम' करता है। इसकी बड़ी आकार की चोंच होती है, जो चमकीले रंगों से बनी होती है तथा इसे अन्य पक्षियों से अलग करती है। इसे स्वर्ग के पक्षी के नाम से भी जाना जाता है। बंदर, स्लोथ, चींटीभक्षी, टेपिर, मगरमच्छ, साँप, अनाकोण्डा, अजगर, बोआ अनेक प्रकार की मछलियाँ, पिरान्हा यहाँ पाए जाने वाले अन्य प्रमुख जंतु हैं। सघन वनों में गोरिल्ला और चिम्पैंजी आदि जंतु भी मिलते हैं।

(iii) भरपूर वर्षा और गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा निरंतर आपूर्ति के कारण गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा काफी उपजाऊ है। यहाँ किसान चना, गेहूँ, चावल, गन्ना, दाले, सब्जियाँ, आम, केला, पपीता, लीची, अमरूद आदि बड़े पैमाने पर उगाते हैं। जूट तथा चाय का उत्पादन विशेष रूप से ब्रह्मपुत्र डेल्टा में बड़े पैमाने पर किया जाता है।

(iv) गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में स्थित शहरों में अनेक प्रकार के उद्योगों की स्थापनाक ीग ईह ै।उ दाहरणव ेर्ा लए-मेरठ,क ानपुर,व ाराणसी और ढाका (बांग्लादेश) में सूती वस्त्र उद्योग तथा रासायनिक

पदार्थों को बनाने के उद्योग स्थापित किए गए हैं। मेरठ की अपनी अलग पहचान कैंची उद्योग, खेल के सामानों के निर्माण तथा पुस्तकों के प्रकाशन स्थल के रूप में भी की जाती है। वाराणसी और ढाका रेशम उत्पादन और जूट उद्योग के लिए प्रसिद्ध हैं। असम में तेल शोधशालाएँ तथा प्राकृतिक गैस व पेट्रोकैमिकल्स के कारखाने हैं। कोलकाता में जूट मिल तथा जलयान निर्माण के उद्योग स्थापित हैं। असम और बांग्लादेश के नगरों के विभिन्न प्रकार की हस्तकलाएँ, लघु उद्योग के रूप में प्रचलन में हैं। कुछ लोग पर्यटन उद्योग में लगे हुए हैं क्योंकि इस क्षेत्र में ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्व के नगर; जैसे-आगरा, लखनऊ, वाराणसी, मथुरा, इलाहाबाद आदि बड़ी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 10 पंक्तियों में दीजिए :

(i) **अमेजन बेसिन में मानव जीवन :** अमेजिन बेसिन के लोगों का जीवन कठिन एवं दुरुह है। दलदल और आर्द्रता विभिन्न प्रकार के मच्छरों और कीड़े-मकोड़ों को जन्म देती है। मच्छरों के काटने से मलेरिया, पीला ज्वर तथा अन्य प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं। यही कारण है कि अमेजन बेसिन में जनसंख्या घनत्व बहुत कम है। यहाँ के निवासी अमेरिकी इंडियन कहलाते हैं। यहाँ भोजन इकट्ठा करने वाली और शिकार करने वाली जनजातियाँ भी पाई जाती हैं। पुरुष शिकार करते हैं तथा मछलियाँ पकड़ते हैं जबकि स्त्रियाँ खेत में फसलों को बोने-काटने का काम करती हैं। आधुनिक युग में अमेजन बेसिन के निवासियों का रहन-सहन का ढंग तीव्र गति से बदला है। इन लोगों ने स्थायी अधिवास प्रारंभ कर दिया है तथा उन्नत खेती करने लगे हैं। ये लोग अमेजन को जल यातायात के तौर पर उपयोग में लाते हैं।

कृषि : यहाँ जमीन कम उपजाऊ है, इसीलिए लोग झूम खेती करते

हैं। किसान खेती करने के लिए पेड़ों को जलाकर जमीन साफ करते हैं। वे लोग यहाँ तब तक खेती करते हैं, जब तक इस जमीन की उर्वरा शक्ति बनी रहती है। वे कसावा, टेपिओका, चावल, मक्का, कोको, अन्ननास, कहवा, आलू अखरोट तथा काली मिर्च की खेती करते हैं। ब्राजील कहवा उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रखता है।

(ii) **गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में मानव जीवन :** गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में लोग मुख्यत: किसान और मछुआरे हैं। किसान गेहूँ, अनाज, दालें, जूट आदि उगाते हैं तथा कुछ लोग मछली पकड़कर अपनी आजीविका चलाते हैं। गंगा के डेल्टा में रहने वाले लोग चीनी मिलों के लिए गन्ने की खेती करते हैं। अधिकतर लोग कृषि कार्यों में लगे हुए हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेतों में फसलें उगायी जाती हैं। यहाँ लोग विभिन्न प्रकार के व्यवसाय भी करते हैं; जैसे–व्यापार, वाणिज्य, शिल्पकारी, मजदूरी, पशुपालन तथा दुग्ध उत्पादन के लिए गाय, भैंस, बकरी, भेड़ आदि को पालना।

यातायात तथा नगर : गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में रेलों और सड़कों का जाल बिछा है। यहाँ के प्रमुख नगर; जैसे–आगरा, दिल्ली, कोलकाता, गोहाटी तथा ढाका (बांग्लादेश की राजधानी), रेल और सड़क मार्गों और वायुमार्गों से जुड़े हैं। दिल्ली और कोलकाता में मेट्रो रेल की सुविधा उपलब्ध है। इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाइ अड्डा, नई दिल्ली, नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, कोलकाता प्रसिद्ध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विमान पत्तन हैं। बांग्लादेश में ढाका भी एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियाँ आंतरिक नौवहन की सुविधा प्रदान करती हैं। ब्रह्मपुत्र बांग्लादेश में जल यातायात के लिए उपयोग में लायी जाती है। आगरा लाल किले और ताजमहल के लिए प्रसिद्ध है। दिल्ली भारत की राजधानी है। इलाहाबाद, मथुरा और वाराणसी हिंदुओं के धार्मिक नगर हैं।

4. निम्नलिखित का नाम बताइए :

(i) उष्णकटिबंधीय प्रदेश (ii) अमेजन नदी

(iii) टूकान (iv) अमेरिकी इंडियन

8 रेगिस्तान में जन-जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) मरुस्थल (ii) (a) बौद्ध मठ को

(iii) (c) सहारा (iv) (b) सहारा के

(v) (c) बाल्टी

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
बद्दू	सहारा के निवासी
गंगोत्री	ग्लेशियर
याक	लद्दाख का बैल जैसा दिखने वाला पशु
काहिरा	मिस्र की राजधानी
लेह	लद्दाख की राजधानी
बारालाचा ला	दर्रा

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) असत्य

(iv) सत्य

4. निम्नलिखित कथनों के लिए केवल एक शब्द लिखिए :

(i) सहारा (ii) मरुद्यान (iii) लू (iv) गिजा

(v) पशमीना

संकलित निर्धारण

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

(i) विश्व का सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा है।

(ii) सहारा मरुस्थल अफ्रीका महाद्वीप में स्थित है।

(iii) भारत का सबसे ठंडा मरुस्थल लद्दाख है।

(iv) सहारा में सियार, चूहे, लोमड़ी, गजेल, छिपकली, साँप, मकड़ी, ऊँट, लकड़बग्घे, बिच्छू आदि जीव-जंतु पाए जाते हैं।

(v) सहारा में रहने वाले लोग सूती वस्त्र पहनते हैं व लद्दाख में लोग ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करते हैं।

(vi) लद्दाख में बोली जाने वाली भाषाएँ–लद्दाखी एवं बाल्टी हैं।

(vii) पूर्वी लद्दाख में हेमिस, थिकसे, शाय तथा लेमयुरू नामक बौद्ध मठ हैं, जिन्हें गोम्पा कहते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए :

(i) सहारा की जलवायु बहुत शुष्क और गर्म है। अपराह्न में बहुत गर्म लू चलती है। दिन बहुत गर्म और रातें ठंडी होती हैं। दिन का तापमान 50° सेल्सियस तक पहुँच जाता है; जबकि रात्रि में पारा शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे गिर जाता है।

(ii) अति कम वर्षा होने के कारण सहारा में कँटील झाड़ियाँ, कैक्टस, ताड़, बबूल, अकेशिया, खजूर आदि वनस्पति उगती हैं। ताड़ तथा खजूर के पेड़ जलाकृतियों, जिन्हें मरुद्यान कहते हैं, के पास उगे होते हैं। इन मरुद्यानों के पास के गाँव में बसने वाले लोग कुछ अन्य फसलों; जैसे–गेहूँ, जौ, बीन्स तथा कपास आदि की खेती करते हैं। सहारा में सियार, चूहे, लोमड़ी, गजेल, छिपकलियाँ, साँप, मकड़ी, ऊँट, लकड़बग्घे, बिच्छू आदि जीव-जंतु पाए जाते हैं।

(iii) लद्दाख के पर्वतीय ढाल घास और झाड़ियों से आच्छादित हैं। घाटी में विलो और पॉपलर के वृक्षों की बहुतायत है। लद्दाख के ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में सेब, खुमानी तथा अखरोट की पैदावार खूब होती है। यहाँ के लोग जौ, आलू, शलगम, मटर तथा बीन्स की खेती करते हैं।

(iv) लद्दाख में जंगली बकरियाँ, भेड़, याक तथा विशेष जाति के कुत्ते पाए जाते हैं। याक बड़े आकार वाला शाकाहारी गाय जैसा दिखने वाला पशु है, जिसके दूध से पनीर तथा मक्खन आदि बनाए जाते हैं। बकरियों, याकों तथा भेड़ों से ऊन प्राप्त की जाती है, जिससे ऊनी वस्त्रों का निर्माण किया जाता है। अतः यहाँ के लोग बकरियाँ, भेड़, याक तथा टट्टुओं को पालते हैं।

(v) सहारा मरुस्थल बहुत विशाल है। ऊँट ही यहाँ यातायात का एकमात्र साधन है। विज्ञान और तकनीकी विकास के साथ-साथ सहाराव ेअ ार-पारर ेलवेल ाइनत थास ड़कोंक ा िवकासि कया गया। सड़कों पर मोटर कार, बसें, बाइक तथा ट्रकों को दौड़ते हुए देखा जा सकता है। वायु सेवाओं के द्वारा भी एक-दूसरे नगरों तथा देशों की यात्राओं को अति सुगम बना दिया गया है। मिस्र की राजधानी काहिरा में अंतर्राष्ट्रीय स्तर का विमान पत्तन है।

गिजा के विशाल पिरामिडों को देखने के लिए विश्व के कोने-कोने से पर्यटक प्रति वर्ष लाखों की संख्या में आते हैं। त्रिपोली तथा एलेक्जेंड्रिया भूमध्य सागर के किनारे पर स्थित महत्त्वपूर्ण बंदरगाह है। नील नदी तथा स्वेज नहर नौवहन के लिए उपयोगी हैं।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) सहारा के निवासियों को बद्दू कहा जाता है। ये लोग घुमक्कड़ और खानाबदोश जीवन जीते हैं। ये लोग ऊँट, घोड़े, खच्चर, गधे तथा भेड़-बकरियाँ पालते हैं। ये भोजन की तलाश में यहाँ से वहाँ घूमते रहते हैं। ऊँट तथा घोड़ों की पीठ पर ये अपना सामान एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। जानवरों से इन्हें दूध, खाल, हड्डियाँ आदि मिलते हैं। पशुओं की खाल (चमड़े) से भी लोग अपने उपयोग की

चीजों का निर्माण करते हैं। यहाँ के गड़रिए तुएरेग कहलाते हैं; जो बकरी, भेड़ तथा ऊँट पालते हैं। ये लोग पूर्णतया दूध, मांस और खजूर पर निर्भर करते हैं। आधुनिक युग में बद्दू और तुएरेग लोगों ने अधिवासी जीवन शुरू कर दिया है तथा अपने रहन–सहन के ढंग कोप ूर्णत:प रिवर्तितक र लियाह ै।ि मस्रम ेंन ीलन दीक ीघ ाटी उत्तम श्रेणी की कपास और गन्ना उत्पादन के लिए विख्यात है। खजूर के रस से शराब बनाई जाती है तथा इसकी पत्तियों से टोकरियाँ, पंखे तथा मकानों की छतें बनाई जाती हैं।

इनके अतिरिक्त व्यापार, खनन, शिल्पकारी तथा जमीन से खनिज तेल के उत्पादन आदि कुछ अन्य व्यवसायों में भी यहाँ के लोग लगे हुए हैं।

(ii) **लद्दाख में जीवन शैली :** लद्दाख में बौद्ध तथा मुसलमान लोग निवास करते हैं। बौद्ध लोग लद्दाखी तथा मुसलमान लोग बाल्टी भाषाएँ बोलते हैं। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ की महिलाएँ बहुत परिश्रमी होती हैं। वे कृषि, व्यापार तथा तमाम घरेलू कार्यों को करती हैं। कुछ महिलाएँ दुकानें भी चलाती हैं। ठंड से बचने के लिए लोग यहाँ ऊनी वस्त्र प्रयोग करते हैं। ऊँचाई वाले वाले ठंडे इलाकों में रहने ाले लोग बकरियाँ, भेड़, याक तथा टट्टुओं को पालते हैं। शीत ऋतु के दौरान लद्दाखी लोग त्योहारों तथा उत्सवों का लुत्फ उठाते हैं क्योंकि बर्फ जमने के कारण अन्य क्रियाकलापों के लिए वहाँ विपरीत परिस्थितियाँ जन्म ले लेती हैं। लद्दाखी लोगों की जीवनशैली आधुनिकता के अनुसार दिन–प्रतिदिन बदल रही है।

लद्दाख के निवासियों के व्यवसाय : लद्दाख के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ के जुलाहे सुंदर और कीमती शॉल, गलीचे तथा कंबल बुनते हैं। कुछ लोग पर्यटन व्यवसाय में सलंग्न हैं। पर्यटन व्यवसाय लद्दाख के मुख्य उद्योगों में से एक है।

4. निम्नलिखित का उचित कारण बताइए :

(i) शरीर को झुलसा देने वाली गर्मी से बचने के लिए सहारा मरुस्थल के निवासी सूती वस्त्र पहनते हैं।

(ii) वाष्पोत्सर्जन के द्वारा पानी की हानि को रोकने के लिए सहारा मरुस्थल के वृक्ष तथा पौधे अपनी पत्तियों को काँटों में रूपांतरित कर लेते हैं।

(iii) क्योंकि सहारा मरुस्थल के निवासी बद्दू खानाबदोश जीवन जीते हैं और ये भोजन की तलाश में यहाँ से वहाँ घूमते रहते हैं।

(iv) याकव ेद ूधस ेप नीरत थाम क्खनअ ादिब नाएज ातेह ैं।इ सके साथ–साथ याक से ऊन भी प्राप्त की जाती है। अत: याक लद्दाखियों का सबसे उपयोगी जंतु है।

9 विश्व के शीतोष्ण प्रदेशों में जन–जीवन

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) बहुत कम (ii) (b) प्रेयरी से

(iii) (b) यू.एस.ए. के प्रेयरी से (iv) (a) कनाडा के प्रेयरी से

(v) (c) भेड़

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
मिसीसिपी	प्रेयरी की एक नदी का नाम
लिम्पोपो	वेल्ड की एक नदी का नाम
किम्बरले	हीरों के खनन के लिए जाना जाता है
जोहन्सबर्ग	सोने की खानों के लिए प्रसिद्ध

कुडु	वेल्ड का जंगली जंतु
जुलु	वेल्ड के निवासियों द्वारा बोली जाने वाली एक भाषा

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) प्रेयरी	(ii) रॉकी पर्वत	(iii) अन्न भंडार
(iv) वेल्ड	(v) वेल्ड	(vi) किम्बरले

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य	(ii) असत्य	(iii) सत्य
(iv) असत्य	(v) सत्य	(vi) सत्य

5. एक शब्द दीजिए :

(i) प्रेयरी	(ii) प्रिटोरिया	(iii) जोहन्सबर्ग
(iv) कोयला	(v) रेंच	(vi) ऑरेंज

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) प्रेयरी उत्तरी अमेरिका में रॉकी पर्वत के पश्चिम से पूर्व में स्थित महान झीलों के क्षेत्र तक फैले हैं। ये घास भूमियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा में फैली हैं।

(ii) लिम्पोपो, साबी, ऑरेन्ज तथा वाल नदियाँ।

(iii) प्रेयरी मैदानों में उगने वाले वृक्ष—विलो, आल्डर तथा पॉपलर। प्रेयरीम ैदानोंम ें प ाएज ानेव ालेज ंतु—बाइसनय ाअ मेरिकीभ ैंस, खरगोश, कोयोट, प्रेयरी कुत्ते तथा गोफर।

(iv) प्रेयरी में कस्बों और नगरों के चारों ओर किसान सब्जियाँ उगाते हैं, जिन्हें वे स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। वे इसे बाजार-बागवानी के नाम से पुकारते हैं।

(v) मिसीसिपी, ससकाचीवान।

(vi) प्रिटोरिया।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) प्रेयरी में घास की विस्तृत भूमियों में लोग बड़े पैमाने पर पशुपालन करते हैं, जो उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। वे शहरों के निकट दुग्धशालाओं की स्थापना करते हैं ताकि दुग्ध उत्पाद स्थानीय बाजारों में बेचे जा सकें। गाय फसलों को खाती हैं तथा वे दूधअ ौरम ांसव ेिलएउ पयोगम ेंल ाईज ातीह ैं।इ सप्रकारव े व्यवसाय को मिश्रित खेती कहते हैं।

(ii) प्रेयरी में सोना, चाँदी, जस्ता, ताँबा, प्राकृतिक गैस तथा खनिज तेल आदि के भंडार मिलते हैं। लौह अयस्क सुपीरियर झील के चारों ओर स्थित क्षेत्रों में पाया जाता है। कोयला रॉकी पर्वत की तलहटी में पाया जाता है। पोटाश के भंडार प्रेयरी के उत्तरी भाग में स्थित हैं।

(iii) वेल्ड के मैदानों में विभिन्न प्रकार की घास पाई जाती है। दक्षिणी वेल्ड में रैड घास तथा ऊँचे वेल्ड में अकेशिया और मरुला घास उगी देखी जा सकती है। वेल्ड के मैदानों में शेर, तेंदुए, जिराफ, कुड, चीता आदि जीव-जंतु पाए जाते हैं। असीमित शिकार के कारण इन जानवरों की संख्या में कमी आ गई है, परंतु इन जानवरों की सुरक्षा के लिए सरकार ने इन पर विशेष ध्यान दिया है।

(iv) प्रेयरी की अधिकतर जनसंख्या फार्मों में कृषि कार्यों में लगी हुई हैं। कस्बों और नगरों के चारों ओर किसान सब्जियाँ उगाते हैं, जिन्हें वे स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। घास की विस्तृत भूमियों में लोग बड़े पैमाने पर पशुपालन करते हैं, जो उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। वे शहरों के निकट दुग्धशालाओं की स्थापना करते हैं ताकि दुग्ध उत्पाद स्थानीय बाजारों में बेचा जा सके। गाएँ, दूध और मांस के लिए उपयोग में लाई जाती हैं। इस प्रकार के व्यवसाय को मिश्रित कृषि कहते हैं। गायों को बड़े-बड़े फार्मों में पाला जाता है, जिन्हें रेंच कहते हैं। डेरी फार्मिंग तथा कृषि, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग पर आधारित है। प्रेयरीज में रैड इंडियन का मुख्य व्यवसाय

शिकार करना, खाद्य पदार्थ इकट्ठा करना तथा प्राचीन कृषि थे। कुछ लोग खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैस के भूमि से बाहर निकालने के व्यवसाय में लगे हुए हैं।

(v) वेल्ड के मुख्य नगर सड़क मार्गों, रेलमार्गों तथा वायुमार्गों से जुड़े हैं। जोहन्सबर्ग यहाँ का सबसे बड़ा नगर है। प्रिटोरिया दक्षिण अफ्रीका की केंद्रीय राजधानी है। हरारे, जिम्बाम्वे की राजधानी है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **वेल्ड में लोगों के व्यवसाय :** कृषि और खनन के अतिरिक्त वेल्ड के निवासियों का मुख्य व्यवसाय भेड़-पालन है। ऊन उद्योग पैसा देने वाला उद्योग साबित हुआ है। दुग्ध उद्योग गर्म और जलीय भागों में रहने वाले लोगों का दूसरा मुख्य व्यवसाय है। दुग्ध उत्पादन अन्य देशों को निर्यात कर दिए जाते हैं।

वेल्डक ीज लवायु : हिंद महासागर के निकट स्थित होने के कारणव ेल्डक ीज लवायुम ृदुह ौ।ग र्मियाँअ ल्पकालीनत थाग र्म होती हैं जबकि शीत ऋतु ठंडी और शुष्क होती है। जुलाई माह सबसे ठंडा महीना होता है। वर्षा सामान्यत: कम लेकिन गर्मियों में भरपूर होती है। इनमें तापमान 5° से से 10° से तक बना रहता है।

वेल्ड में खनिज : खनिज उत्पादन की दृष्टि से वेल्ड संपन्न मैदान है। यहाँ सोना, हीरा, यूरेनियम, कोयला, प्लेटिनम, क्रोमियम तथा लौह अयस्क का खनन किया जाता है। किम्बरले हीरों की खान तथा जोहन्सबर्ग सोने की खान के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। जोहनसबर्ग को विश्व की सोने की राजधानी पुकारा जाता है।

(ii)

क्र.सं.	प्रेयरी की प्राकृतिक वनस्पति	वेल्ड की प्राकृतिक वनस्पति
1.	इन घास भूमियों के कुछ हिस्सों में वृक्ष बिलकुल भी नहीं पाए जाते हैं।	वेल्ड के मैदानों में विभिन्न प्रकार की घास पाई जाती हैं।
2.	वर्षा वाले क्षेत्रों में विलो, आल्डर तथा पॉपलर के वृक्ष पाए जाते हैं।	दक्षिणी वेल्ड में रैड घास तथा ऊँचे वेल्ड में अकेशिया और मरूला घास उगी देखी जा सकती है।
3.	घास भूमियों के विस्तृत मैदानों को प्रेयरी कहते हैं, जो यहाँ प्रचुरता में पाए जाते हैं।	ये घास भूमियाँ 600 से 1100 मीटर की ऊँचाई तक पायी जाती हैं।

1

इकाई II : इतिहास (मध्यकालीन भारत)

कब, कहाँ और कैसे?

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) बांग्लादेश (ii) (d) इण्डस

(iii) (d) लोहा (iv) (b) आगरा

(v) (c) अब्दुल हमीद लाहौरी (vi) (a) जहाँगीर

(vii) (d) अमीर खुसरो (viii) (a) कब्र के ऊपर बनी इमारत

(ix) (c) वेनिस का (x) (a) दिल्ली में

(xi) (c) चित्रकला में

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
इब्नबतूता	मुहम्मद बिन तुगलक
सर टामस रो	जहाँगीर
बिलियम हाकिन्स	जहाँगीर
बदायूँनी	मुन्तखबुल-तवारीख
कल्हण	राजतरंगिणी
चन्द्रबरदाई	पृथ्वीराज रासो

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) उपमहाद्वीप (ii) इण्डस (iii) 8वीं सदी

(iv) फतेहपुर सीकरी (v) अब्दुल हमीद लाहौरी (vi) जहाँगीर

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) 8वीं और 18वीं शताब्दी के मध्य का समय मध्यकालीन इतिहास कहलाता है।

(ii) महाद्वीप से आकार में छोटा भूखंड उपमहाद्वीप कहलाता है।

(iii) जहाँगीर के समय विलियम हॉकिन्स व सर टॉमस रो और मुहम्मद बिन तुगलक के समय इब्नबतूता भारत आए थे।

(iv) भारतीय इतिहास को तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) हमारे देश को पुराणों में भारतवर्ष कहा गया है। इतिहासकार इसे आर्यदेश तथा पारसी इसे सप्तसिंधु पुकारते थे, जबकि यूनानियों ने इसे इण्डिया पुकारा। ईरानियों ने इसे इण्डस कहा। मिन्हाज-ए-

सिराज, एक ईरानी इतिहासकार ने तेरहवीं शताब्दी में इसे हिन्दुस्तान कहा। 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरो, एक प्रसिद्ध कवि ने इसके लिए हिन्द शब्द का प्रयोग किया।

(ii) मध्यकालीन भारत के साहित्यिक स्रोतों का वर्णन निम्नलिखित है–

(अ) पुरातात्विक स्रोत : पुरातात्विक स्रोतों में सिक्कों, पेंटिंग, प्राचीनइ मारतोंअ ौरस् मारकों,ख ुदाई,ल ेखोंअ ादिक ोस म्मिलित किया जाता है।

(ब) साहित्यिक स्रोत : विदेशी यात्रियों के द्वारा दिए गए राजाओं और सम्राटों के ऐतिहासिक इतिवृत्त, जीवन वृत्त तथा आत्मकथाएँ (सम्राटों द्वारा लिखी गई) विदेशी साहित्यिक स्रोत कहलाते हैं।

(स) विदेशी यात्रियों द्वारा दिए गए विवरण : मध्यकाल में अनेक विदेशी यात्रियों ने भारत का दौरा किया था। तत्कालीन इतिहास को जानने में उनके द्वारा दिए गए विवरणों से बहुत मदद मिलती है।

(iii) भारत के अनेक स्थानों से पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई में बड़ी संख्या में सिक्के प्राप्त हुए हैं। ये सिक्के सोना, चाँदी, ताँबे जैसी धातुओं से बने हैं। ये सिक्के भारतीय इतिहास लिखने में बहुत सहायक सिद्ध हुए हैं। इन सिक्कों पर की गई खुदाई लिखाई में संबंधित राजाओं और शासकों के शासनकाल तथा उनके समय की राज्य की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का उल्लेख किया गया है।

(iv) मध्यकालीन भारत में बाबर तथा जहाँगीर ने चित्रकला में बहुत रुचि ली। उनके शासनकाल में चित्रकला का बहुत विकास हुआ। उनके समय में तैयार की गई पेंटिंगों से पता चलता है कि वे लोग चित्रकला के प्रति गहरा रूझान रखते थे। उनकी चित्रकारी के विषय सुंदर महिलाएँ, पेड़-पौधे, लताएँ तथा पशु हैं। इन चित्रों से

रंग-योजनाओं का भी पता चलता है। उस समय की अधिकांश धार्मिक पुस्तकों में छोटे-छोटे चित्रों का प्रयोग किया गया था। जहाँगीर स्वयं अपने समय का एक दक्ष चित्रकार था तथा उसे ऐतिहासिक चित्रों का इकट्ठा करने का शौक था।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) विदेशी यात्रियों के द्वारा दिए गए राजाओं और सम्राटों के ऐतिहासिक इतिवृत्त, जीवन वृत्त तथा आत्मकथाएँ विदेशी साहित्यिक स्रोत कहलाते हैं। ये सभी साक्ष्य मध्यकालीन शासकों के शासन एवं राज्यों के विषय में महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध कराते हैं। शासकों के दरबारी कवियों और विद्वानों ने अपने शासकों के विषय में महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की, जिनमें तत्कालीन सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दशाओं का वर्णन किया गया है। सामान्यतः इन पुस्तकों की रचना तुर्की, अरबी तथा ईरानीभ ााषाओंम ेंक ीग ईथ ी।य ेप ुस्तकेंभ ारतव ेम ध्यकालीन इतिहास की मौलिक स्रोत हैं। बाबर रचित बाबरनामा, जहाँगीर की 'तुजुके-जहाँगीरी', अलबरूनी की 'तहकीके-हिंद', अबुल फजल की 'आइना-ए-अकबरी' और 'अकबरनामा', अब्दुल हमीद लाहौरी का 'पादशाहनामा', बदायूँनी की 'मुन्तखूबल-तवारीखी', कल्हण की 'राजतरंगिणी', चन्द्रबरदाई की 'पृथ्वीराज रासो' तथा बिहारी की 'सतसई' ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत हैं।

(ii) मध्यकाल में अनेक विदेशी यात्रियों ने भारत का दौरा किया था। तत्कालीन इतिहास को जानने में उनके द्वारा दिए गए विवरणों से बहुत मदद मिलती है। अरबी यात्रियों में अलबरूनी, सुलेमान, अलमसूदी, हसन निजामी, निजामुद्दीन तथा फरिश्ता जैसे विद्वानों ने अपने विवरणों में दिल्ली सल्तनत का जिक्र किया है। मुसलमान लेखकों में अलबरूनी, अलमसूरी तथा अलाई दसोरी जैसे विद्वानों ने अपने रचित ग्रंथों में मध्यकालीन भारत का विवरण दिया है। अंग्रेज यात्रियों; जैसे—निकोलो कोंटी (कृष्णदेव राय के समय वेनिस से

भारत आया था), विलियम हॉकिन्स व सर टॉमस रो (जहाँगीर के समयइ ंग्लैण्डस ेभ ारतआ ाए),इ ब्नबतूता(मोहम्मदत ुगलकव े समय मोरक्को से भारत आया), ने अल्बरूनी (महमूद गजनवी के साथ भारत आया) ने अपनी पुस्तक 'तारीख-उल-हिन्द' में तत्कालीन भारत का वर्णन किया है।

4. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए :

(i) **सिक्का :** भारत के अनेक स्थानों से पुरातत्ववेत्ताओं को खुदाई में बड़ी संख्या में सिक्के प्राप्त हुए हैं। ये सिक्के सोना, चाँदी, ताँबे जैसी धातुओं के बने हैं।

(ii) **स्मारक :** व्यक्ति या घटनाओं का विवरण संजोए हुए इमारत, स्तंभ, मूर्ति आदि स्मारक कहलाते हैं।

(iii) **मकबरा :** समाधि स्थल को मकबरा कहते हैं।

(iv) **आत्मकथा :** अपनी स्वयं की जीवनी लिखना आत्मकथा कहलाता है।

(v) **पेंटिंग :** मध्यकालीन भारत में बाबर तथा जहाँगीर ने चित्रकला में बहुत रूचि ली। उनके समय में तैयार की गई पेंटिंगों से पता चलता है कि वे लोग चित्रकला के प्रति गहरा रूझान रखते थे।

2 क्षेत्रीय राज्यों का उदय-I

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) दन्तिदुर्ग	(ii) (b) 535 ई. से 566 ई. तक
(iii) (b) 640 ई.	(iv) (a) तैलप
(v) (a) दण्डी	(vi) (a) रथ मंदिर

(vii) (a) विजयालय (viii) (a) एलोरा गुफाओं में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
राष्ट्रकूट	कृष्ण प्रथम
पल्लव	नरसिंहवर्मन प्रथम
वातापी के चालुक्य	पुलकेशिन प्रथम
कल्याणी के चालुक्य	तैलप
चोल	राजराजा प्रथम
पल्लव	महेंद्रवर्मन प्रथम

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

4. निम्नलिखित को पूरा कीजिए :

(i) राष्ट्रकूट वंश (ii) रथ मंदिर (iii) पुलकेशिन द्वितीय

(iv) मालवा (v) राजराजा प्रथम

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) दन्तिदुर्ग राष्ट्रवूट वंश का संस्थापक था।

(ii) कैलाश मंदिर एलोरा में स्थित है।

(iii) बादामी के चालुक्य वंश का प्रथम राजा जयसिंह था।

(iv) हर्ष को पुलकेशिन द्वितीय ने पराजित किया।

(v) पल्लव शासक दक्षिणी राज्यों के महान राजपूत शासक थे। सातवाहन वंश के पतन के पश्चात् ये शासक सतारूढ़ हुए। संगम साहित्य में उन्हें तोन्डियार के नाम से जाना गया।

(vi) कांची।

(vii) चोल वंश के पास।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) कल्याणी के चालुक्य वंश का संस्थापक तैलप था, जिसने 973 ई. से 997 ई. तक शासन किया था। उसने चेदि, नेपाल, उड़ीसा तथा कुन्तला को विजित किया। उसने परमार वंश के मालवा के शासक मुंज को मार दिया था। इस वंश के अन्य शासकों में सत्याश्रया, दासवर्मन,ि वक्रमादित्यप ंचम,ज यसिंहप्रथमत थाज गदेकमल्ला आदि हुए।

(ii) पल्लव शासक दक्षिणी राज्यों के महान राजपूत शासक थे। सातवाहन वंश के पतन के पश्चात् ये शासक सतारूढ़ हुए। संगम साहित्य में उन्हें तोन्डीयार के नाम से जाना गया था और उनकी उत्पत्ति सातवाहन सामंतों, जो नाग वंश से संबंधित रहे थे, से मानी जाती है। कुछ इतिहासकार पल्लवों को उत्पत्ति से ब्राह्मण तथा व्यवसाय से क्षत्रिय मानते हैं।

(iii) राजेंद्र प्रथम, राजराजा प्रथम का पुत्र था। वह अपने पिता की मृत्यु के बाद राजसिंहासन पर बैठा। उसने गंगईकोण्ड चोल तथा उत्तमा चोल की उपाधि धारण की। वह अपने समय का महान योद्धा तथा प्रशासक था। उसने लगभग 32 वर्ष तक शासन किया तथा अपने राज्य एवं शक्ति का प्रसार किया। उसने गंगईकोण्ड चोलपुरम को अपनी नई राजधाननी बनाया।

(iv) चोलों ने दक्षिण भारत में तमिलनाडु और तंजौर में शासन किया। चोल वंश को अति प्राचीन वंश माना जाता है। इस वंश की स्थापना प्रथम और महान शासक विजयालय ने की थी। उसने तंजौर को अपनी राजधानी बनाया था। उसने पल्लवों और पाण्डवों को हराया। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा राजराजा प्रथम (985 ई. से 1014 ई.) हुआ था।

(v) चोलों के शासन में शिक्षा और साहित्य ने बहुत उन्नति की थी। मंदिर, शिक्षा के मुख्य केंद्र थे। संस्कृत तथा तमिल भाषाएँ मुख्य

रूप से पढ़ी और पढ़ाई जाती थीं। अध्ययन के मुख्य विषय संगीत, नाटक, नृत्य, व्याकरण, नक्षत्रशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र थे। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और संस्कृत भाषाओं में बड़ी संख्या में पुस्तकों की रचना की गई।

प्रसिद्ध तमिल कवि कम्बन ने रामायण का अनुवाद तमिल में किया था। कवि टिक्कना ने महाभारत का अनुवाद तेलुगु भाषा में किया था। तमिल साहित्य की उन्नति चोलों के शासन के दौरान सर्वाधिक हुई।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) चोल राजाओं ने किसानों की दशा और उनकी भलाई की ओर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने सिंचाई की उचित व्यवस्था की, जिसके लिए उन्होंने कुओं, तालाबों, नहरों और बाँधों का निर्माण कराया। उन्होंने तालाबों का निर्माण इसलिए कराया ताकि बंजर भूमि को उपजाऊ बनाकर उससे अधिक उपज प्राप्त की जा सके। मंदिरों को दिया गया दान का धन कृषि के विकास हेतु उपभोग में लाया जाता था। प्राकृतिक आपदाओं; जैसे—सूखा, बाढ़ या भारी वर्षा के कारण किसानों का कर माफ कर दिया जाता था। कृषि उपजों की पैदावार बढ़ाने के लिए वनभूमि की सफाई करके खेती योग्य भूमि उपलब्ध कराना, भूमि का समतलीकरण कराना, बाढ़ पर नियंत्रण हेतु पुश्तों का बनवाना, नहरों का निर्माण कराना आदि कार्यों को प्राथमिकता के साथ किया जाता था।

(ii) चोल राजा हिंदू धर्म के अनुयायी थे। वे शिव और विष्णु को ईश्वर के रूप में पूजते थे। उस समय वैष्णव धर्म बहुत लोकप्रिय हो गया था। इसके अतिरित बौद्ध एवं जैन धर्म भी समाज में प्रचलित थे। चोल शासकों ने इस्लाम तथा ईसाई धर्म के मामलों में कोई दखलंदाजी नहीं की थी।

राजशाही परिवार, ब्राह्मण तथा व्यापारी वर्ग समाज में वैभवपूर्ण

एवं प्रतिष्ठित जीवनयापन करते थे। समाज में उनका विशेष स्थान था। किसान, मजदूर तथा दासों की दशा ज्यादा अच्छी नहीं थी। संपूर्णस माजच ारव र्णोंम ें ि वभाजितथ ाा–ब्राह्मण,क्ष ात्रिय,व ैश्य और शूद्र। शूद्रों की दशा अच्छी नहीं थी और उन्हें अछूत समझा जाता था। उनके मंदिर प्रवेश तथा धार्मिक उत्सवों में भाग लेने पर रोक थी। उन्हें विद्यालयों में भी प्रवेश नहीं लेने दिया जाता था। समाज में नारी की स्थिति तथा दशा सम्मानजनक थी। समाज में बालि ववाहत थास तीप्ऱथाय दा–कदाि दखाईद ेतेथ ो।म ंदिरोंम ें देवदासीप्ऱथा,न ारियोंव ेद ेहश ोषणक ाम ाध्यमथ ाी।स माजम ें महिला दास भी थीं।

(iii) चोल राजा कला तथा शिल्पकारी में भी रूचि लेते थे। उन्होंने तंजौर में वृहदेश्वर के मंदिर का निर्माण द्रविड़ शैली में कराया। गंगईकोण्डा चोलपुरम के मंदिर की छत में टेपर देकर पत्थरों की शिल्पकारी की गई है। बाहरी दीवारों को पत्थर की शिल्पकारी से सजाया गया है। शिल्पकारों ने राजाओं की मूर्तियाँ तथा भक्तों और भगवानक ेप्ऱतिमाएँक ाँसेक ेब नाईथ ाीं।इ नप्ऱतिमाओंक ेप ूरे विश्व में कला के उत्कृष्ट नमूने माना गया है।

मंदिरों की छतों, दीवारों, चबूतरों, खंभों तथा अन्य जगहों पर स्थापत्य कला से संबधित सजावट की गई थी। एलोरा के कैलाश मंदिर तथा ऐलिफेंटा गुफाओं में स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने भित्ति चित्रकारी को दर्शाते हैं।

मंदिरों के आँगन का उपयोग सभा करने, पंचायत में ग्रामीण मामलों पर चर्चा एवं बहस करने तथा उत्सवों व समारोहों को मनाने के लिए किया जाता था। मंदिरों के बरामदों में बच्चों को शिक्षा देने के लिए विद्यालय संचालित किए जाते थे।

(iv) दक्षिण भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण राजपूत वंश राष्ट्रकूट की स्थापना 8वीं शताब्दी में दन्तिदुर्ग नाम के राजा ने की थी। वह

बादामी के चालुक्यों के पतन के उपरांत गद्दी पर बैठा था। उसने राँची, कोशल, गुजरात, कलिंग, मालवा और महाराष्ट्र के राज्यों को जीता था। उसने चालुक्य शासक को पराजित कर वल्लभी पर अधिकार कर लिया था। उसकी मृत्यु 758 ई. से कुछ समय पूर्व हुई थी। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र कृष्ण प्रथम राजगद्दी पर बैठा। उसने 760 ई. तक चालुक्य वंशीय शासकों को पराजित किया। उसने एलोरा स्थित प्रसिद्ध शिव मंदिर, जो चट्टानों को काटकर बनाया गया है, का निर्माण कराया था।

इस वंश का अंतिम शासक कर्का द्वितीय था। उसको चालुक्य शासक तैला द्वितीय ने पराजित किया था। 975 ई. में इस वंश का अंत हो गया।

4. निम्नलिखित तिथियों का ऐतिहासिक महत्तव बताइए :

(i) **1012 – 1044 ई. :** अपने पिता राजराजा प्रथम की मृत्यु के बाद राजेंद्र प्रथम राजसिंहासन पर बैठा।

(ii) **1135 – 1150 ई. :** कुलोत्तुंग द्वितीय ने चोल साम्राज्य पर शासन किया।

(iii) **535 – 566 ई. :** पुलकेशिन प्रथम ने 535 ई. से 566 ई. तक शासन किया।

(iv) **973 – 997 ई. :** कल्याणी के चालुक्य वंश का संस्थपक तैला या तैलप था, जिसने 973 ई. से 997 ई. तक शासन किया था।

3 क्षेत्रीय राज्यों का उदय-II

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) गुजरात से (ii) (a) चंद्रदेव

(iii) (b) 1179 – 1192 ई. (iv) (b) 1191 ई.

(v) परमार वंश से (vi) (a) देवपाल ने

(vii) (a) तोमर शासकों ने (viii) (a) 1025 ई.

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
नागभट्ट प्रथम	मालवा के प्रतिहार
जयचंद	गहड़वाल वंश
पृथ्वीराज चौहान	चाहमान वंश
उपेन्द्रराज	परमार
भोजराज	गुर्जर-प्रतिहार
जयपाल	पाल वंश

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य (vi) असत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अंतिम (ii) कन्नौज के गहड़वाल (iii) पृथ्वीराज तृतीय

(iv) राजधानी (v) दिल्ली (vi) अफगानिस्तान

5. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और उनसे संबंधित का नाम लिखिए:

(i) कौशाम्बी का चंद्र वंश (ii) पृथ्वीराज तृतीय

(iii) मुहम्मद गौरी (iv) एन-उल-मुल्क

(v) भोजराज (vi) बुंदेलखंड के चन्देल शासकों ने

(vii) गोपाल (vii) हरिभद्र

(ix) महमूद गजनवी (x) मुहम्मद गौरी

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) नागभट्ट प्रथम।

(ii) यशपाल।

(iii) मिहिरभोज गुर्जर-प्रतिहार वंश का प्रसिद्ध शासक था।

(iv) कन्नौज।

(v) मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में हराया।

(vi) तराइनक ाप हलाय ुद्ध1 191इ ं.म ेंल ड़ाग याअ ैरइ सय ुद्धम ें मुहम्मद गौरी हार गया था।

(vii) महमूद गजनवी ने।

(viii) देवपाल ने।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) गुजरात के राजपूत राजाओं को प्रतिहार के नाम से जाना जाता था। नागभट्ट प्रथम इस वंश का संस्थापक था। उसके उपरांत मिहिरभोज, महेंद्रपाल प्रथम, महिपाल और उसके उत्तराधिकारी इस वंश के प्रमुख शासक हुए। इस वंश का अंतिम शासक यशपाल था।

(ii) मालवा के राजपूत परमार कहलाते थे। हरसौल अभिलेख में परमारों की उत्पत्ति दक्षिण भारत के राष्ट्रकूटों से मानी गई है। इस वंश के शासको ंने 790 ई. से 1305 ई. तक शासन किया। इस वंश का संस्थापक उपेन्द्रराज (790 - 817 ई;) को माना गया है। प्रारंभ में परमारों का शासन गुजरात में कायम हुआ था, लेकिन कुछ समय पश्चात उन्होंने मालवा में स्वयं को स्थापित कर लिया था। भोजराज परमार वंश का सबसे शक्तिशाली और विद्वान शासक हुआ था।

(iii) होयसल वंश के शासकों ने वर्तमान कर्नाटक के क्षेत्र पर शासन किया और इस वंश का सबसे प्रतापी राजा विष्णुवर्धन था। उसके शासनकाल में होयसल राज्य संपन्नता और शौर्य की चरम सीमा पर पहुँचा। बाद में दिल्ली सल्तनत के सुल्तान ने इस वंश को नष्ट कर दिया।

(iv) 8वीं शताब्दी के तीन शक्तिशाली वंशों–प्रतिहारों, पालों तथा राष्ट्रकूटोंव ेब ीचक न्नौजअ ैरग ंगाघ ाटीव ेंि हस्सोंप रअ पनी परमसत्ता हेतु संघर्ष अविरल जारी रहा, जिसे उत्कर्ष के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है।

(v) तराइन के दो युद्ध लड़े गए। प्रथम युद्ध 1191 ई. में हुआ, जिसमें पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने मुहम्मद गौरी को हराया था। द्वितीय युद्ध 1192 ई. में हुआ, जिसमें मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान तृतीय को हरा दिया तथा उसका वध कर दिया।

(vi) पाल वंश की स्थापना गोपाल ने बंगाल में 750 ई. में की। पाल राजाओं ने लगभग 400 वर्ष शासन किया। धर्मपाल इस वंश का सबसे प्रतापी, बहुमुखी प्रतिभा वाला तथा महान साहसी व्यक्ति था। उसने विक्रमशिला में एक बौद्ध मठ का निर्माण कराया था। उसके पुत्र देवपाल ने बोधगया (बिहार) में 'महाबोध मंदिर' का निर्माण कराया। धर्मपाल ने नालंदा विश्वविद्यालय (बिहार) की नींव रखी थी। उसने प्रसिद्ध बौद्ध लेखक हरिभद्र को आश्रय प्रदान किया था।

(vii) महमूद गजनवी अफगानिस्तान की एक छोटी-सी रियासत का सुल्तान था। उसने इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए भारत के मंदिरों पर आक्रमण किए तथा जहाँ से उसने बड़ी मात्रा में धन, सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात आदि लूटे।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) बुंदेलखंड में चन्देल शासकों का उत्कर्ष हुआ था। हर्षवर्धन ने इस वंश की स्थापना की। बुंदेले चंद्रवंशीय राजपूत थे। इनमें प्रमुख शासकों में यशोवर्मन, धनगंधा, कीर्तिवर्मन तथा परमाल थे। कुतुबुद्दीन ऐबक ने परमाल को पराजित किया था। उन्होंने अनेक प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण कराया। इन मंदिरों में खुजराहो का कंदरिया महादेव मंदिर विश्व प्रसिद्ध है। उन्होंने महोबा को अपनी राजधानी बनाया। प्रसिद्ध चंदेल वीरों आल्हा और ऊदल की वीरता

की कहानियाँ गीतों के रूप में उत्तर भारत के गाँवों में बड़े जोश के साथ गाई जाती हैं। कीर्तिवर्मन ने महोबा के पास एक सुंदर झील का निर्माण कराया था।

(ii) महमूद गजनवी अफगानिस्तान की एक छोटी-सी रियासत का सुल्तान था। वह एक महत्त्वाकांक्षी शासक था तथा मध्य एशिया को विजित करना चाहता था। सेना का गठन करने के लिए उसे अधिक धन की आवश्यकता थी और इसे प्राप्त करने के लिए उसने भारत पर आक्रमण किया था। उसने राजा जयपाल और अनंगपाल पर आक्रमण किया तथा उन्हें युद्ध में पराजित किया। उन्होंने उसे बड़ी मात्रा में धन दिया। इसके बाद उसने इस्लाम के प्रचार-प्रसार के लिए भारत पर सत्रह बार आक्रमण किया तथा बड़ी मात्रा में सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात और धन लूटकर अपने देश गजनी वापसल ौटग या।उ सने1 025इ ्.म ेंग ुजराति स्थतस ोमनाथव े प्रसिद्ध मंदिर पर आक्रमण किया, जहाँ से उसने बड़ी मात्रा में धन, सोना, चाँदी, हीरे आदि लूटे तथा 1026 ई. में इस मंदिर को नष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त उसने मथुरा और कन्नौज के मंदिरों को लूटा। उसकी मृत्यु 1030 ई. में हुई।

(iii) मुहम्मद गौरी अफगानिस्तान के एक छोटे-से राज्य का शासक था। वह महमूद गजनवी की अधीनता में राज्य करता था। महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद वह गजनी का शासक बना। वह अपने राज्यक ा विस्तारक रनाच ाहताथ ा।इ सीलिएउ सने1 191इ ्.म ें भारत पर आक्रमण किया परंतु दिल्ली के चौहान शासक पृथ्वीराज चौहान ने उसे तराइन के प्रथम युद्ध में पराजित कर दिया। उसने गहड़वाल वंश के शासक जयचंद को 12000 ई. में चंदावर के युद्ध में हरा दिया तथा उसको मार दिया। वह अपने सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को अपने द्वारा विजित क्षेत्र को दे गया। मुहम्मद गौरी ने भारत में मुसलिम सत्ता स्थापित की।

4 दिल्ली सल्तनत (1206 – 1526 ई.)

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) 1201 – 1290 ई.　(ii) (a) कुतुबुद्दीन ऐबक
(iii) (a) इल्तुतमिश　(iv) (a) बलबन
(v) (a) बलबन　(vi) (a) मेवाड़
(vii) (c) मुहम्मद तुगलक　(viii) (b) 1398 ई.
(ix) (c) हरिहर और बुक्का　(x) (b) कृष्णदेव राय
(xi) (a) बुद्धिमान आदमी　(xii) (a) हम्पी में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
कुतुबमीनार	नई दिल्ली
चारमीनार	हैदराबाद
गोल गुम्बज	बीजापुर
विट्ठल स्वामी मंदिर	हम्पी
तुगलकाबाद	दिल्ली
महमूद गवाँ का मदरसा	बीदर

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) असत्य　(ii) सत्य　(iii) सत्य
(iv) सत्य　(v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मुहम्मद गौरी ने।
(ii) कुतुबुद्दीन ऐबक ने।

(iii) कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, नसिरूद्दीन महमूद तथा गियासुद्दीन बलबन।

(iv) कुतुबुद्दीन ऐबक को 'लाख बख्श' कहा जाता है।

(v) कुतुबुद्दीन ऐबक ने।

(vi) अजमेर (राजस्थान) में।

(vii) इल्तुतमिश, कुतुबुद्दीन ऐबक के दामाद को गुलाम वंश (दास वंश) का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है।

(viii) रजिया सुल्तान।

(ix) जमालुद्दीन याकूत एक अबीसीनियाई गुलाम था, जिससे रजिया सुल्तान प्रेम करती थी।

(x) चालीसा 40 तुर्की अमीरो का एक दल था, जिसे इल्तुतमिश ने संपूर्ण राज्य पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए बनाया था। गियासुद्दीन बलबन ने चालीसा को समाप्त किया।

(xi) सिकन्दर लोदी ने।

(xii) सुल्तान के पैरों को चूमने की प्रथा पायबोस थी तथा सुल्तान के पैरों के सामने सिर को झुकाकर जमीन से छूने की प्रथा सिजदा थी।

(xiii) मुहम्मद बिन तुगलक।

(xiv) मुहम्मद बिन तुगलक ने।

(xv) विजयनगर साम्राज्य के प्रशासन में निकोलो कोण्टी तथा अब्दुर्रज्जाक भातर आए थे।

(xvi) कृष्णदेव राय।

(xvii) अलाउद्दीन बहमन शाह (हसन) ने बहमनी राज्य की स्थापना की।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) इल्तुतमिश को अपने शासन के दौरान अनेक बाह्य और आंतरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसके विरोधियों में बहुत-से स्थानीय राजा और विद्वान थे, जिन्होंने उसका और उसके शासन का विरोध किया था।

(ii) रजिया सुल्तान, इल्तुतमिश की बेटी थी तथा वह दिल्ली सल्तनत की प्रथम और एकमात्र महिला मुसलिम शासक थी। वह संपूर्ण भारत की भी एकमात्र महिला मुसलिम शासिका था। इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था। परंतु उलेमाओं और सरदारों ने इसका खुलकर विरोध किया। रजिया ने लगभग 3 वर्ष और 8 माह शासन किया। वह राजदरबार में सुल्तान की पोशाक में बैठा करती थी तथा दरबार में बिना बुर्का पहने जाती थी। वह युद्ध में स्वयं घोड़े पर चढ़कर सैन्य संचालन किया करती थी क्योंकि वह बहादुर और बलवान थी।

(iii) अलाउद्दीन खिलजी जलालुद्दीन खिलजी (खिलजी वंश का संस्थापक) का भतीजा था। वह 1296 ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नीति : उसकी बाजार व्यवस्था अद्वितीय प्रकार की थी। उसने योग्य, कुशल तथा ईमानदार बाजार निरीक्षकों की नियुक्ति की। ये लोग अपने अधीक्षक, जिन्हें 'शाहना' कहते थे, के अधीनस्थ रहते हुए बाजार पर नियंत्रण रखते थे। कम तोलने वाले तथा निर्धारित कीमत से ज्यादा वसूलने वाले दुकानदारों को दंड का प्रावधान था। गुप्तचर विभाग बाजार में बेची जाने वाली वस्तुओं के भावों और गुणवत्ता पर विशेष नजर रखता था। सुल्तान को बाजार के विषय में रोज सूचना दी जाती थी। बाजारों पर नियंत्रण रखने के लिए सरकारी गोदामों में वस्तुओं का भंडारण किया जाता था। बाजारों में सूखे के समय गोदामों से अनाज की पूर्ति की जाती थी। वह पहला सुल्तान था, जिसने सार्वजनिक वितरण प्रणाली शुरू की।

(iv) **विजय नगर साम्राज्य में स्थापत्य कला :** विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने हम्पी में विट्ठलस्वामी मंदिर, हजारा मंदिर तथा विरूपाक्ष मंदिर का निर्माण कराया। इन मंदिरों की दीवारों पर सुंदर कलाकृतियों को उत्कीर्ण कराया गया है।

विजयनगर साम्राज्य में साहित्य : यहाँ के शासक साहित्य के महान पुजारी थे और उन्होंने तमिल, तेलुगु और कन्नड़ जैसी दक्षिण भारतीय भाषाओं तथा संस्कृत के प्रयाग पर बल दिया। कृष्ण देव राय स्वयं तेलुगु और संस्कृत का प्रकांड पंडित था। उसने तेलुगु भाषा में अमुक्तमाल्यादा नामक ग्रंथ की रचना की। उसके दरबार में माधव विदारक तथा सायन नाम के दो प्रसिद्ध कवि आश्रय पाए हुए थे। अलसानी उसके समय का तेलुगु भाषा का प्रसिद्ध कवि था।

(v) गियासुद्दीन बलबन, नासिरूद्दीन महमूद का सलाहकार था। वह नासिरूद्दीन वंश (गुलाम वंश) का सबसे महान सुल्तान माना जाता है। वह एक योग्य तथा अनुभवी शासक था। उसने अपने शासनकाल में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए थे। उसने दिल्ली को सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुलिस चौकियाँ स्थापित कीं। उसने दो ईरानी रिवाजों 'पायबोस' और 'सिजदा' को लागू किया। वह हमेशा न्याय के पक्ष में रहता था।

(vi) संपूर्ण बहमनी राज्य तरफों (प्रांतों) में विभाजित था और प्रत्येक तरफ, तरफदार या अमीर से शासित होता था। केंद्रीय सरकार का मुखिया वजीर (प्रधानमंत्री) कहलाता था। वजीर-ए-अशरफ (विदेशी मामलों का मंत्री), अमीर जुमला (वित्त मंत्री), तथा सदर-ए-जहाँ (धर्म और न्याय के मामलों का मंत्री) दूसरे अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे।

(viii) दक्कन के मुस्लिम शासकों, जिनमें अहमदनगर, गोलकुंडा और बीजापुर सम्मिलित थे, ने गोलकुंडा के शासक इब्राहिम कुतुबशाह के नेतृत्व में एक संघ बनाया, जिसने विजयनगर के हिंदू शासक से कृष्णा नदी के तट पर स्थित तालीकोटा नामक स्थान पर 1565 ई. में युद्ध किया। विजयनगर साम्राज्य की सेनाओं का सेनापतित्व रामराजा ने किया। वह पराजित हुआ तथा मारा गया। विजयी

मुसलिम सेनाओं ने विजयनगर में आग लगा दी और इस प्रकार इस वंश का अंत हो गया।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) गुलाम वंश की संस्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी। वह स्थापत्य कला में बहुत रूचि लेता था । उसने दिल्ली स्थित महरौली में कुतुबुद्दीन संत की यादगार में कुतुबमीनार का निर्माण शुरू कराया, जिसकी ऊँचाई 238 फीट है। उसने दिल्ली में कुव्वतुल-इस्लाम मसजिद तथा अजमेर (राजस्थान) में अढ़ाई दिन का झोंपड़ा नामक इमारतें भी बनवाईं।

(ii) **मुहम्मद बिना तुगलक की योजनाए :**

(1) राजधानी परिवर्तन : दक्षिणी राज्यों के प्रशासनिक नियंत्रण के लिए उसने 1327 ई. में अपनी राजधानी दिल्ली से दक्षिणी नगर देवगिरि (दौलताबाद) स्थानानंतरित कर ली परंतु वह इससे संतुष्ट नहीं हो सका और उसने इसे पुनः देवगिरी से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया।

(2) दोआब में राजस्व और कर वृद्धि : राज्य की आय में वृद्धि करने के लिए उसने गंगा और यमुना के बीच (दोआब) में कृषकों की उपजाऊ जमीन पर कर बढ़ा दिए। जिस समय करों में वृद्धि की गई, उस समय वहाँ किसान सूखे का सामना कर रहे थे। परंतु सुल्तान के अफसरों ने इस दयनीय अवस्था में भी किसानों से बलपूर्वक कर वसूली जारी रखी। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि किसानअ पनेघ रोंअ ैरख ोतोंक ेछ ेड़करज ंगलोंक ीअ ोरभ ाग निकले और विद्रोह पर उतर आए।

(3) सांकेतिक मुद्रा का चलाना :म ुहम्मद ि बनत ुगलकव े समय दिल्ली सल्तनत की मुद्रा चाँदी के सिक्के थे। उधर उस समय दुनियाभर में चाँदी के उत्पादन में बहुत कमी आ रही थी। इस कमी को पूरा करने के लिए सुल्तान ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर

समान मूल्य के ताँबे के सिक्कों को जारी करने का हुक्म दिया। इन सिक्कों पर सुलतान की मोहर भी नहीं लगी होती थी। जनता ने इसका नाजायज फायदा उठाया तथा अपने घरों में ताँबे के सिक्के ढालने लगी। यह जाली मुद्रा थी, जिससे बाजार पट गया, परंतु विदेशी व्यापारियों ने इसे लेने से मना कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि देश से चाँदी बड़ी मात्रा में विदेशों में पहुँच गई और राज्य कोषागार में जाली मुद्रा इकट्ठी हो गई।

(iii) विजयनगरस ाम्राज्यद क्षिणभ ारतम ेंि स्थतथ ा,ि जसकीस् थापना हरिहर और बुक्का ने 1336 ई. में की थी। वे दोनों सगे भाई थे। उन्होंने दिल्ली सल्तनत की कमजोरी को बड़े नजदीक से देखा और मैसूर के समीप स्थित आधुनिक कर्नाटक में होयसल प्रांत को जीतकर स्वयं को 1336 ई. में विजयनगर का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। उन्होंने हस्तिनावती (हम्पी) को अपनी राजधानी बनाया। विजयनगर साम्राज्य पर लगभग 230 वर्षों तक तीन वंशों (संगम वंश, सलुव वंश, तुलुव वंश) ने शासन किया। कृष्णदेव राय तुलुव वंश का सबसे प्रतापी, वीर, साहसी और विद्वान शासक था। उसने 1505 ई. से 1529 ई. तक विजयनगर पर शासन किया था। उसके शासनकाल में विजयनगर विकास और समृद्धि के चरम पर पहुँच गया था। उसके दरबार में अनेक विद्वान रहा करते थे। तेनालीराम उन विद्वानों में से एक था।

(iv) **लोदी वंश :** अफगान सरदार बहलोल लोदी ने दिल्ली में 1451 ई. में लोदी वंश की नींव रखी। लोदी वंश के शासकों का वर्णन निम्नलिखित है–

सिकन्दर लोदी : बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद उसका बेटा सिकंदर लोदी 1489 ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने बिहार और पश्चिम बंगाल को जीता तथा अपनी राजधानी दिल्ली से आगरा स्थानांतरित कर दी। उसने आगरा नगर की स्थापना की।

उसकी मृत्यु बीमारी से हुई तथा उसे दिल्ली में दफना दिया गया। उसका मकबरा नई दिल्ली में लोदी बाग में स्थित है।

इब्राहिमल ोदी: सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद उसका पुत्र इब्राहिम लोदी 1517 ई. में दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ। वह तुनक मिजाज और अत्याचारी प्रकृति वाला सुल्तान था। वह अमीरों से नाराज रहता था। कुछ अमीरों ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। स्वयं को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया था। 1526 ई. में पानीपत (हरियाणा) के मैदान में बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इब्राहिम लोदी मारा गया और बाबर दिल्ली का सुलतान बन बैठा।

(v) महमूद गवाँ का जन्म ईरान में हुआ था तथा दक्षिण भारत में उसने स्वयं को स्थापित कर लिया था। शुरू में वह बहमनी सुल्तान के दरबार में एक कर्मचारी के रूप में नियुक्त हुआ था और अपनी बुद्धि के आधार पर कुछ ही दिनों में उसे राज्य का वजीर या प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया गया। वह हिंदू विरोधी था, इसलिए उसने हिंदुओं के विरुद्ध एक अभियान छेड़ दिया। उसने कोंकण, बीसलगढ़ तथा उड़ीसा के राजाओं को पराजित किया। वह उर्दू का अच्छा ज्ञाता था। शिक्षा के विकास के लिए उसने बीदर में प्रसिद्ध मदरसे और महाविद्यालय की स्थापना कराई। उसकी हत्या मुहम्मद तृतीय ने कर दी।

(vi) **विजय नगर साम्राज्य के शासकों द्वारा बनवाए गए मंदिरों के नाम तथा स्थान :** विजय नगर साम्राज्य के शासकों ने हम्पी में विट्ठलस्वामी मंदिर, हजारा मंदिर तथा विरूपाक्ष मंदिर का निर्माण कराया।

गुलामवंश के शासकों द्वारा निर्मित ऐतिहासिक इमारतों के नाम एवं स्थान :

ऐतिहासिक इमारतें	स्थान
कुतुबमीनार	दिल्ली
कुव्वतुत-इस्लाम मसजिद	दिल्ली
अढ़ाई दिन का झोंपड़ा	अजमेर (राजस्थान)

4. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए :

(i) **शाहना :** अलाउद्दीन खिलजी की बाजार व्यवस्था अद्वितीय प्रकार की थी। उसने योग्य, कुशल तथा ईमानदार बाजार निरीक्षकों की नियुक्ति की। ये लोग अपने अधीक्षक के अधीनस्थ रहते हुए बाजार पर नियंत्रण रखते थे। इन अधीक्षकों को 'शाहना' कहते थे।

(ii) **चालीसा:** 40 तुर्की अमीरों का एक दल, जिसे इल्तुतमिश ने बनाया था।

(iii) **उलेमा :** इस्लाम के विद्वान उलेमा कहलाते हैं।

(iv) **सांकेतिक मुद्रा :** मुहम्मद बिना तुगलक ने चाँदी के उत्पादन में कमी आने के कारण चाँदी के सिक्कों के स्थान पर समान मूल्य के ताँबे के सिक्कों को जारी करने का हुक्म दिया। यही सांकेतिक मुद्रा थी।

(v) **इक्ता :** इल्तुतमिश ने पूर्ण साम्राज्य को छोटे-छोटे भागों में विभक्त किया, जिन्हें 'इक्ता' कहते थे।

5 मुगल और उनका साम्राज्य

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) बाबर (ii) (b) 1526 - 1712 ई.

(iii) (a) 1539 ई. (iv) (c) गुलबदन बानो बेगम

(v) (a) मोहम्मद लोहानी (vi) (a) मेवाड़

(vii) (a) शेरशाह सूरी (viii) (a) अकबर

(ix) (a) अकबर (x) (a) बहादुरशाह जफर

(xi) (a) अकबर का संरक्षक (xii) (a) चित्रकार

(xiii) (c) फतेहपुर सीकरी (xiv) (b) सिकन्दरा

(xv) (d) राणा उदयसिंह

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
पानीपत का प्रथम युद्ध	1526 ई.
पानीपत का द्वितीय युद्ध	1556 ई.
हल्दीघाटी का युद्ध	1576 ई.
चन्देरी का द्वितीय युद्ध	1528 ई.
कन्नौज का द्वितीय युद्ध	1540 ई.
चौसा का द्वितीय युद्ध	1539 ई.

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) राणा साँगा (ii) हुमायूँ (iii) रूपिया

(iv) सुलहकुल (v) 1608 (vi) शहजादा खुर्रम

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मुगल वंश की स्थापना अफगानी तुर्क बाबर ने सन् 1526 ई. में की थी।

(ii) शेरशाह सूरी ने।

(iii) चौसा का युद्ध तथा कन्नौज का युद्ध।

(iv) पानीपत का प्रथम युद्ध 1526 ई. में और द्वितीय युद्ध 1556 ई. में लड़े गए।

(v) टोडरमल।

(vi) रूपिया।

(vii) 'हुमायूँनामा' गुलबदन बेमन ने तथा 'अकबरनामा' अबुल फजल ने लिखी।

(viii) किसान सरकार को लिखित में भूमि रिकॉर्ड उपलब्ध कराते थे। यह कबूलियत कहलाता था।

(ix) राजस्थान के मेवाड़ राज्य के राजपूत राजा राणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

(x) ताजमहल, लालकिला, जामा मसजिद, मसजिद-ए-जहाँनामा (मोती मसजिद)।

(xi) ईरान का शासक नादिरशाह।

(xii) चाँद बीबी तथा रानी दुर्गावती।

(xiii) अकबर द्वारा प्रतिपादित नया धर्म या ईश्वर का धर्म दीन-ए-इलाही था।

(xiv) दाराशिकोह शाहजहाँ का पुत्र था।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) शेरशाह सूरी का बचपन का नाम फरीद था। उसके पिता सासाराम (बिहार) के जागीरदार थे। वह अफगान का एक शक्तिशाली शासक था।

शेरशाह सूरी के प्रजा की भलाई के कार्य :

(1) उसने पूरे राज्य में निश्चित मानक के वजन वाले सिक्के चलाए, जिन्हें रूपिया कहा जाता था।

(2) उसने पेशावर से कोलकाता तक ग्रांड ट्रंक रोड (जी.टी. रोड) का निर्माण कराया। इसके अतिरिक्त उसने अनेक राजमार्गों का निर्माण भी कराया, जिसने उसके शासनकाल में संचार और व्यापार को चरम पर पहुँचाया।

(3) उसने शिक्षा के विकास के लिए राज्य में मदरसों और मकतबों को स्थापित कराया।

(4) उसने सड़कों के दोनों किनारों पर वृक्ष लगवाए ताकि यात्रियों को फल, छाया और आराम करने के लिए शरणस्थल मिल सकें।

(5) उसने दिल्ली के नजदीक शेरपुर नगर की स्थापना की।

(ii) **पानीपत का द्वितीय युद्ध :** पानीपत के मैदान में 1556 ई. में अकबर के संरक्षक बैरम खाँ और आदिलशाह के हिंदू सेनापति हेमू के बीच एक घमासान युद्ध लड़ा गया। बैरम खाँ ने हेमू की आँख के बीच से तीर निकाल दिया तथा उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। इस युद्ध को भारतीय इतिहास में पानीपत के द्वितीय युद्ध के नाम से जानते हैं। इस युद्ध के बाद अकबर मुगल वंश का प्रसिद्ध शासक बन गया।

(iii) हल्दीघाटी का युद्ध अकबर के सेनापति मानसिंह और मेवाड़ के शासक राणा प्रताप के बीच 1576 ई. में हल्दीघाटी के मैदान में हुआ था। भारतीय इतिहास में यह हल्दीघाटी के युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में राणा प्रताप को मुगल सेना ने हरा दिया था। वह भागकर जंगलों में जा छिपा, जहाँ से उसने युद्ध को जारी रखा था। उसने जीवनभर अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

(iv) अबुल फजल, फैजी, मिर्जा अजीज कोका, टोडरमल, अब्दुर्रहीम, खान-ए-खाना, राजा मानसिंह, राजा बीरबल, राजा भगवानदास तथा तानसेन अकबर के दरबार में नौ रत्न थे।

(v) जहाँगीर के समय कई यूरोपीय यात्री भारतीय व्यापार की कीमती वस्तुओं की ओर आकर्षित हुए। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक प्रतिनिधि, विलियम हॉकिन्स जहाँगीर के समय 1608 ई. में भारत आया और वह तीन वर्ष तक जहाँगीर के शासन क्षेत्र में ठहरा। उसके बाद 1615 ई. में दूसरा ब्रिटिश नागरिक सर टॉमस रो भारत में राजदूत बनकर आया। दोनों ने जहाँगीर से भारत में व्यापार करने

की अनुमति माँगी।

उसके शासनकाल में पुर्तगालियों ने भी भारत के साथ व्यापार करने की अनुमति माँगी थी। पुर्तगाल और भारत के बीच विदेश व्यापार करने का मुख्य कारण पुर्तगाल की मजबूत और उपकरणों से सुसज्जित नौसेना थी।

(vi) औरंगजेब कट्टर सुन्नी मुगल बादशाह था, उसे जिन्दा पीर या जीवित संत के नाम से पुकारा जाता था। वह हिंदुओं का कट्टर दुश्मन था, इसीलिए उसने उनके मंदिरों को नष्ट-भ्रष्ट करा दिया और मसजिदों में परिवर्तित करा दिया। उसने हिंदुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाया। उसने गैर-हिंदुओं पर जजिया तथा मुसलमानों पर जकात नाम के कर लगाए। उसने केवल मुसलमानों को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुक्त किया, जिससे उसकी धार्मिक भेदभाव की प्रकृति का पता चलता है। औरंगजेब ने हिंदुओं को अपने त्योहार मनाने की अनुमति नहीं दी तथा दीवाली के अवसर पर बाजारों में प्रकाश करने पर रोक लगा दी। उसके शासनकाल में मूर्तिपूजा और धर्म यात्राओं पर पूर्णतया रोक लगा दी गई थी।

(vii) औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया। उसके पतन के निम्नलिखित कारण थे–

(1) मराठा जैसे स्वतंत्र राज्यों का उदय होना।

(2) औरंगजेब की धार्मिक तथा दक्कन नीति।

(3) अमीरों और राजाओं की वैभवपूर्ण तथा खर्चीली आदतें।

(4) औरंगजेब की शिक्षा विरोधी नीति।

(5) अत्यधिक विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण न रख सकना।

(6) अमीरों द्वारा सर्वाधिक लाभकारी जागीरों को विजित करने की लालसा।

(7) किसानों और जमीदारों का असंतुष्ट होना।

(8) मुगल वंश के कमजोर और सुस्त उत्तराधिकारी।

(9) 1739 ई. में नादिरशाह का आक्रमण।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **अकबर की मनसबदारी प्रथा :** अकबर ने इस तथ्य को भली प्रकार जान लिया था कि एक शक्तिशाली सेना के बिना साम्राज्य विस्तार की बात करना व्यर्थ होगा। इसके लिए उसे सैनिकों और सैन्य अधिकारियों को संगठित करना पड़ा। उसने इस कार्य को संपन्न करने के लिए नई सैन्य व्यवस्था, जिसे मनसबदारी प्रथा कहते थे, को लागू किया। मनसबदार मुगल सेना में एक ओहदा या अधिकारी का पद होता था। मनसबदार को सेना में सैनिकों, हाथियों, घोड़ों, गाड़ियों और ऊँटों को एक निश्चित संख्या का प्रबंध सँभालना होता था। पूरी मुगल सेना में हजारों की संख्या में मनसबदार थे। उन्हें सरकारी अधिकारी या नौकरशाही के नाम से जाना जाता था। मनसबदारों को नकद वेतन दिया जाता था। उन्हें गैर-सैनिक कर्त्तव्यों का निर्वहन भी करना पड़ता था। किसी मनसबदार की मृत्यु होने पर बादशाह उसकी जागीर को जब्त कर लेता था। मनसबदारों की 10 से 10,000 तक 33 श्रेणियाँ थीं।

(ii) नूरजहाँ जहाँगीर की पत्नी थी। उसका असली नाम मेहरून्निसा था। वह न केवल अति सुंदर थी बल्कि एक बुद्धिमान बेगम भी थी। उसका पति जहाँगीर शराबी था और एक कामुक जीवन जीने का आदी था। उसने अपना सारा जीवन शराब और शबाब में नष्ट कर दिया था। इस कारण नूरजहाँ अपने पति के नाम से मुगल साम्राज्य पर शासन करने लगी। वह अपने पति जहाँगीर को राज्य के महत्त्वपूर्ण विषयों पर सलाह-मशविरा दिया करती थी। वह सुंदरता, बुद्धिअ ारस ाहसक ापत्रिमूर्तिथ ी।व हअ पनेप तिज हाँगीरव े साथ शिकार पर जाया करती थी तथा उसने कई शेरों को मार गिराया था। युद्ध क्षेत्र में भी वह जहाँगीर का साथ दिया करती थी। नूरजहाँ को कला और साहित्य में भी गहरी रूचि थी। इन्हीं कारणों

से नूरजहाँ प्रसिद्ध थी।

(iii) अकबर ने अपने संपूर्ण साम्राज्य को केंद्र, प्रांतों, परगनों तथा गाँवों में बाँट रखा था। केंद्र का मुखिया स्वयं बादशाह होता था। वह रक्षा प्रशासन तथा न्याय के विभागों को स्वयं देखता था। वित्तीय मामलों का प्रधान दीवान था। प्रांत का मुखिया सूबेदार होता था। दीवान-बख्शी और कोतवाल सूबेदार के कार्य में हाथ बँटाते थे। कानून और अपराध विभाग का मुखिया दीवन-बख्शी राज्य के बजट तथा राजस्व का हिसाब-किताब देखता था। कोतवाल शहर के प्रशासन को चलाता था। शिकदार परगने का मुखिया था। उसका मुख्यक ार्यप रगनेम ेंक ानून० यवस्थाब नाएर खनाथ ाा।अ ामिल, कानूनगो और फोतदार को राजस्व इकट्ठा करने के अधिकार दिए गए थे। शिकदार राजस्व और फसलों तथा राजकोष का लेखा-जोखा रखता था।

गाँवों का प्रशासन मुकद्दय या प्रधान चलाता था, जो ग्राम स्तर पर कानून और व्यवस्था को बनाए रखता था। पटवारी राजस्व का लेखा-जोखार खताथ ाात थाच ौकीदारग ाँवक ोस ुरक्षाक ाप्रबंध करता था।

(iv) **शाहजहाँ के शासनकाल की स्थापत्य कला :** शाहजहाँ को इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। उसने आगरा में यमुना किनारे विश्वप्रसिद्ध प्रेम की प्रतीक आलीशान इमारत ताजमहल का निर्माण अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में कराया। ताजमहल को बनने में 20 वर्ष का समय लगा तथा 3 करोड़ रूपए लगे। दिल्ली में उसने लाल किला तथा जामा मसजिद का निर्माण कराया। उसकी इमारतें लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर की बनी हैं। शाहजहाँ ने अपनी इमारतों में मुसलिम तथा हिंदू स्थापत्य शैलियों का प्रयोग कराया था।

इसके अतिरिक्त उसने आगरा में मसजिद-ए-जहाँनामा (मोती

मसजिद) तथा हीरे-जवाहरातों से जड़ा हुआ मयूर सिंहासन (तख्ते-ताऊस) भी बनवाया। विश्व प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर इसी सिंहासन में जड़ा था।

शाहजहाँ के शासनकाल में कला : शाहजहाँ चित्रकला में भी रूचि लेता था। वह स्वयं एक कुशल चित्रकार था। मुहम्मद कादिर, समरकन्दी, मीर हसन तथा चिन्तामणि उसके दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार थे।

शाहजहाँ के शासनकाल में साहित्य : शाहजहाँ के शासनकाल में फारसी, संस्कृत और हिंदी में उच्च कोटि के साहित्य की रचना हुई। उसका पुत्र दाराशिकोह संस्कृत का प्रकाण्ड पंडित था। उसके उपनिषदों का अनुवाद फारसी से संस्कृत में किया था। अब्दुल हमीद जौहरी, खफी खाँ आदि इस युग के प्रसिद्ध इतिहासकार थे। साहित्य, कला और स्थापत्य के विकास के कारण शाहजहाँ का काल मुगल शासनकाल का स्वर्ण युग कहा जाता है।

(v) **अकबर की दीन-ए-इलाही धर्म और सुलहकुल नीति :** अकबर ने फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना का निर्माण कराया जो अपनी धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है। इबादतखाने में वह सभी धर्मों के संतों के उपदेशों को सुना करता था। 1582 ई. में उसने एक नया धर्म दीन-ए-इलाही चलाया जो विभिन्न धर्मों; जैसे-हिंदू, जैन, इस्लाम तथा ईसाई धर्मों के सार को लेकर प्रतिपादित किया गया था। यद्यपि यह धर्म लोकप्रिय नहीं हो सकता। कट्टरपंथी मुसलमान इस धर्म से खफा हो गए। दूसरी ओर हिंदुओं ने यह अनुमान लगाया कि बादशाह अकबर नए धर्म की आड़ में उनके धर्म को नष्ट करना चाहता है। अकबर ने शांति के सिद्धातों की नीतिस ुलहकुलक ोभ ील ागूकयात ाकिज नताव ेस हयोगस े विशाल साम्राज्य का प्रशासन बिना किसी अड़चन के चलाया जा सके। उसकी नीति पर सूफी और भक्तिकालीन संतों के उपदेशों

का प्रभाव स्पष्ट से देखा जा सकता है। इस नीति के कारण ही अकबर ने हिंदुओं और पारसियों के त्योहारों, उत्सवों, रीति-रिवाजों कोअ ंगीकारक रनाप्रारंभक र दियाथ ाा।उ सनेग ीता,म हाभारत, अथर्ववेद, बाइबिल, कुरान, पंचतंत्र, सिंहासन बत्तीसी और विज्ञान की अनेक पुस्तकोंक ाप ारसी मेंअ नुवाद कराया ताकिप ारसी बोलने वाले मुसलमान उन्हें समझ सकें।

4. निम्नलिखित का उचित कारण समझाइए :

(ii) बिहार के शासक मोहम्मद लौहानी की नौकरी के दौरान फरीद ने एक शेर को मार गिराया था और इससे प्रसन्न होकर उसके मालिक ने उसे शेर खाँ की उपाधि दे दी।

(iii) अकबर ने हिंदू, पारसी आदि त्योहारों तथा रीति-रिवाजों को मनाना शुरू कर दिया ताकि वह इन धर्मों के लोगों के सहयोग से अपने साम्राज्य के प्रशासन पर नियंत्रण रख सके।

(iv) 1615 ई. में सर टॉमस रो जहाँगीर से भारत में व्यापार की अनुमति माँगने के लिए भारत आया।

6 शासक और उनकी स्थापत्य कला

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) सूर्य मंदिर (उड़ीसा) (ii) (b) सोलंकी वंश के शासकों ने

(iii) (a) महाबलिपुरम मंदिर (iv) (c) 5

(v) (c) हमीदा बानो बेगम (vi) (a) औरंगाबाद

(vii) (b) पेंटिंग

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
आगरा का किला	अकबर
ताजमहल	शाहजहाँ
एतमादुद्दौला का मकबरा	जहाँगीर
रबिया दौरानी का मकबरा	औरंगाबाद
कुतुबमीनार	कुतुबुद्दीन ऐबक
हुमायूँ का मकबरा	हमीदा बानो बेगम

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) शाहजहाँ (ii) शेरशाह सूरी (iii) अकबर

(iv) बाबर (v) शाहजहाँ (vi) अकबर

4. निम्नलिखित का नाम बताइए :

(i) सूर्य मंदिर (ii) राजराजेश्वर मंदिर (iii) कैलाशनाथ मंदिर

(iv) कुतुबमीनार (v) अकबर महान

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) राजराजा प्रथम ने।

(ii) कैलाशनाथ मंदिर, महाबलिपुरम मंदिर।

(iii) मदुरै में।

(iv) उत्तर भारत के मंदिरों का निर्माण नागर शैली में तथा दक्षिण भारत के मंदिरों का निर्माण द्रविड़ शैली में हुआ है।

(v) भक्तगणों के बैठने का कक्ष मण्डप कहलाता है।

(vi) मंदिर के प्रवेश द्वार को गोपुरम कहते हैं।

(vii) कुतुबमीनार कुतुबुद्दीन ऐबक ने 12वीं शताब्दी में बनवाई थी।

(viii) इण्डो-इस्लामिक शैली में।

(ix) दीवारों को कीमती पत्थरों और हीरे-जवाहरातों से सजाने की कला पियेत्रा दुरा कहलाती है।

(x) महाबलिपुरम मंदिर।

(xi) औरंगाबाद।

(xii) जहाँगीर ने।

(xiii) मुमताज महल का मकबरा आगरा में स्थित है और इसका निर्माण शाहजहाँ ने कराया।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) चोल शासकों ने अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में कई मंदिरों का निर्माणक राया।य ेम ंदिरस ांस्कृतिक,श ैक्षणिक,र ाजनीतिकत था सामाजिक गतिविधियों के केंद्र रहे थे। तंजौर के बृहदेश्वर शिव मंदिर का निर्माण राजराजा प्रथम ने कराया था, जो दक्षिण भारत में कला का सबसे बड़ा नमूना है। इसमें एक बहुत बड़ा आँगन तथा विशाल शिखर है। चोलों के मंदिरों का निर्माण द्रविड़ शैली में हुआ है,ि जनमेंग ोपुरम(प्रवेशद ्वार),ग र्भगृह(मुख्यप ूतिमाक क्ष), शिखर (टॉवर) तथा मण्डप (भक्तगणों के बैठने का कक्ष) आदि होते हैं। इनमें विमान सदृश संरचना भी बनी होती थी।

(ii) मुगल सम्राट स्थापत्य और कला के संरक्षक थे। अकबर और शाहजहाँ ने सबसे अधिक ऐतिहासिक इमारतों का निर्माण कराया। उन्होंने सुंदर महल, किले, मकबरे, दरगाहों के अतिरिक्त मसजिदें आदि भी बनवाईं। उन्होंने सुंदर बागों को भी लगवाया। मुगलकाल की अधिकतर इमारतों में गुम्बद, मीनारें तथा मेहराबों का प्रयोग किया गया है। शाहजहाँ को संगमरमर और हीरे-जवाहरात पसंद थे जबकि अकबर और जहाँगीर लाल बलुआ पत्थर को पसंद करते थे। इमारतों की दीवारों को कीमती पत्थरों से सजाया जाता था, जिसे

पियेत्रा-दुरा कहते थे।

(iii) शाहजहाँ ने बड़ी संख्या में ऐतिहासिक इमारतों का निर्माण कराया। शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल व मोती मसजिद तथा दिल्ली में जामा मसजिद, लाल किला, शाहजहानाबाद, दीवाने-खास, दीवाने-आम व लाल किला का निर्माण करवाया। इन्होंने सुंदर बागों को भी लगवाया। ये सभी इमारतें सफेद संगमरमर तथा लाल बलुआ पत्थर से बनी हैं। शाहजहाँ को संगमरमर और हीरे-जवाहरात पसंद थे। ताजमहल के प्रवेश द्वार पर कुरान की आयतों को उकेरा गया है। इमारतों की दीवारों को कीमती पत्थरों से सजाया जाता था। शाहजहाँ ने हीरे-जवाहरातों से जड़ा हुआ मयूर सिंहासन (तख्ते ताऊस) भी बनवाया। विश्व प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर इसी सिंहासन में जड़ा था। इसीलिए भारत के मध्यकालीन इतिहास में उसे इंजीनियर बादशाह के नाम से जाना जाता है।

(iv) 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्थापत्य कला की 'कॉरबेल्ड' या 'ट्रेबीट' शैली का प्रयोग मसजिदों, मकबरों, मंदिरों और अन्य बहुत-सी इमारतों के निर्माण में किया गया, जिसमें छतों, दरवाजों और खिड़कियों का निर्माण दो ऊध्वार्धर स्तंभों के आर-पार शहतीर को क्षैतिज अवस्था में रखकर किया गया। इसके अतिरिक्त स्मारकों और इमारतों से जुड़ी हुई बड़ी सीढ़ियोंदार बावड़ियों (कुओं) का निर्माण भी किया गया था। कॉरबेल्ड शैली का प्रयोग कव्वतुल-इस्लाम मसजिद में स्क्रीन के निर्माण में किया गया है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) चोल शासकों ने अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में कई मंदिरों का निर्माणक राया।य ेम ंदिरस ांस्कृतिक,श ैक्षणिक,र ाजनीतिकत था सामाजिक गतिविधियों के केंद्र रहे थे। तंजौर के बृहदेश्वर शिव मंदिर का निर्माण राजराजा प्रथम ने कराया था, जो दक्षिण भारत में कला का सबसे बड़ा नमूना है। इसमें एक बहुत बड़ा आँगन तथा

विशाल शिखर है। चोलों के मंदिरों का निर्माण द्रविड़ शैली में हुआ है,ि जनमेंग ोपुरम(प्रवेशद ्वार),ग र्भगृह(मुख्यप ंतिमाक क्ष), शिखर (टॉवर) तथा मण्डप (भक्तगणों के बैठने का कक्ष) आदि होते हैं। इनमें विमान सदृश संरचना भी बनी होती थी।

बृहदेश्वर मंदिर की मुख्य वास्तुकला संबंधी विशेषता यह है कि इसका शिखर गर्भगृह के ऊपर स्थित है। यह 50 फीट ऊँचे चौकोर चबूतरे के ऊपर उठता चला गया है तथा 190 फीट ऊँचाई तक आकार में छोटा होता चला गया है, विमान में दो खंड हैं, जिन्हें कुशल शिल्पकारों और कारीगरों द्वारा मूर्तियों से सजाया गया है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण मंदिर, जो चोलों ने बनवाया था, गंगईकोण्डचोलपुरम मंदिर है जो तमिलनाडु में तंजौर से 38 मील की दूरी पर स्थित है। यह भी द्रविड़ शैली में निर्मित है। इसकी विशिष्ट वास्तु शैली इसका 175-95 फीट का महामण्डप है जिसमें साधारण बनावट वाले 150 से ज्यादा खंभे बने हैं।

(ii) दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों के मसजिदों, मकबरों, सरायों, दरवाजों, मीनारों, किलों आदि इमारतों के निर्माण में खासी दिलचस्पी दिखाई थी। दिल्ली सल्तनत के सुल्तान तुर्क और अफगान थे, इसीलिए उन्होंने इण्डो-इस्लामिक शैली को अपनी स्थापत्य कला में अपनाया। उनकी सभी इमारतों में मेहराब, मीनार तथा गुम्बद अवश्य बनाए गए थे। कुछ इमारतों में कुरान की आयतों को भी लिखा गया है। उनके द्वारा बनी सभी मसजिदों की यह विशेषता है कि उनके प्रवेश द्वार मक्का की ओर मुँह किए हुए बनाए गए थे। कुतुबुद्दीन ऐबक ने नई दिल्ली में कुतुबमीनार का निर्माण शुरू कराया था। इसमें 5 मंजिलें हैं।

12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्थापत्य कला की 'कॉरबेल्ड' या 'ट्रेबीट' शैली का प्रयोग मसजिदों, मकबरों, मंदिरों और अन्य बहुत-सी इमारतों के निर्माण में किया गया, जिसमें छतों, दरवाजों

और खिड़कियों का निर्माण दो ऊध्वार्धर स्तंभों के आर-पार शहतीर को क्षैतिज अवस्था में रखकर किया गया। इसके अतिरिक्त स्मारकों और इमारतों से जुड़ी हुई बड़ी सीढ़ियोंदार बावड़ियों (कुओं) का निर्माण भी किया गया था। कॉरबेल्ड शैली का प्रयोग कव्वतुल-इस्लाम मसजिद में स्क्रीन के निर्माण में किया गया है।

मूलम ेहराबक ोअ लाउद्दीनि खलजीद्व ारा दल्लीम ेंब नाएग ए अलाई दरवाजे में देखा जा सकता है। मेहराब के केंद्र में लगा मुख्य पत्थर धरातल पर बनी इमारत (सुपर संरचना) का बोझ वहन करता है तथा यह मेहराब का आधार भी बनता है। स्थापत्य कला का यह रूप आर्कुएट कहलाता है। इसके अतिरिक्त दिल्ली में बने सिकन्दर लोदीअ ौरि गयासुद्दीनव ेम कबरे,स ोरीप ोर्ट,त ुगलकाबादक ा किला, हजारखंभा महल तथा फिरोजशाह कोटला, जौनपुर की अटाला मसजिद आदि दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों द्वारा बनवाई मुख्य इमारतों में हैं।

(iii) शाहजहाँ को इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था। उसने आगरा में यमुना किनारे विश्वप्रसिद्ध प्रेम की प्रतीक आलीशान इमारत ताजमहल का निर्माण अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में कराया। ताजमहल को बनने में 20 वर्ष का समय लगा तथा 3 करोड़ रूपए लगे। दिल्ली में उसने लाल किला तथा जामा मसजिद का निर्माण कराया। उसकी इमारतें लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर की बनी हैं। शाहजहाँ ने अपनी इमारतों में मुसलिम तथा हिंदू स्थापत्य शैलियों का प्रयोग कराया था।

इसके अतिरिक्त उसने आगरा में मसजिद-ए-जहाँनामा (मोती मसजिद) तथा हीरे-जवाहरातों से जड़ा हुआ मयूर सिंहासन (तख्ते-ताऊस) भी बनवाया। विश्व प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर इसी सिंहासन में जड़ा था।

4. निम्नलिखित को समझाइए :

(i) **मूर्ति :** किसी भी देवी-देवता की मिट्टी द्वारा बनी प्रतिमा को मूर्ति कहा जाता है।

(ii) **मण्डल :** भक्तगणों के बैठने का कक्ष मण्डप कहलाता है।

(iii) **गर्भगृह :** चोलों के मंदिरों में मुख्य प्रतिमा कक्ष को गर्भगृह कहा जाता था।

7 नगर, व्यापारी और शिल्पकार

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) हम्पी (ii) (b) ताप्ती

(iii) (a) विजयनगर (iv) (b) व्यापारी

(v) (a) सरकारी दस्तावेज (vi) (b) विदेशी यात्री

(vii) (b) प्रशासनिक केंद्र (viii) (a) अजमेर

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) सत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
तंजावुर	राजधानी नगर
मदुरै	तीर्थ स्थान
मसूलीपत्तनम	व्यापार केंद्र
सूरत	पत्तन शहर
फैक्टर	ईस्ट इण्डिया कम्पनी का सरकारी व्यापारी

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) चोल शासकों (ii) रख-रखाव (iii) अजमेर

(iv) हम्पी (v) ताप्ती

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) विदेशी यात्रियों द्वारा दिए गए विवरण तथा उनके द्वारा खींचे गए मानचित्र, भू-रापजस्व पर जारी किए गए सरकारी दस्तावेज या फरमान।

(ii) तीर्थस्थल मंदिर नगर के नाम से जाने जाते थे।

(iii) विभिन्न प्रकार के व्यापारों और व्यवसायों से जुड़े नगर, जहाँ वस्तुएँ खरीदी व बेची जाती थीं, व्यापारिक केंद्र कहलाते थे।

(iv) धार्मिक महत्त्व के स्थान तीर्थस्थल थे।

(v) मसुलीपत्तनम।

(vi) ताप्ती नदी।

(viii) व्यापारियों की सुरक्षा हेतु लोगों का समूह, गिल्ड कहलाते थे।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) शासक, व्यापारी, पुजारी और शिल्पकार अपने क्षेत्रों से संबंधित कार्यों में विशेष स्थानों में कार्यरत थे। ये ही स्थान शहरों और कस्बों में परिवर्तित हो गए। शासकों के रहने के शहर राजधानी शहरों या प्रशासनिक केंद्रों के, व्यापारियों के वाणिज्य केंद्र व्यापारिक नगर के तथा मंदिरों के शहर धार्मिक नगरों के नाम से जाने गए। धार्मिक गतिविधियों के केंद्र तीर्थस्थलों के रूप में स्थापित हो गए।

(ii) प्राचीन समय से धार्मिक महत्त्व के कुछ नगर तीर्थ स्थल रहे हैं। उदाहरण के लिए, काशी (वाराणसी), प्रयाग (इलाहाबाद), वृंदावन व मथुरा (उत्तर प्रदेश), उज्जैन (मध्य प्रदेश), हरिद्वार,

ऋषिकेश, बदरीनाथ, केदारनाथ (उत्तराखंड), विरूवन्नामलाई (तमिलनाडु), अजमेर (ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह; राजस्थान) आदि मध्यकाल मे धार्मिक महत्त्व के नगर रहे थे। इन नगरों में विश्व के कोने-कोने से लोग यहाँ स्थित मंदिरों और दरगाहों के दर्शन करने के लिए आते थे।

(iii) मध्यकालीन शासकों ने ईश्वर के अतिरिक्त अनेक देवी-देवताओं के प्रति अपनी भक्ति दिखाने के लिए कुछ मंदिरों का निर्माण भी कराया। व्यापारी और शासक मंदिरों की स्थापना के लिए बड़ी मात्रा में धन दान दिया करते थे। इसके अलावा शासक मंदिरों का खर्च चलाने और उनके रख-रखाव के लिए बड़ी मात्रा में भूमि दान में देते थे, जिनसे प्राप्त होने वाले राजस्व से मंदिरों का खर्च वहन किया जाता था।

मंदिर का न्यास (ट्रस्ट) व्यापारियों और साहूकारों को धन उधार दिया करता था, जिसके ब्याज से न्यास को आय होती थी। इसीलिए पुजारी, कलाकार, कर्मचारी, व्यापारी, श्रमिक आदि मंदिरों के पास रहने लगे और इस तरह से मंदिर नगरों की स्थापना हुई। इन मंदिर नगरों में प्रमुख नगर सोमनाथ (गुजरात), कांची (कैलाश मंदिर), मदुरै (मीनाक्षी मंदिर), तंजौर (बृहदेश्वर शिव मंदिर, तमिलनाडु), विदिशा (मध्य प्रदेश) तथा तिरूपति (आंध्र प्रदेश) हैं।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) सूरत शहर गुजरात में ताप्ती नदी के किनारे पर स्थित है। मध्यकाल में यह नगर एक प्रसिद्ध व्यस्ततम बंदरगाह रहा था। यह पश्चिम एशिया के साथ व्यापार का द्वार कहा जाता था। बहुत-से मुसलमान तीर्थयात्री इस बंदरगाह से हज करने के लिए मक्का जाते थे। इस शहर में सभी जातियों, धर्मों और समुदायों के लोग शांतिपूर्वक रहते थे। अनेक यूरोपवासियों; जैसे–अंग्रेजों, डचों और पुर्तगालियों ने सूरत में अपनी कोठियाँ, फैक्ट्रियाँ तथा गोदाम

स्थापित कर लिए थे, जिससे कि वे वहाँ से सूती वस्त्रों, मसालों और अन्य दूसरी वस्तुओं का व्यापार कर सकें। महाजनों ने सूरत में विदेशी मुद्रा को बदलने के लिए बड़े-बड़े बैंकिंग प्रतिष्ठान स्थापित कर लिए थे।

मुगलकाल में सूरत व्यापार और वस्त्र निर्माण में अत्यधिक समृद्ध हो गया था। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही सूरत का पतन भी प्रारंभ हो गया था।

(ii) मसुलीपत्तनम शहर कृष्णा बेसिन तथा आंध्र के तट (कोरोमण्डल तट) पर स्थित मत्स्य बंदरगाह है। 17वीं शताब्दी में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी और अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इस पर अपना अधिकार जमाने के लिए प्रयास किया। व्यापार की मुख्य वस्तु मछली थी, इसीलिए इस शहर का नाम मछलीपत्तनम पड़ा। गोलकुण्डा के कुतुबशाही शासकों ने अपने शाही एकाधिकार के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर मछलीपत्तनम के साथ कपड़ा, मसालों जैसी वस्तुओं के व्यापार पर रोक लगाने का प्रयास किया। ईस्टइ ण्डियाक म्पनीव ेए कप ैक्टर,ि वलियमम ेथवल्डन ेइ स शहर को इसकी घनी आबादी, बाह्य बसावट तथा टूटी-फूटी इमारतों (मकानों) के कारण गरीब मछुआरों का शहर कहकर पुकारा था, परंतु बाद में गोलकुण्डा के अमीरों, ईरानी व्यापारियों, तेलुगु कोमाती, चेट्टियों, डचों, अंग्रेजों तथा पुर्तगालियों ने इसकी जनसंख्या को और बढ़ाया तथा इसे आंतरिक व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण एक संपन्न और समृद्ध शहर में तब्दील कर दिया।

मुगल सम्राट औरंगजेब के कारण यहाँ के व्यापारी इस नगर को छोड़कर बंबई, मद्रास और कलकता चले गए और इस तरह से मछलीपत्तनम की संपन्नता सदा के लिए समाप्त हो गई।

(iii) मध्यकाल में व्यापारी और व्यवसायी, राजा और प्रजा की जरूरत की चीजों की पूर्ति किया करते थे। दालें, सब्जियाँ, अनाज,

शिल्पकला की वस्तुएँ मण्डापिका (मंडी) में बेची और खरीदी जाती थीं। मण्डी बड़े गाँवों में स्थित होती थी तथा छोटे गाँवों के निवासी अपनी उत्पादित वस्तुओं को यहाँ बेचने के लिए लाते थे। क्रय-विक्रय के ये स्थान व्यापारिक केंद्र कहलाते थे। गुड़ बेचने वाले, कुम्हार, बढ़ई, लकड़ी पर नक्काशी करने वाले, लुहार, सुनार, ताड़ी बनाने वाले, तेली, पत्थर काटने वाले आदि कारीगर इन व्यापारिक केंद्रों की गलियों में रहता करते थे। ये लोग व्यापारियों के लिए काम किया करते थे। बहुत-से व्यापारी, जो दूरस्थ स्थानों से यहाँ आते थे, नमक, घोड़े, केसर, सुपारी, मसाले, रेशम और कपूर आदि वस्तुओं को बेचते थे। व्यापार के विकास में सड़क मार्गों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। अनेक व्यापारिक नगरों को अनेक सड़क मार्गों से जोड़ा गया था। इन सड़क मार्गों पर व्यापारियों और व्यवसायियों के ठहरने और खाने के लिए सरायों का निर्माण कराया गया था। गुजरात में सूरत, महाराष्ट्र में मुंबई तथा बंगाल में कासिम बाजार को कपास केंद्र के लिए जाना जाता था। अंग्रेजों ने सूरत में प्रथम सूती मिल की स्थापना की। इसके अलावा मद्रास (चेन्नई), पांडिचेरी (पुडुचेरी), कलकत्ता (कोलकाता) तथा मछलीपत्तनम इसी प्रकार के नगर थे। कुछ नगर कुछ विशेष प्रकार की चीजों के लिए प्रसिद्ध थे।

व्यापारियों ने अपनी सुरक्षा के लिए समितियों (गिल्डों) का विकास कर लिया था।

4. कारण स्पष्ट कीजिए :

(i) व्यापारियों और व्यवसायियों के ठहरने और खाने के लिए व्यापारिक मार्गों पर सरायों का निर्माण कराया गया था।

(ii) व्यापारियों ने अपनी सुरक्षा के लिए गिल्ड का विकास किया था।

(iii) यूरोपवासियों ने सूरत में अपनी फैक्ट्रियाँ और गोदाम स्थापित किए थे ताकि वे वहाँ से सूती वस्त्रों, मसालों और अन्य दूसरी वस्तुओं का व्यापार कर सकें।

(iv) मसुलीपत्तनम की घनी आबादी, बाह्य बसावट और टूटी-फूटी इमारतों (मकानों) के कारण अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फैक्टर विलियम मेथवल्ड ने मसूलीपत्तनम को एक गरीब मछली नगर कहा था।

8 जनजातियाँ, खानाबदोश तथा स्थायी मसुदाय

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) चार (ii) (a) पंजाब में

(iii) (b) चेरों पर (iv) (c) मनोरंजन करने वाले

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) जनजातियाँ (ii) सेनापति (iii) संथाल

(iv) बंजारा (v) झूम खेती

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

'अ'	'ब'
खोखर	पंजाब
गद्दी	पश्चिमी हिमालय
नागा	उत्तर-पूर्वी भारत
मुण्डा	उड़ीसा
कोली	गुजरात
गोंड	मध्य प्रदेश

5. नाम बताइए :

(i) जनजातियाँ (ii) खोखर

(iii) अकबर का सेनापति मानसिंह (iv) बंजारा

(v) राजकुमरी दुर्गावती

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) वह समूह जो ब्राह्मणों के बनाए गए नियमों, कानूनों और रीति-रिवाजों को कबूल नहीं करता, उन्हें जनजाति कहते हैं।

(ii) खोखर, गख्खर, गद्दी, नाग, अहोम, मुण्डा, संथाल, बेराड, काली, कोराग, मारावार, वेतार, भील, गोंड, बंजारा आदि।

(iii) जनजातियाँ पूरे उपमहाद्वीप में निवास करती थीं।

(iv) खोखर और गख्खर पंजाब की जनजातियाँ हैं।

(v) मध्य भारत।

(vi) गोंड एक जनजाति थी, जो मध्य एशिया के जंगलों, विशेषकर महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के पश्चिमी भागों में निवास करती थी।

(vii) अहोम एक जनजाति थी, जो 13वीं शताब्दी में बर्मा से ब्रह्मपुत्र घाटी में आए।

(viii) बंजारों के कारवाँ को टांडा कहा जाता था।

2. चार पंक्ति में उत्तर :

(i) मध्यकाल में अनेक जनजातियाँ इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। वे लोग अपनी जीविका खेती करके, जंगली जानवरों का शिकार करके और जंगलों से भोज्य पदार्थ इकट्ठा करके कमाते थे। कुछ जनजातियाँ भैंस, बकरी, भेड़ आदि को पालती थीं। ये जनजातियाँ अपनी जीविका के लिए पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर थीं। इनमें से कुछ जनजातियाँ घुमक्कड़ और खानाबदोश थीं, जो जीविका की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह घूमती-फिरती थीं।

(ii) खोखर, गख्खर, गद्दी, नाग, अहोम, मुण्डा, संथाल, बेराड, काली, कोराग, मारावार, वेतार, भील, गोंड, बंजारा आदि।

(iii) मध्यकाल में बंजारा नामक जनजाति मध्य एशिया से व्यापारियों द्वारा लाए गए सामानों की खरीद-फरोख्त करती थी। वे लोग उन सामानों को बेचने के लिए जगह-जगह घूमते-फिरते थे। बंजारे अनाज, सामान और अन्य वस्तुओं को बेचने के लिए यातायात के लिए घोड़ों और बैलगाड़ियों का प्रयोग किया करते थे। बंजारों के कारवाँ को टांडा कहा जाता था। बंजारे सामान के साथ अपने परिवारों को भी ले जाते थे। व्यापारी और सेनाएँ भी उनकी सेवाओं की आवश्यकता महसूस करते थे। इस जनजाति का मुख्य व्यवसाय वस्तुओं का क्रय-विक्रय था।

(iv) रानी दुर्गावती महोबा के राजपूत राजा की पुत्री थी, जो गढ़ कटंगा के गोंड राजा संग्रामशाह के पुत्र दलपतशाह से ब्याही थी। रानी का युद्ध अकबर से 1565 ई. में हुआ था लेकिन वह अकबर के सेनापति आसफ खाँ के द्वारा पराजित कर दी गई थी।

3. दस पंक्तियों में उत्तर :

(i) गोंड एक जनजाति थी, जो मध्य एशिया के जंगलों, विशेषकर महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के पश्चिमी भागों में निवास करती थी।

गोंडों को कुलों में विभाजित किया गया है। कुल के मुखिया को राजा या राय कहा जाता है। गोंडों का मुख्य व्यवसाय झूम खेती है। उनमें से कुछ लोग मजदूरी करते हैं।

गोंडर ाज्यव ेंद्रीकृतथ ाात थाग ढ़ोंम ें विभाजितथ ाा।प्रत्येकग ढ़ विशेष गोंड कुल के द्वारा प्रशासित होता था। प्रत्येक गढ़ में 84 गाँव होते थे, जिसे चौरासी के नाम से जाना जाता था। प्रत्येक चौरासी को 12-12 गाँवों के समूह में विभाजित किया जाता था, जिसे बरहोत कहते थे। गोंड राजाओं ने ब्राह्मणों को भूमि दान में दी

थी। कालान्तर के गोंड राजाओं ने राजपूतों का दर्जा प्राप्त करने के लिए प्रयास किए उनमें से कुछ ने राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए।

(ii) मध्यकाल में अहोमों के पतन के निम्नलिखित कारण थे :

(1) औरंगजेब के सेनापति मीर जुमला ने 1662 ई. में अहोमों पर आक्रमण किया और उन्हें बुरी तरह हराया।

(2) अहोमों पर ब्राह्मणों का स्पष्ट प्रभाव था लेकिन उन्होंने हिंदुत्व (हिंदु धर्म) को स्वीकार करने के बावजूद अपने रीति-रिवाजों को नहीं छोड़ा।

(3) अंग्रजों ने अहोमों के राज्य का अंत कर दिया।

4. निम्नलिखित को समझाइए :

(i) **क्लान (वंश) :** एक बड़ा परिवार समूह क्लान कहलाता है।

(ii) **टांडा :** बंजारों के कारवाँ को टांडा कहा जाता था।

(iii) **चौरासी :** गोंड प्रशासन में प्रत्येक गढ़ में 84 गाँव होते थे, जिसे चौरासी के नाम से जाना जाता था।

(iv) **कारवाँ (काफिला) :** बंजारे व्यापारियों द्वारा लाए गए सामानों को बेचने के लिए जगह-जगह घूमते-फिरते थे। बंजारों के समूहों को कारवाँ कहा जाता है।

(v) **जनजाति :** वह समूह जो ब्राह्मणों के बनाए गए नियमों, कानूनों और रीति-रिवाजों को कबूल नहीं करता, उन्हें जनजाति कहते हैं।

9 धार्मिक जागरूकता

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) विष्णु (ii) (a) वाराणसी में

(iii) (a) शंकराचार्य द्वारा (iv) (b) महाराष्ट्र से

(v) (a) दक्षिण भारत (vi) (c) अद्वैतवाद में

(vii) (a) रामचरितमानस (viii) (a) तलवंडी में।

2. निम्नलिखिम को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
लंगर	गुरुनानक
अजमेर	मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह
दिल्ली	निजामुद्दीन
अलवार	दक्षिण भारत
तेलंगाना	वल्लाभाचार्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) 7वीं शताब्दी (ii) शंकराचार्य (iii) माधवाचार्य

(iv) मीराबाई (v) कृष्ण

4. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य (vi) सत्य

5. नाम बताइए :

(i) रामानुज (ii) शंकराचार्य (iii) चैतन्य महाप्रभु

(iv) गुरुनानक (v) बाबा फरीदुद्दीन औलिया

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) भक्ति आंदोलन को शिव के पुजारी नयनारों तथा विष्णु के पुजारी अलवार संतों ने शुरू किया।

(ii) चैतन्य महाप्रभु भक्ति आंदोलन के हिंदू संत थे, जिनका जन्म बंगाल के नदिया जिले में 1485 ई. में हुआ था।

(iii) वल्लभाचार्य भगवान कृष्ण की पूजा करते थे।

(iv) गुरु नानक तलवण्डी (पाकिस्तान) में पैदा हुए थे।

(v) सूफी आंदोलन का सिद्धांत था कि ईश्वर के साथ मानव का मिलन होता है, जिसे प्रेम, व्रत, प्रार्थनाओं और मुसलमानों या हिंदुओं के रीति-रिवाजों के विशेष संदर्भ के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

(vi) अजमेर (राजस्थान)।

(vii) शाह आलम बुकारी तथा बहाउद्दीन जमारिया।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) **भक्ति आंदोलन के उद्देश्य :**

(1) हिंदू-मुसलमानों में एकता स्थापित करना।

(2) महिलाओं की दशा में सुधार करना।

(3) शंकराचार्य के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करना।

(4) मंदिरों की स्थापना करके पूजा स्थलों की व्यवस्था करना।

(5) मुसलमानों में सूफी मत का प्रसार।

(ii) **भक्ति आंदोलन की शिक्षाएँ :**

(1) इस आंदोलन ने सगुण और निर्गुण ईश्वर की उपासना पर जोर दिया।

(2)य हअ ांदोलनज ातिवाद,छ ुआछूत,म ूर्तिप ूजा,अ ाडंबरोंक ा बहिष्कार करता है।

(3) यह अंधविश्वासों और सामाजिक बुराइयों को समाप्त करता

है।

(iii) कबीर को वाराणसी में लहरतारा तालाब के किनारे नीरू और नामक जुलाहा दंपत्ति के द्वारा पाया गया था। उन्होंने मूर्ति पूजा, जाति प्रथा, ऊँच-नीच तथा छुआछूत आदि का विरोध किया। वह हिंदू-मुसलमान एकता तथा निर्गुण भक्ति में विश्वास करते थे। उन्होंने खड़ी बोली में दोहों की रचना की तथा भक्ति के उपदेश दिए। वे रामानंद के शिष्य थे।

(iv) गुरु नानक सिक्ख धर्म के संस्थापक थे। उनका जन्म तलवंडी (पाकिस्तान) में 1469 ई. में हुआ था। उन्होंने अपने उपदेशों में बताया कि ईश्वर एक है। उन्होंने ईश्वर को बिना मुसलमानों और हिंदुओं के किसी संदर्भ के प्राप्त करने का साधन बताया। उनकी इच्छा थी कि उनके अनुयायियों को बिना जाति, वंश और धर्म के लंगर में खाना चाहिए। उन्होंने अपने उपदेशों को आदि ग्रंथ में कविताओं के रूप में लिखा है। उनका निधन 1539 ई. में करतारपुर में हुआ था।

(v) ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का जन्म चिश्ती समुदाय में 1142 ई. में मध्यए शियाम ेंह ुआथ ा।व ह1 192ई .म ेंभ ारतप हुँचे।उ न्होंने अजमेर (राजस्थान) को अपना स्थाई बसेरा बनाया तथा वहाँ शेख अब्दुल कादिर जिलानी के शिष्य बन गए। उनका निधन अजमेर में 60 वर्ष की अवस्था में हुआ। अजमेर में उनकी दरगाह पर प्रतिवर्ष संगीत और कव्वालियों के साथ उर्स का आयोजन होता है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) सल्तनत काल में समाज का नैतिक स्तर गिरने लगा था तथा हर जगह भ्रष्टाचार व्याप्त होने लगा। हिंसा अपने चरम पर थी। इसीलिए ऐसे समय में कुछ समाज सुधारकों ने धार्मिक आंदोलन शुरू किए ताकि सामाजिक बुराइयों को समाप्त किया जाए तथा समाज में भाईचारे की भावना कायम की जा सके। यही धार्मिक

आंदोलन भक्ति आंदोलन कहलाया।

इस आंदोलन को शिव के पुजारी नयनारों तथा विष्णु के पुजारी अलवार संतों ने 7वीं शताब्दी में दक्षिण में प्रारंभ किया था। वहाँ से यह आंदोलन पूरे भारतवर्ष में फैला। इसके अंतर्गत अनेक संतों ने भक्ति आंदोलन की निम्न शिक्षाओं का प्रसार किया ।

भक्ति आंदोलन की शिक्षाएँ :

(1) इस आंदोलन ने सगुण और निर्गुण ईश्वर की उपासना पर जोर दिया।

(2)य हअ ंदोलनज ातिवाद,छ ुआछूत,म ूर्तिप ूजा,अ ाडंबरोंक ा बहिष्कार करता है।

(3) यह अंधविश्वासों और सामाजिक बुराइयों को समाप्त करता है।

(ii) मध्यकाल के दो सूफी संतों का वर्णन निम्नलिखित है :

(1) ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती : ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती का जन्म चिश्ती समुदाय में 1142 ई. में मध्य एशिया में हुआ था। वह 1192 ई. में भारत पहुँचे। उन्होंने अजमेर (राजस्थान) को अपना स्थाई बसेरा बनाया तथा वहाँ शेख अब्दुल कादिर जिलानी के शिष्य बन गए। उनका निधन अजमेर में 60 वर्ष की अवस्था में हुआ। अजमेरम ेंउ नकीद रगाहप रप्र तिवर्षस ंगीतअ ौरक व्वालियोंव के साथ उर्स का आयोजन होता है।

(2) बाबा फरीदुद्दीन औलिया : ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य बाबा फरीद का जन्म काबुल में हुआ था। वह अपने बचपन में ही संन्यास धारण करके संत हो गए थे। उनका मानना था कि मनुष्य को प्रेम धारण करके ही ईश्वर को पाया जा सकता है। वह उलेमाओं के सिद्धांतों का खुलकर विरोध करते थे। वह सतलज नदी के निकट मुल्तान से दिल्ली जाने वाली सड़क के किनारे एक झोंपड़ी में रहा करते थे।

4. निम्नलिखित को समझाइए :

(i) **सूफी :** इस्लामी रहस्यवादी संत सूफी कहलाते हैं।

(ii) **पीर :** सूफी संतों के गुरु पीर कहलाते हैं।

(iii) **दोहा :** प्रभु की भक्ति में कही गई दो पंक्तियों की कविता दोहा कहलाती है।

(iv) **चिश्ती :** चिश्ती एक समुदाय है, जो मध्य एशिया से संबंधित है।

(v) **कव्वाली :** महान सूफी संतों की दरगाहों पर गाए जाने वाले भजन व गीत कव्वाली कहलाते हैं।

10 क्षेत्रीय संस्कृतियाँ

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (c) गीतगोविंद	(ii) (a) राजतरंगिणी
(iii) (a) रामायण	(iv) (d) (a) तथा (b)
(v) (a) कथक	(vi) (d) (a) तथा (b)
(vii) (b) अलबरूनी	(viii) (a) अमीर खुसरो
(ix) अबुल फजल	(x) (a) गौर में

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	**'ब'**
राजतरंगिणी	कल्हण
रबाब	तुर्क
सितार	अमीर खुसरो
चैतन्य	बंगाल

तुलुक-ए-जहाँगीर जहाँगीर

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) सत्य (vi) कसत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) प्रतिहार वंश (ii) पृथ्वीराज रासो (iii) अपभ्रंश

(iv) कांगड़ा (v) सल्तनत काल (vi) सारंगी

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) कला, संगीत, भाषा और साहित्य के माध्यम से अध्यात्मिक विकास का साक्ष्य संस्कृति कहलाता है।

(ii) राजा भोज ने कई विषयों; जैसे–व्याकरण, नक्षत्र विज्ञान, औषधि तथा धर्म आदि पर अनेक पुस्तकों की रचना की थी।

(iii) भवभूति, राजशेखर, विल्हण, क्षेमेन्द्र, जयदेव, कल्हण, हर्षचरित, चन्द्रबरदाई, कम्बन आदि।

(iv) चन्द्रबरदाई।

(v) तमिल और मलयालम।

(vi) कम्बन ने।

(vii) छोटे आकार वाले चित्र लघु चित्र कहलाते हैं।

(viii) राजस्थानी शैली काँगड़ा शैली।

(ix) कथक, कथकली, भरतनाट्यम, कुचिपुड़ी।

(x) अमीर खुसरो एक महान और निपुण संगीतकार थे।

(xi) फारसी भाषा।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) **पूर्व मध्यकाल में भाषा और साहित्य :** पूर्व मध्यकाल में उपमहाद्वीप के उत्तरी भागों में राज्य करने वाले राजपूत शासकों ने

विद्या और साहित्य में रूचि ली। प्रतिहार वंश का राजा भोज एक महान एवं प्रकाण्ड विद्वान था। उसने कई विषयों; जैसे–व्याकरण, नक्षत्र विज्ञान, औषधि तथा धर्म आदि पर अनेक पुस्तकों की रचना की थी। भवभूति राजशेखर, विल्हण, क्षेमेन्द्र, जयदेव आदि ने संस्कृत में ग्रंथों की रचना की। राजशेखर की कर्पूरमंजरी व कालकीमांसा;ज यदेवक ीग ीतगोविन्द,क ल्हणक ीर ाजतरंगिणी, बाणभट्ट की कादंबरी एवं हर्षचरित तत्कालीन शासकों के समय का ऐतिहासिक और वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त हिंदी, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि क्षेत्रीय भाषाओं का विकास भी इस समय समुचित रूप से हुआ था।

दक्षिण भारतीय शासकों ने भी अपने शासनकाल में बहुत-सी क्षेत्रीय भाषाओं और साहित्य का विकास किया। चोलों ने तमिल को संरक्षण प्रदान किया। नयनार और अलवार संतो ने 7वीं तथा 9वीं शताब्दियों के बीच तमिलन साहित्य का सृजन किया। दक्षिण भारत के इन भक्ति आंदोलन के संतों ने शिव और विष्णु की प्रशंसा में बहुत-सी कविताओं की रचना की। कम्बन ने रामायण का तमिल भाषा में अनुवाद किया। चेर साम्राज्य के राजाओं ने क्षेत्रीय भाषा मलयालम को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने 12वीं शताब्दी में संस्कृत में रचित ग्रंथों का मलयालम भाषा में अनुवाद कराया।

(ii) पूर्वम ध्यकालम ेंम ंदिरम ेंप ूजा,प्र ार्थनाअ ौरन ृत्यअ ायोजनोंव े समय या राजदरबारों में गायन के आयोजन के समय संगीत प्रस्तुत किया जाता था। राजपूत शासक संगीत और नृत्य के संरक्षक थे।

उत्तरभ ारतम ेंन ृत्यव ेद ो घ रानेथ े–एकर ाजस्थानीत थाद ूसरा लखनऊ घराना।

शास्त्रीय संगीत रागों पर आधारित था तथा इसके दो घराने हिंदुस्तानी और कर्नाटिक थे।

(iii) मुगल चित्रकला को बहुत पसंद करते थे। उनके चित्रों के विषय

दरबारों के दृश्य, शिकार और युद्ध क्षेत्रों के दृश्य तथा भारतीय जीवन एवं प्राकृतिक दृश्यों से संबंधित थे। उन्होंने अकबरनामा तथा महाभारत और गीता के फारसी अनुवाद की कृतियों को चित्रों से सजाया था। उन्होंने अपने चित्रों में मोर पंख जैसे चमकीले नीले और लाल रंगों का प्रयोग किया था। अकबर ने कला के इस महान कार्य के लिए तस्वीरखाना नामक कला स्टूडियों की स्थापना की थी।

(iv) बंगालियों का मुख्य भोजन चावल-मछली है क्योंकि बंगाली पानी में बहुतायत के कारण वर्षा में धान की तीन फसलें उगाते हैं। साथ ही पानी में मछलियाँ पालते हैं। बंगाली ब्राह्मण भी मछलियाँ खाते हैं। मंदिरों और विहारों की दीवारों पर बने चित्रों में महिलाएँ मछली कोत ैयारक रतेह ुएत थाब ाजारम ेब ेचनेव ेर्ि लएल ेज ातीह ुई दिखाई गई हैं।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **मुगलकाल में साहित्य और भाषा :**म ुगलोंव ेस मयस रकारी काम-काज की भाषा फारसी थी। आगरा फतेहपुर सीकरी और दिल्ली मुगल की राजधानी रहे थे, इसीलिए इन नगरों के आस-पास ही साहित्य और भाषा का विकास हो सका। मुगल शासक साहित्य के महान संरक्षक थे और उन्होंने इसको काफी सीमा तक प्रोत्साहित किया। तुर्की, फारसी और हिंदी भाषाओं का प्रयोग अधिक मात्रा में होता था। इस काल में अबुल फजल का अकबरनामा, बाबर का बाबरनामा, जहाँगीर की तुजुक-ए-खाना, फैजी की फारसी में कविताएँ, अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना के हिंदी में लिखे दोहे, गुलबदन बानो बेगम का हुमायूँनामा आदि प्रमुख पुस्तकें थीं। शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह संस्कृत और फारसी का प्रकाण्ड विद्वान था। उसने संस्कृत की बहुत-सी पुस्तकों और उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया।

इसके अलावा हिंदी के महान कवि तुलसीदास ने रामचरितमानस तथा सूरदास ने सूरसागर की रचना भी इसी काल में की थी। बदायूँनी तथा अब्दुल हमीद लाहौरी ने भी फारसी में अनेक पुस्तकों की रचना की थी।

(ii) **मध्यकाल में बंगाल की चित्रकला और संगीत :** मध्यकाल में अनेक मंदिरों की दीवारों को चित्रों से सजाया गया था। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल के बाकुंर जिले में स्थित विष्णुपुर का श्यामशय मंदिर।

जयदेवव ेग ीतगोविन्दव ेग ीतोंत थाच ैतन्यव ेद ्वाराग ाएग ए गीतों को देहाती संगीत वाद्यों के साथ हिंदुस्तानी ध्रुपद में मधुर लय के साथ गाया जाता था।

मध्यकाल में बंगाल में साहित्य : चैतन्य जैसे भक्तिकाल के संतों ने धर्मोपदेश के अतिरिक्त भगवान कृष्ण की प्रशंसा में गीत गाए। उनके उपदेशों और गीतों की भाषा बंगाली थी। यद्यपि बंगाली एक क्षेत्रीय भाषा है परंतु बंगाल के सारे निवासी बंगाली बोलते थे। मयनामतीअ ैरग ोपीचंद्रव ेग ीतत थाध र्माठ ाकुरक ीप ूजाक ी कहानियाँ नाथ साहित्य के हिस्से थे।

11 18वीं शताब्दी का भारत

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) लखनऊ में (ii) (a) निजाम-उल-मुल्क

(iii) (d) मौहम्मद शाह रंगीला (iv) (d) गुरु गोविंद सिंह ने

(v) (a) दिल्ली में

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
नादिरशाह	फारस का शासक
अहमदशाह अब्दाली	अफगान का शासक
सआदल अली खाँ	1722 ई. में अवध का सूबेदार
बंदा बैरागी	सिक्ख नेता
अलीवर्दी खाँ	बंगाल का नवाब
गुरु गोविन्द सिंह	खालसा पंथ का संस्थापक

4. निम्नलिखित को पूरा कीजिए :

(i) औरंगजेब (ii) शंभाजी (iii) पानीपत का तीसरा युद्ध

(iv) 1699 ई. (v) भरतपुर (vi) बघनख

5. निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं की तिथियाँ (सन्) लिखिए :

(i) 1707 ई. (ii) 1713 ई. (iii) 1627 ई.

(iv) 1761 ई. (v) 1713 ई.

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) औरंगजेब की मृत्यु के बाद शासन करने वाले मुगल शासक परवर्ती मुगल कहलाए, जिनमें बहादुरशाह प्रथम, जहाँगीरशाह, फारूख सियर, मोहम्मदशाह रंगीला तथा बहादुरशाह जफर प्रमुख थे।

(ii) बहादुरशाह प्रथम।

(iii) मोहम्मदशाह रंगीला।

(iv) मोहम्मदशाह रंगीला रंगीन प्रकृति का बादशाह था। फारूखसियर के बाद वह मुगल सम्राट बना।

(v) नादिरशाह अपने साथ भारत से कोहिनूर हीरा तथा रत्नजड़ित मयूर सिंहासन ले गया।

(vi) अहमदशाह अब्दाली एक अफगानी शासक था।

(vii) सिक्खों के जत्थों अथवा राजनीतिक दल को मिसल कहा जाता है।

(viii) 1674 ई. में।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) औरंगजेब की मृत्यु के बाद शासन करने वाले मुगल शासक परवर्ती मुगल कहलाए, जिनमें बहादुरशाह प्रथम, जहाँगीरशाह, फारूख सियर, मोहम्मदशाह रंगीला तथा बहादुरशाह जफर प्रमुख थे।

प्रांतीय गवर्नरों स्थानीय सरदारों और अमीरों ने अपनी स्थिति को संगठित करने के लिए तथा आय के स्रोत भू-राजस्व पर अधिकार करने के लिए परवर्ती मुगलशासकों के सामने समस्याएँ खड़ी कर दीं। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य का राजकोष खाली हो गया।

(ii) फारूखसियार के बाद मोहम्मदशाह सम्राट बना। उसने अपने रास्ते से सैयद भाइयों का सफाया करने में अपने कुछ सहयोगियों की मदद ली परंतु उन्होंने इसका नाजायज फायदा उठाया और स्वयं को उससे स्वतंत्र करा लिया। मोहम्मदशाह रंगीन प्रकृति का बादशाह था। वह नर्तकियों के साथ संगीत और शराब का लुत्फ उठाया करता था, इसीलिए उसे मोहम्मदशाह रंगीला के नाम से जानते थे।

(iii) अफगान सरदार अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर कई बार आक्रमण किया। 1761 ई. में भी पानीपत के मैदान में मराठों और उसके बीच एक युद्ध लड़ा गया, जिसे भारतीय इतिहास में पानीपत के तीसरे युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध का परिणाम यह हुआ कि मराठा शक्ति का अंत हो गया।

(v) **मराठों की आय के स्रोत :** भू-उपज का 2/5 भाग राजस्व के रूप मेंइ कट्ठाि कयाज ाताथ ाा।स ंपूर्णभ् I-उपजक I1 /4भ् ागच ैथ

कहलाता था, जिसे उन किसानों से वसूल किया जाता था जिनकी जमीन पर मराठों का सीधा नियंत्रण नहीं था। प्रत्येक आदमी को अपनी आय का 1/10 कर राजा को भेंट के रूप में चुकाना पड़ता था, जिसे सरदेशमुखी कहते थे।

(vi) शिवाजी ने मुगलों के अधिकार में रहे सूरत को भी लूटा। दक्कन में शिवाजी के अभियान को रोकने के लिए औरंगजेब ने जयसिंह को उसका सामना करने के लिए भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को पुरंदर के किले में दबोच लिया और उसे एक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया, जिसे पुरन्दर की संधि कहते हैं। इस संधि के अनुसार शिवाजी ने औरंगजेब को अपने कब्जे वाले किले लौटा दिए और उसे आगरा के मुगल दरबार में उपस्थित होना पड़ा था।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) **शिवाजी की उपलब्धियाँ :** शिवाजी ने सिंहगढ और पुरन्दर के किलों पर अपना अधिकार कर लिया। बीजापुर के सुल्तान ने शाहजी भोंसले को कैद कर लिया परंतु मुगलों की मदद से शिवाजी ने अपने छापामार (गुरिल्ला युद्ध पद्धति) के द्वारा अपने पिता कोस् वतंत्रक रा लिया।उ सने1 656इ .म ेंज वाली,1 651इ .म ें उत्तरी कोंकण, 1659 ई. में बीजापुर, 1664 ई. में सूरत और 1666 ई. में रामगढ़ के किलों पर विजय प्राप्त की तथा 15 अप्रैल 1663 ई. को औरंगजेब के मामा शाइस्ता खाँ को पराजित किया। उसने अपने बघनख से सेनापति अफजल खाँ को मारा तथा बीजापुर पर अपना अधिकार कर लिया।

शिवाजी ने मुगलों के अधिकार में रहे सूरत को भी लूटा। दक्कन में शिवाजी के अभियान को रोकने के लिए औरंगजेब ने जयसिंह को उसका सामना करने के लिए भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को पुरंदर के किले में दबोच लिया और उसे एक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया, जिसे पुरन्दर की संधि कहते हैं। इस संधि के अनुसार शिवाजी ने औरंगजेब को अपने कब्जे वाले किले लौटा दिए

और उसे आगरा के मुगल दरबार में उपस्थित होना पड़ा था।

शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को 5000 की मनसबदारी प्रदान की गई। 1674 ई. में शिवाजी ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया तथा स्वयं को छत्रपति की उपाधि से विभूषित किया। उसने कर्नाटक पर आक्रमण किया तथा जिंजी, तंजौर और बिल्लौर के प्रांतों पर अपना कब्जा जमा लिया।

(ii) 18वीं शताब्दी में अवध मुगल साम्राज्य के मुख्य प्रांतों में से एक था। मुगल सम्राट ने 1722 ई. में सआदत खाँ को अवध का सूबेदार नियुक्त किया था। उसे सूबेदारी के अतिरिक्त दीवानी और फौजदारी के अधिकार भी प्रदान किए गए थे। उसने अवध के जमींदारों की शक्तियों को कम करके उन्हें बिना किसी अवरोध के कर चुकाने के लिए बाध्य किया। उसने सफलतापूर्वक प्रशासन चलाने के लिए जागीरों के आकार को घटाया। उसने राजपूत जमींदारों तथा रूहेलखंड के अफगानों की उपजाऊ जमीन को भी अपने अधिकार में ले लिया था। उसने प्रांत की भू-राजस्व व्यवस्था में भी सुधार किया। अवध की राजधानी लखनऊ थी तथा उसके पुत्र सफदरजंग तथा पौत्र शुजाउद्दौल ने प्रांत को समृद्ध तथा मजबूत बनाया।

(iii) **वतन जागीरें :** 18वीं शताब्दी में मुगल सम्राटों ने बहुत-से राजपूत शासकों को जागीरें प्रदान की थीं। इसी के साथ उन्हें स्वशासन का अधिकार भी दिया गया था। इन राजपूत राजाओं में जोधपुर के शासक अजीत सिंह को गुजरात की जागीर प्रदान की गई तथा आमेर के सवाई राजा जयसिंह को मालवा का गवर्नर बनाया गया जिसने अपने पड़ोस की जागीरों पर अधिकार करने के प्रयास किए और उन्हें अपने अधिकार में ले लिया। अजीत सिंह ने नागपुर पर कब्जाक रकेउ सेअ पनेर ाज्यम ेंि मलाि लया।उ सनेज यपुरक ो अपनी राजधानी बनाया। जयसिंह स्थापत्य कला का संरक्षक था। उसने दिल्ली, जयपुर, मथुरा, उज्जैन तथा बनारस में वेधशालाएँ बनवाईं।

इकाई III : नागरिक जीवन

1 प्रजातंत्र में समानता

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) समानता (ii) (a) समानता पर

(iii) (b) केंद्र सरकार द्वारा (iv) (a) तमिलनाडु

(v) (b) 1964 ई.

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) असत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
कानून के समक्ष समानता	कानून की दृष्टि में भारत का राष्ट्रपति और एक मजदूर समान है
मतदान का समान अधिकार	सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार
सामाजिक समानता	उपाधियों की समाप्ति
सामाजिक असमानता	छुआछूत
सरकारी नौकरियों में समानता	सरकारी नौकरियों में एस.सी., एस.टी. तथा ओ.बी.सी. को आरक्षण

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) समान (ii) अपराध (iii) असमानता

(iv) सम्मान (v) उच्च जाति के (vi) भेदभाव पर रोक

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) समानता मुख्य प्रजातांत्रिक तत्वों में से एक है और यह प्रजातंत्र के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है।

(ii) बिना किसी सामाजिक हैसियत के सभी वयस्क नागरिकों को मत देने का अधिकार सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार कहलाता है।

(iii) 'सभी व्यक्ति कानून के समक्ष एक हैं' से तात्पर्य है कि राज्य सभी के लिए समान कानूनों का निर्माण करेगा और उनके साथ समानता का व्यवहार किया जाएगा। कानून ऊँच-नीच के आधार पर व्यवहार नहीं करेगा।

(iv) 1955 ई. में।

(v) तमिलनाडु।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) सामाजिक समानता से अभिप्राय है कि देश के नागरिकों में जाति, वंश, कुल और ऊँच-नीच के आधार पर कोई अंतर नहीं होगा। हर आदमी मॉल, अस्पताल, रेस्टोरेंट, पार्क, सिनेमाघर, तालाब, कुओं, विद्यालय, महाविद्यालय, दुकान, सड़क, रेलवे स्टेशन, सामुदायिक केंद्र आदि जैसी सार्वजनिक जगहों का प्रयोग करने के लिए समान अधिकार रखता है। प्रत्येक नागरिक को सामाजिक समानता प्रदान की गई है।

(ii) समान मताधिकार से अभिप्राय है कि प्रत्येक नागरिक को मत देने का समान अधिकार प्राप्त है। कोई भी नागरिक, जो 18 वर्ष की आयु का है, अपनी पसंद के उम्मीदवार को चुनने के लिए मत देने का अधिकार रखता है। सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का विचार समानता के आधार पर आधारित है। प्रत्येक नागरिक को संविधान द्वारा मत देने का अधिकार प्रदान किया गया है। व्यक्ति की सामाजिक हैसियत, समुदाय तथा दौलत मत के अधिकार को

प्रभावित नहीं करते।

(iii) देश के नागरिकों में जाति, वंश, कुल और ऊँच-नीच के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को असमानता कहते हैं। भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में अनेक संवैधानिक उपचारों के होते हुए भी समाज में बहुत-सी असमानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। असमानता के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–

जातिवाद या जाति व्यवस्था : भारत में अनेक स्थान ऐसे हैं, जहाँ दलित उच्च जातियों की चारपाई पर नहीं बैठ सकते। दलित जातियों और जनजाति समुदायों के बच्चों के साथ निम्न जाति का होने तथा गरीबी के कारण असमानता का व्यवहार किया जाता है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) मिड-डे मील योजना के अंतर्गत विद्यालयों में बच्चों को मध्यावकाश में निःशुल्क भोजन प्रदान किया जाता है। इसके लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) इस कार्यक्रम को विद्यालय में बच्चों की संख्या में वृद्धि करने हेतु लागू किया गया है ताकि जो बच्चे स्कूल में पढ़ने नहीं आते हैं, वे भोजन मिलने के कारण स्कूल में पढ़ने जरूर आएँगे।

(2) आधी छुट्टी (मध्यावकाश) में बच्चे भोजन खाने के लिए घर जाते हैं और फिर वापस विद्यालय नहीं आते। अत: मिड-डे मीलक ार्यक्रमव ेद ्वाराब च्चोंक ेम ध्यावकाशम ें घ रज ानेस े रोका गया।

(3) इस कार्यक्रम का एक लाभ यह भी है कि सभी जातियों और धर्मों के बच्चे एक साथ एक ही पंक्ति में बैठकर बिना किसी भेदभाव के खाना खाते हैं।

(4) इस कार्यक्रम के द्वारा कुपोषण को खत्म किया जा रहा है।

(ii) भारत के अतिरिक्त अन्य प्रजातांत्रिक देशों में भी असमानता व्याप्त है और इसके विरूद्ध संघर्ष जारी है। उदाहरण के लिए, जो

मुलसमान 1947 ई. के भारत विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए थे, उन्हें पाकिस्तानी नागरिकों के समान अधिकार नहीं दिए गए हैं और उनसे मुजाहिदीनों की तरह व्यवहार किया जाता है। वे आज भी समानता के अधिकार को पाने के लिए संघर्षरत हैं। दूसरा उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका का है। वहाँ जो लोग दासों के रूप में अफ्रीका से लाए गए थे, उनसे समान व्यवहार नहीं किया जाता। उन्होंने 1950 ई. में असमानता के विरूद्ध आंदोलन चलाया। बसों में यात्रा करते समय दासों को पिछली सीटों पर बैठना पड़ता था या जब कोई अमेरिकी बस में चढ़ता था तो अफ्रो-अमेरिकन (दास) को उसके लिए सीट खाली करनी पड़ती थी। दिसंबर 1855 को रोजा पार्क्स नामक एक दास महिला बस से यात्रा कर रही थी। इसी बीच एक अमेरिकी नागरिक बस में चढ़ा और उसने रोजा पार्क्स से अपने लिए सीट खाली करने के लिए कहा। परंतु रोजा पार्क्स ने ऐसा करने से मना कर दिया। उसी दिन से असमानता के विरूद्ध एक बड़ा आंदोलन छिड़ गया, जिसे नागरिक अधिकार आंदोलन के नाम से जाना गया। 1964 ई. में पारित एक्ट ने राष्ट्रीय उत्पत्ति और वंश के अधिकार पर किए जाने वाले भेदभाव पर रोक लगा दी। दासों के बच्चों को संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षा के समान अधिकार प्रदान किए गए।

4. उचित कारण दीजिए :

(i) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्येक 18 वर्ष के व्यक्ति को मतदान का अधिकार दिया गया है।

(ii) क्योंकि ये मूलाधिकार सभी नागरिकों को बिना भेदभाव के अपना विकास करने के अवसर प्रदान करते हैं।

(iii) सामाजिक समानता स्थापित करने के लिए तथा गरीब और अमीर में अंतर को मिटाने के लिए भारत सरकार ने सर, रायबहादुर जैसी अनेक उपाधियों का अंत कर दिया है।

(iv) विद्यालय में बच्चों की संख्या में वृद्धि करने हेतु तथा सभी जातियों और धर्मों के बच्चे एक साथ बैठकर बिना किसी भेदभाव के खाना खाए, इसलिए राज्य सरकारों ने प्राथमिक विद्यालयों में दोपहर के भोजन का कार्यक्रम चलाया है।

(v) क्योंकि मुजाहिन वे मुसलमान हैं, जो 1947 ई. के भारत विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए थे, इसीलिए उन्हें पाकिस्तानी नागरिकों के समान अधिकार नहीं दिए गए हैं।

2 राज्य सरकार

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) विधान परिषद् (ii) (c) राज्यपाल

(iii) (d) उड़ीसा (iv) (b) 25 वर्ष का

(v) (c) राज्यपाल

(vi) (a) शिक्षा अनुसंधाान एवं प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद

(vii) (a) उपराज्यपाल

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) असत्य

(iv) असत्य (v) असत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
निम्न सदन	विधान सभा
उच्च सदन	विधान परिषद
पीठासीन अधिकारी	विधानसभा का अध्यक्ष
राष्ट्रपति	राज्यपाल की नियुक्ति करता है
राज्यपाल	मुख्यमंत्री की नियुक्ति करता है

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) द्विसदनात्मक (ii) विधायिका

(iii) विधानपरिषद के /12 सदस्यों (iv) आपातकाल

(v) खंड

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) दो सदन।

(ii) 5 वर्ष।

(iii) 10,000 रुपये प्रतिमाह तथा अन्य भत्ते।

(iv) ऐसे राज्य, जिनमें विधान परिषद तथा विधानसभा दोनों सदन होते हैं, द्विसदनात्मक राज्य कहलाता है।

(v) अध्यक्ष।

(vi) राज्यपाल।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) राज्यपाल की नियुक्ति भारत का राष्ट्रपति करता है।

राज्यपाल की योग्यताएँ : किसी राज्य का राज्यपाल बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए :

(1) वह भारत का नागरिक होना चाहिए।

(2) वह दिवालिया और पागल नहीं होना चाहिए।

(3) वह अन्य किसी लाभ के पद पर आसीन नहीं होना चाहिए।

(4) वह विधानसभा का सदस्य होने की योग्यता रखता हो।

(5) वह विधानसभा और संसद का सदस्य नहीं होना चाहिए।

(6) उसकी आयु 35 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए।

कार्यकाल : राज्यपाल का कार्यकाल 5 वर्ष है परंतु राष्ट्रपति उसे इस अवधि से पूर्व भी पदच्युत कर सकता है। राज्यपाल भी 5 वर्ष से पूर्व अपना इस्तीफा राष्ट्रपति को भेज सकता है।

(ii) **विधानसभा का संगठन :** विधानसभा में 525 से अधिक और 60 से कम सदस्य नहीं हो सकते। इसकी सदस्या संख्या संबंधित राज्य की जनसंख्या के अनुपात के अनुसार घटती-बढ़ती है। सदस्यों का चुनाव राज्य के निवासी प्रत्यक्ष मतदाता प्रणाली के माध्यम से करते है; जबकि राज्य का राज्यपाल एक एंग्लो-इंडियन सदस्य की नियुक्ति करता है।

(iii) **राज्य सचिवालय :** राज्य का प्रधान राज्यपाल होता है तथा राज्य प्रशासन की वास्तविक कार्यकारी शक्तियाँ मुख्यमंत्री में निहित होती हैं। वह इस कार्य में अपने मंत्रिमंडल में सम्मिलित मंत्रियों का सहयोगप्राप्तक रताहै।इ नम ंत्रियोंव ेअ धीनअ नेकप्रकारव े विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग को चलाने में मंत्री की सहायता के लिए एक सचिव होता है, जो विभाग के मंत्री का मुख्य सलाहकार होता है। वह विभाग की योजनाओं और नीतियों के विषय में मंत्री को अवगत कराता है। सामान्यत: सचिव भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) का सदस्य होता है। उसे अपने क्षेत्र के कार्यों का गहन अनुभव होता है। उसकी सहायता के लिए कई अधीनस्थ अधिकारी होते हैं।

(iv) जनस्वास्थ्य की सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए राज्य सरकार जिलों, विकास खंडों तथा गाँवों में स्वास्थ्य सुधार हेतु अस्पतालों और डिस्पेंसरियों की व्यवस्था करती है। स्थानीय निकायों की संस्थाएँ तथा गैर-सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) भी लोगों को अपने स्तर से स्वास्थ्य सेवाएँ मुहैया कराते हैं। इन संगठनों द्वारा सफाई और कूड़ा निस्तारण प्रबंधन की भी व्यवस्था की जाती है। इस क्षेत्र में चल चिकित्सा प्रणाली के अंतर्गत बहुत-सा कार्य किया गया है।

खाद्य तथा औषधि निरीक्षक बाजार में खाद्य पदार्थों और औषधियों में मिलावट को रोकने के लिए पदार्थों के नमूने लेते हैं, जिससे नकली वस्तुओं पर रोक लगती है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) राज्य सरकार बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करती है। साथ ही बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा मुहैया कराना राज्य का नैतिक दायित्व है। निरक्षरता की दर को घटाने के लिए राज्य सरकारों ने बच्चों को स्कूलों के प्रति आकर्षित करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया है। सरकारी और अनुदानित (सहायता प्राप्त) विद्यालयों में फीस बहुत ही कम है, जिसे गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले माता-पिता के बच्चे आसानी से चुका सकते हैं। इसके अलावा सरकार वजीफे, अनुदान तथा ऋण सुविधाएँ प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाले बच्चों को उपलब्ध कराती है। अधिकतर सभी राज्य सरकारें कक्षा 1 से कक्षा 8 तक बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा तथा पुस्तकें उपलब्ध कराती हैं। प्रत्येक राज्य में सेकेंडरी स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट बोर्ड स्थापित किए गए हैं। पूरेद ेशम ेंस ी.बी.एस.ई.त थाअ ाई.सी.एस.सी.ब ोर्डअ ंग्रेजीत था हिंदी माध्यमों से कक्षा 1 से 12 तक की शिक्षा का प्रबंध करते हैं। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) एक केंद्रीय शिक्षा संस्था है, जो 1 से 12 तक की कक्षाओं की पुस्तकों का हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशन करती है। यह संस्था देश के चारों कोनों में स्थित विद्यालयों के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण यथा बी.एड. तथा एम.एड. कोर्सों का आयोजन करती है। राज्य स्तर पर राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद भी एन.सी.ई.आर.टी. की भाँति शैक्षिक उन्नयन के कार्यों को संपादित करती है।

(ii) भारतीय संविधान की धारा 39 के अंतर्गत प्रावधान है कि राज्य सरकारें जनता की आजीविका और भूमि सुधार के लिए कार्यक्रम और नीतियाँ बनाएँगी।

राज्य सरकार द्वारा जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी गई तथा सीमांत और लघु कृषकों को जमीन के मालिकाना हक दे दिए गए। भूमिहीनों को गाँवों में पड़ी खाली सरकारी जमीन के पट्टे दे दिए गए हैं। इस तरह से केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने किसानों की दशा में सुधार किया।

3 लिंग और इसकी भूमिका

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) इनमें से कोई नहीं (ii) (a) 933 : 1000

(iii) (b) 1992 – 93 ई. में (iv) (a) 58

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) लिंग (ii) परिवार (iii) कठिन (iv) वेशभूषा

(v) नियमों

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) सामाजिक पर्यावरण में पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार और समानताओं के संदर्भ में प्रयुक्त कारक लिंग कहलाता है।

(iii) पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति कठिन, कठोर तथा साहसपूर्ण होती है जबकि स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले कार्य आसान, नम्र तथा घर पर किए जाने वाले होते हैं।

(iv) स्त्रियों और पुरुषों से असमानता पूर्ण व्यवहार करना लिंग असमानता कहलाती है।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) कुछ लोग लिंग और यौन को एक ही संदर्भ में लेते हैं। उनकी राय में स्त्री और पुरुष के गुण और व्यवहार में भिन्नता प्राकृतिक लक्षणों से निश्चित होती है। लिंग की भूमिकाओं को बदला जा सकता है। अन्य लोग लिंग को यौन के संदर्भ में परिभाषित करते है, जिसके आधार पर स्त्री और पुरुष में जैविक अंतर दर्शाया जाता है। स्त्री या पुरुष का यौन गुणसूत्रों द्वारा निश्चित होता है और इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार लिंग और यौन में बहुत अधिक अंतर है।

(ii) **लिंग की भूमिका :** समाज स्त्रियों और पुरुषों तथा लड़के और लड़कियों से विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं और व्यवहार की आशा करता है। प्राचीन समय से ही कुछ काम स्त्रियों के द्वारा तथा कुछ पुरुषों के द्वारा किए जाते थे। समय बीतने के साथ-साथ कुछ काम पुरुषों के लिए तथा कुछ काम स्त्रियों के लिए निश्चित हो गए। जैसे–पुरुषों के लिए खेत जोतना, बोझा ढोना, परिवार के भरण-पोषण के लिए बाहर से धन कमाना आदि और स्त्रियों के लिए घर चलाना, बच्चों की देखभाल करना, खाना पकाना, सफाई करना, गीत गाना आदि। इसके विपरीत यदि कोई पुरुष घर में खाना बनाने या बच्चों की देखभाल करने का काम और स्त्री खेत जोतने, दुकान चलाने या ट्रक चलाने का काम करे तो ये कार्य विपरीत प्रकृति के होंगे।

(iii) **विद्यालयों में लिंग की भूमिका :** विद्यालयों में पढ़ने-लिखने,

बोलने,ο यायामक रनेअ ादिं क्रियाओंम ें लंगस मानताद ेखनेम ें आती है। इसके अलावा छात्र और छात्राएँ विद्यालय में आपसी व्यवहार बड़ों से, छोटों से, बराबर वालों से और जूनियरों तथा सीनियरों से व्यवहार करना भी सीखते हैं। यहीं पर उन्हें अजनबियों तथा सगे-संबंधियों से व्यवहार करना सिखाया जाता है। यही व्यवहार उनमें सहकारिता, सहयोग, ईमानदारी, स्वतंत्रता आदि गुणों का विकास करता है। विद्यालयों में छात्र-छात्राओं की वेशभूषा उनकी शारीरिक बनावट में अंतर के कारण अलग-अलग निर्धारित की जाती है। छात्र और छात्राओं के लिए अलग-अलग विद्यालयों की स्थापना की गई है जबकि कुछ विद्यालय दोनों के लिए खुले हैं।छ ात्राओंव ेर्ि वद्यालयोंक ीब नावटछ ात्रोंव ेर्ि वद्यालयोंस े कुछ मामलों में भिन्न होती है।

(iv) **स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने में लिंग असमानता :** सन् 2001 की जनगणना के अनुसार हमारे देश में लिंगानुपात 933 : 1000 है। इस अंतर का कारण लड़कियों को बेकार स्वास्थ्य सुविधाओं का उपलब्ध कराना है। यदि देहात में कोई लड़की बीमार पड़ जाती है तो उसे गाँव के किसी झोला छाप डॉक्टर से दवाई दिलाकर खानापूर्ति कर दी जाती है। कभी-कभी बच्ची का इलाज ठीक न होने के कारण उसकी मौत भी हो जाती है। यदि लड़की बच जाती है तो उसे ठीक इलाज न दिलाकर भगवान भरोसे छोड़ दिया जाता है। हमारे देश में लिंगानुपात दिन-प्रतिदिन घट रहा है। देश के कुछ हिस्सों में गर्भ में ही कन्या भ्रूण की हत्या कर दी जाती है। इसका पता वे पूर्व लिंग परीक्षण के द्वारा लगा लेते हैं।

(v) महिलाएँ घरों में सुबह से लेकर देर रात्रि तक बहुत-सारा कार्य करती हैं, परंतु उनके कार्यों को महत्त्वहीन समझा जाता है। घरों की साफ-सफाई, भोजन पकाना, कपड़े धोना, बच्चों को पढ़ाना, बाजार से सामान खरीदना, पशुओं का दूध दुहना, पशुओं को चारा

काटकर डालना, सिलना तथा खेतों पर काम करना-सभी कार्य घर पर रहकर महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। ये गृहिणियाँ प्रतिदिन 12 घंटों से ज्यादा काम करती हैं, परंतु इनके द्वारा किए गए कार्यों को महत्त्व नहीं दिया जाता क्योंकि ऐसा समझा जाता है कि स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले ये कार्य आसान, नम्र तथा घर पर किए जाने वाले हैं। इन्हें कार्यों अथवा मेहनत करने में नहीं गिना जाता। जिसका कारण यह है कि ये कार्य कमाई के साधन नहीं हैं, इनसे कोई आय प्राप्त नहीं होती।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) महिलाओं की सामाजिक असमानता निम्नलिखित प्रकार से पाई जाती है :

(1) परिवार में : अनेक परिवार लड़कियों की अपेक्षा लड़कों से अच्छा व्यवहार करते हैं। माताएँ अपने बेटों को बेटियों की अपेक्षा अच्छा भोजन, कपड़े, खिलौने और शिक्षा उपलब्ध कराती हैं। महिलाएँ होते हुए भी वे अपनी बेटियों से बुरा व्यवहार करती हैं।

(2) स्वास्थ्य की रक्षा करने में : यदि देहात में कोई लड़की बीमार पड़ जाती है तो उसे झोलाछाप डॉक्टर से दवाई दिलाकर खानापूर्ति कर दी जाती है। कभी-कभी बच्ची का इलाज ठीक न होने के कारण उसकी मौत भी हो जाती है। यदि लड़की बच जाती है तो उसे ठीक इलाज न दिलाकर भगवान भरोसे छोड़ दिया जाता है। देश के कुछ हिस्सों में गर्भ में ही कन्या भ्रूण की हत्या कर दी जाती है।

(3) शिक्षा में : कुछ लोग अपनी बेटियों की अपेक्षा, बेटों को महँगे विद्यालयों में शिक्षा दिलाने के लिए दाखिल कराते हैं तथा बेटों की शिक्षा पर बहुत अधिक पैसा खर्च करते हैं। उनका विश्वास है कि बेटे उनकी दौलत हैं और वे ही उन्हें कमाकर धन देंगे। दूसरी ओर उनके विचार में लड़कियाँ पराया धन होती हैं।

(ii) **मजदूरी के संदर्भ में आर्थिक असमानता :** मजदूरी के मामले में भीम हिलाओंस ेप क्षपातपूर्णअ ौरअ समानताक ाॅ यवहारि कया जाता है। अनेक राज्यों में महिला मजदूरों को पुरुष मजदूरों की अपेक्षा बहुत कम मजदूरी दी जाती है। उन्हें समान कार्य के लिए समान वेतन या मजदूरी नहीं दी जाती। एक पुरुष कुली प्रतिदिन 150 रुपये मजदूरी प्राप्त करता है जबकि महिला कुली को उतने ही कार्य तथा उतने ही समय के लिए 100 रुपये दिए जाते हैं।

पैतृक संपत्ति :

(iii) सरकार ने महिलाओं की असमानता से सुरक्षा के लिए अनेक कार्यक्रम और योजनाएँ चलाई हैं ताकि वे असमानता का शिकार न बन सकें। इनमें से कुछ योजनाएँ निम्नलिखित हैं–

(1)स भीम हिलाओंक ेल ेकसभा,ि वधानसभा,ग्र ामप ंचायतों, तथा स्थानीय निकायों के सदस्यों को चुनने के लिए समान मताधिकार प्रदान किया गया है।

(2) हिंदू उत्तराधिकार कानून के अनुसार महिलाओं को अपने माता-पिता और पति की संपत्ति में बराबर का अधिकार प्रदान किया गया है।

(3) राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना 1992-93 में की गई थी। इससे गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं को 5000रु पयेत कक ाॠ णअ ासानअ ौरि रयायती ब्याजद रोंप र स्वीकृत किया जाता है ताकि वे अपनी जीविका के लिए कोई छोटा-मोटा व्यापारिक काम शुरू कर सकें।

(4) राजनीतिक भागीदारी हेतु स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए कुल सीटों की 1/3 सीट आरक्षित की गई हैं। 15वीं लोकसभा में 58 महिला सांसद हैं।

(5) केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारों ने अनेक कन्या विद्यालयों की स्थापना की है, जहाँ वे बेहतर भविष्य के लिए शिक्षा ग्रहण करती हैं। छात्राओं को निःशुल्क शिक्षा, वजीफा (छात्रवृत्ति), साइकिलें, पुस्तकें तथा मिड-डे मील भी प्रदान किए जाते हैं।

(6) दहेज दुर्घटनाओं, बाल विवाहों, बलात्कार, अपहरण आदि को रोकने के लिए सरकार ने विभिन्न कानून पारित किए हैं।

(7)ह मारेद ेशम ेंम हिलाएँस रकारीअ ौरग ैर-सरकारीक्ष ेत्रोंम ें अति महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हैं, जिससे उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

4. निम्नलिखित के कारण दीजिए :

(i) क्योंकि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लिंग की विभिन्न भूमिकाएँ होती हैं। लिंग की भूमिकाओं को बदला जा सकता है परंतु स्त्री या पुरुष का यौन गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) द्वारा निश्चित होता है और इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

(ii) समय बीतने के साथ-साथ कुछ काम पुरुषों के लिए तथा कुछ काम स्त्रियों के लिए निश्चित हो गए। जैसे–पुरुषों के लिए खेत जोतना, बोझा ढोना, धन कमाना आदि और स्त्रियों के लिए घर में रहकर खाना पकाना, सफाई करना आदि। अतः महिला द्वारा जमीन की जुताई करना एक विचित्र कार्य होगा।

(iii) क्योंकिम हिलाओंद ्वाराघ ारप रि कएज ानेव ालेक ार्यअ ायव ्े साधन नहीं हैं।

(iv) कन्या भ्रूण हत्या तथा लड़कियों को स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध करवाने के कारण हमारे देश में दिन-प्रतिदिन लिंगानुपात घट रहा है।

(v) क्योंकि ऐसे लोगों का विश्वास है कि बेटे उनकी दौलत हैं और वे ही उन्हें धन कमा कर देंगे। जबकि लड़कियाँ पराया धन होती हैं।

4 जनसंचार माध्यम और विज्ञापन की दुनिया को जानिए

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) इनमें से कोई नहीं

(ii) (b) उत्पाद का उपभोग करता है

(iii) (a) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (iv) (c) 2005 ई.

2. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

(iv) असत्य (v) सत्य

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
पत्रिका	प्रिंट मीडिया
रेडियो	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम	1986 ई.
सूचना का अधिकार अधिनियम	2005 ई.
धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है	सामाजिक विज्ञापन
एक कमीज खरीदिए तथा एक मुफ्त पाइए	व्यावसायिक विज्ञापन

4. निम्नलिखित का उत्तर केवल एक शब्द में दीजिए :

(i) अखबार (ii) टीवी (iii) विज्ञापन

(iv) सामाजिक विज्ञापन

(v) उपभोक्ता संरक्षण का अधिनियम

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मीडिया से तात्पर्य उस साधन से है, जिसके माध्यम से हम समाज में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

(ii) विज्ञापनव हप् क्रियाह ै,ि जसकेद ्वाराल ोगोंक ा ध्यानउ त्पादों, वस्तुओं, सेवाओं और विचारों की ओर आकर्षित किया जाता है।

(iii) मीडिया दो प्रकार का होता है—इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और प्रिंट मीडिया।

(iv) टीवी, रेडियो, इंटरनेट, सिनेमाघर, समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, इश्तहारों, कंप्यूटर आदि मीडिया के साधन हैं।

(v) विज्ञापन दो प्रकार का होता है—1. सामाजिक विज्ञापन, 2. व्यवसायिक विज्ञापन।

(vi) जब कंपनियाँ अपने उत्पादों को बेचने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों के माध्यम से व्यापारिक (व्यावसायिक) विज्ञापन दिखाती हैं तो यह प्रक्रिया उपभोक्ता विज्ञापनीकरण कहलाती है।

(vii) जब कोई भी विज्ञापन जनता, सरकार या अन्य किसी एजेंसी से नियंत्रित या प्रभावित नहीं होता, तो इसे स्वतंत्र विज्ञापन कहते हैं।

(viii) 2005 ई. में

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) **मीडिया की आय और व्यय :** मास मीडिया समाचारों और कार्यक्रमों को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए विभिन्न प्रकार की तकनीकों; जैसे—विद्युत, ध्वनि रिकार्डों, ट्रांसमिशन उपग्रहों तथा मानव; जैसे—समाचार वाचक, कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले आदि का प्रयोग करता है। इन सब पर मीडिया को ढेर सारा धन खर्च करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त मीडिया नई-नई तकनीकी सेवा लेने में भी धन खर्च करता है। इन सभी कार्यों के लिए धन प्राप्त करने के लिए मीडिया टीवी पर विशेष ब्रांड वाली विभिन्न वस्तुओं; जैसे—कार, वस्त्र, पेन, कोल्ड ड्रिंक, चॉकलेट, मोबाइल फोन, साबुन वाशिंग पाउडर आदि के विज्ञापन देता है; जिससे उसे अच्छी आय प्राप्त होती है। इसी प्रकार समाचार-पत्र, दैनिक

उपयोग की अनेक वस्तुओं, मशीनों, रोजगार विज्ञप्तियों, निविदाओं, वैवाहिक विज्ञापनों, प्रवेश सूचनाओं आदि को विज्ञापित करता है। ये सभी इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया की आय के स्रोत हैं। इस प्रकार विज्ञापनों से मीडिया को निरंतर आय प्राप्त होती रहती है।

(ii) **मीडिया की आचार संहिता और जवाबदेही :** मीडिया की राष्ट्र और इसके नागरिकों से संबंधित कुछ निश्चित आचार संहिता और जवाबदेही है, जिनका पालन मीडिया को अवश्य करना चाहिए। मीडिया को व्यापारिक घरानों, सरकार या सत्ताधारी दल के किसी बड़े नेता के दबाव और प्रभाव में नहीं आना चाहिए। इसे स्वतंत्रतपूर्वक ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ अपना काम करना चाहिए। यह मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह खबरों तथा घटनाओं कोइ ‍मानदारीअ ौरस्‍ पष्टतापूर्वकि दखाएत थाअ खबारोंम ‍ेंछ ापे। उसका यह भी कर्तव्य है कि समय-समय पर सरकार जनता की भलाई के लिए जो योजनाएँ, कार्यक्रम आदि बनाती है, उन्हें जनता के सामने लाए। मीडिया को उन बेहूदे चैनलों और कार्यक्रमों को बंद करना चाहिए, जिन्हें परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर न देख सकें। कुछ समाचार पत्र-पत्रिकाएँ महिलाओं के अश्लील फोटो छापते हैं, उन पर तुरंत रोक लगानी चाहिए। समाचार-पत्रों को अपने पूर्ववर्ती संस्करण में गलतियों और गलत सूचनाओं हेतु एकदम आगे के संस्करण में बिना किसी देरी के गलतियों का शुद्धीकरण प्रकाशित करना चाहिए। मीडिया को लोगों की गोपनीयता को भंग नहीं करना चाहिए। इसे राष्ट्र और समाज की सुरक्षा करनी चाहिए। मीडिया को घटनाओं को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए असभ्य, भद्दे तथा अश्लील चित्रों, मुखकृतियों, शब्द योजनाओं आदि का सहारा नहीं लेना चाहिए।

(iii) सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के महत्त्वपूर्ण प्रावधान निम्नलिखित हैं–

(1) प्रत्येक सार्वजनिक प्रतिष्ठान (सरकार द्वारा स्थापित नियंत्रित या अनुदानित संस्था) को हिसाब का लेखा-जोखा रखना चाहिए ताकि समयानुसार उसे किसी भी सूचना के तहत आसानी से बिना देरी के उपलब्ध कराया जा सके।

(2) प्रत्येक सार्वजनिक प्रतिष्ठान को अपने संगठन, कार्यों, कर्त्तव्यों, महत्त्वपूर्ण नीतियों और निर्णयों तथा व्यय आदि के विषय में सूचनाएँ प्रकाशित करनी चाहिए।

(3) यदि कोई व्यक्ति सार्वजनिक सूचना अधिकारी, प्रशासनिक प्राधिकरण इकाइयों या कर्त्तव्यों के विषय में या किसी सरकारी निर्णय या काम की देरी या न होने के विषय में सूचना प्राप्त करना चाहता है तो उस व्यक्ति को सूचना उपलब्ध करानी पड़ेगी।

(iv) सूचना का अधिकार अनिधियम के लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) यह सरकारी दस्तावेजों में दिए गए बिंदुओं को प्रमाणित करने में सहायक है।

(2) यह लोगों को शोषण से बचाता है।

(3) यह व्यक्ति में सरकारी और निजी अभिकरणों के द्वारा किए गए अनेक गलत कार्यों का विरोध करने के लिए नैतिक मूल्यों का निर्धारण करता है।

(4) यह नागरिकों को व्यक्तिगत रूप से विवरणों का परीक्षण करके अधिकारियों द्वारा किए गए गलत कार्यों को रोकने के लिए सशक्त करता है।

(5) यह सरकारी कर्मचारियों और निजी संगठनों द्वारा उत्पन्न अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार को पारदर्शिता के माध्यम से मिटाने का प्रयास करता है।

(v) अपनेउ त्पादब ‍ेचनेव ‍ेर्ि लएर्ि नर्माताअ ौरउ त्पादकर्ि वज्ञापनक ी सहायतास ‍ेउ पभोक्ताओंक ो ल ुभातेह ‍ैं।इ नर्ि वज्ञापनोंम ‍ेंब्र ांडिड उत्पादों के गुण, मूल्य, स्कीम आदि को दर्शाया जाता है। इन विज्ञापनों को व्यावसायिक विज्ञापन कहते हैं। इसके अतिरिक्त

वर्गीकृत वैवाहित विज्ञापन, विभिन्न कार्सों में प्रवेश सूचनाएँ, संस्थाओं के नाम-पते, नौकरियों (सरकारी और गैर-सरकारी) जमीन,ज ायदाद,प लॉट,द ुकानों,प ार्म,म कानों,क ोठियों,प र्यटन कार्यक्रमों, चिकित्सकीय सेवाओं आदि के विज्ञापन भी व्यावसायिक विज्ञापनों के अंतर्गत आते हैं।

(vi) **उपभोक्ता विज्ञापनीकरण :** जब कंपनियाँ अपने उत्पादों को बेचने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों के माध्यम से व्यापारिक (व्यावसायिक) विज्ञापन दिखाती हैं तो यह प्रक्रिया उपभोक्ता विज्ञापनीकरण कहलाती है।

उपभोक्तावाद : उपभोक्ताओं को पदार्थों एवं वस्तुओं को हानिकारक बताने, निम्न गुणवत्ता, गुमराह करने वाली तथा छिपी हुई सूचनाएँ, बहकाना, अत्यधिक कीमत अंकित करना आदि कमियों से सावधान करने को उपभोक्तावाद कहते हैं।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) एक प्रजातांत्रिक देश में मीडिया एक उल्लेखनीय और अतिमहत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह लोगों को सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों से अवगत कराता है। यदि लोग इन कार्यक्रमों और नीतियों को पसंद नहीं करते हैं तो वे प्रश्न पूछकर, संबंधित अधिकारी या मंत्री को पत्र लिखकर, समाचार-पत्रों में आर्टिकल लिखकर, हस्ताक्षर अभियान चलाकर आदि के द्वारा अपना विरोध प्रकट कर सकते हैं। जब मीडिया की खबरें जनता, सरकार या अन्य एजेंसी किसी से नियंत्रित या प्रभावित नहीं होती तो इसे स्वतंत्र मीडिया कहते हैं। केवल स्वतंत्र मीडिया ही संतुलित रिपोर्ट लिख सकता है। स्वतंत्र मीडिया बिना समावेशों के खबरों को प्रकाशित या संचारित करता है। इसीलिए प्रजातंत्र में स्वतंत्र मीडिया अतिमहत्त्वपूर्ण है। अत: मीडिया द्वारा उपलब्ध कराई गई खबर विश्वनसीय होनी चाहिए, न कि पूर्वाग्रह पर आधारित।

कभी-कभी सरकार सेंसरशिप/प्रकाश नियंत्रण के माध्यम से मीडिया की खबरों या टीवी पर दिखाए जाने वाले दृश्यों को नियंत्रित करती है। सरकार इस कार्य को राष्ट्रीय अशांति या संकटकाल के समय करती है। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया को स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता, उसकी स्वतंत्रता पर रोक लगा दी जाती है।

(ii) सामाजिक मूल्यों या समस्याओं संबंधी विज्ञापनों को सामाजिक विज्ञापन कहते हैं। सरकारी और निजी अभिकरणों का यह नैतिक दायित्व है कि वे लोगों को उनके पैसों, स्वास्थ्य, संपत्ति, पर्यावरण तथा हानिकारक वस्तुओं के प्रति सावधान करे। उदाहरण के लिए, सिगरेट की डिब्बी तथा गुटखों के पाउचों पर स्वास्थ्य की रक्षा के लिए क्रमश: इस प्रकार की चेतावनी लिखी रहती है–'धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है', 'तंबाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'। बसों में लिखे 'शरीर का कोई भाग खिड़की से बाहर न निकालें', 'गति 40 किमी प्रति घंटा', स्कूल में 'फर्श पर मत थूकिए', सड़कों पर 'सावधानी से चलिए', 'अपने बाएँ हाथ पर चलें', 'धीरे चलिए पुल कमजोर है' आदि इसी प्रकार के विज्ञापन हैं। इस तरह से हम देखते हैं कि सामाजिक विज्ञापनों का प्रयोग सामाजिक बुराइयों; जैसे–बाल विवाह, बालश्रम, बेरोजगारी, गरीबी, सांप्रदायिक अशांति, दहेज, खाद्य पदार्थों में मिलावट आदि को मिटाने तथा परिवार नियोजन, रोजगार कार्यक्रमों एवं राष्ट्रीय एकता, अखंडता आदि को प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है।

(iii) **मीडिया की तकनीकियाँ :** मीडिया के साधनों में रेडियो, टेलीविजन, अखबार, सिनेमाघर, मॉल आदि प्रमुख हैं। टीवी, रेडियो तथा कंप्यूटर स्क्रीन पर संचालित होने वाली इंटरनेट प्रणाली बिजली से चली है, इसीलिए इन्हें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहते हैं। यह खबरों और घटनाओं को न केवल टीवी या कंप्यूटर पर दिखाता

है बल्कि उसका शब्दों में वर्णन भी करता है। समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ देश-विदेश की खबरों को बड़े पैमाने पर प्रकाशित करते हैं, जिन्हें प्रिंट मीडिया कहते हैं। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में प्रयुक्त होने वाले मशीनों में उन्नत तकनीकी के कारण आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। उपग्रहों और केबिल के कारण विश्व के दूसरे कोने में घटने वाली घटनाओं और समाचारों को हम कुछ ही सेकंडों में टीवी या इंटरनेट प्रणाली के माध्यम से कंप्यूटरों पर देख सकने में समर्थ हुए हैं। अन्य देशों की फिल्में, कार्यक्रमों, घटनाओं आदि को हम अपने टीवी पर तकनीकी विकास के कारण देख पाते हैं।

4. निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या कीजिए :

(i) **सेंसर (प्रकाशन नियंत्रण) :** सेंसरशिप के माध्यम से मीडिया की खबरों या टीवी पर दिखाए जाने वाले अश्लील दृश्यों को नियंत्रित किया जाता है।

(ii) **अभियान :** किसी के विरूद्ध चलाया जाने वाला आंदोलन अभियान कहलाता है।

(iii) **मिलावट :** वस्तुओं में उन्हें गुणवत्ताहीन करने के लिए हानिकारक चीजें मिलाना, मिलावट कहलाता है।

(iv) **उपभोक्तावाद :** उपभोक्ताओं को पदार्थों एवं वस्तुओं को हानिकारक बताने, निम्न गुणवत्ता, गुमराह करने वाली तथा छिपी हुई सूचनाएँ, बहकाना, अत्यधिक कीमत अंकित करना आदि कमियों से सावधान करने को उपभोक्तावाद कहते हैं।

(v) **स्थानीय मीडिया :** स्थानीय मीडिया के अंतर्गत बहत-से स्थानीय लोग किसानों को परिष्कृत बीजों, उर्वरकों, कृषि यंत्रों उत्पादन के मूल्यों आदि के बारे में जानकारियाँ और परामर्श देने के लिए अपना खुद का अखबार प्रकाशित करते हैं।

5 बाजार : हमारे क्रय केंद्र

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) बाजार (ii) (b) फुटकर विक्रेता

(iii) फेरीवाला (iv) (c) थोक विक्रेता

(v) (b) जनरल स्टोर

2. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए :

'अ'	'ब'
पुष्कर पशु मेला	राजस्थान
बकेवर पशु मेला	उत्तर प्रदेश
सोनपुर पशु मेला	बिहार
सुनार की दुकान	खुदरा व्यापारी
परचूनिया	पारिश्रमिक के बदले सेवाएँ

3. सत्य या असत्य लिखिए :

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

(iv) सत्य (v) सत्य (vi) असत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अलमारियों व रैक (ii) 100

(iii) खुदरा व्यापारी, थोक व्यापारियों (iv) थोक व्यापारियों

(v) बाजार

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) बाजार वह स्थान है, जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय

किया जाता है।

(ii) व्यापारी जो बड़ी मात्रा में सामान/वस्तुओं को बेचते हैं, थोक विक्रेता या व्यापारी कहलाते हैं।

(iii) व्यापारी जो कम मात्रा में सामान/वस्तुओं को बेचते हैं, खुदरा विक्रेता या व्यापारी कहलाते हैं।

(iv) साप्ताहिक बाजार सप्ताह के किसी एक निश्चित दिन को लगते हैं।

(v) थोक व्यापारी सामान्यत: एक या दो वस्तुओं को बेचते हैं।

2. चार पंक्तियों में उत्तर :

(i) वे बाजार, जहाँ वस्तुएँ खुली अवस्था में, एक या कुछ की मात्रा में बेची जाती हैं, खुदरा बाजार कहलाते हैं। साप्ताहिक पैठ बाजार, गली-मुहल्ले की दुकानें, बस स्टॉप तथा रेलवे स्टेशन पर लगे स्टॉल, मॉल, सुपर मार्केट आदि खुदरा बाजार के ही अंग हैं। इन बाजारों में वस्तुओं को थोक व्यापारियों की अपेक्षा थोड़े ज्यादा लाभ पर बेचा जाता है।

(ii) कई मंजिला आधुनिक शैली में बना विक्रय स्थल जहाँ मनोरंजन के लिए कई-कई फिल्में भी दिखाई जाती हैं, मॉल कहलाता है। मॉल लगभग 2000 वर्ग गज में बनी कई मंजिली, हवादार, वातानुकूलित, कई दुकानों वाली बड़ी इमारत होती है। मॉल की दुकानों में अधिकतर ऊँची कीमत वाले ब्राण्डिड आइटम बेचे जाते हैं। उदाहरण के लिए, रिबॉक, लिबर्टी, वुडलैंड, रेड चीफ आदि ब्रांडों के जूते-चप्पल, पीटर इंग्लैंड, वीनस, एडीडास, टीएनजी, किलर आदि ब्रांडों के कपड़े आदि।

(iii) **थोक बाजार की विशेषताएँ :**

(1) थोक व्यापारी सामान्यत: एक या दो वस्तुओं को बेचते हैं।

(2) उत्पादक या निर्माता और थोक व्यापारी के बीच एजेंट एक कड़ी है।

(3) थोक व्यापार में व्यापारी को बड़े पैमाने पर पूँजी निवेश करना पड़ता है।

(4) थोक व्यापारी उत्पादकों, निर्माताओं तथा छोटे व्यापारियों के बीच दलाल का काम करते हैं।

(5) थोक व्यापारी उपभोक्ताओं से सीधे जुड़े नहीं होते।

(6) थोक व्यापारी सरकार को व्यापार कर, बिक्रीकर तथा आयकर चुकाते हैं।

(7) थोक व्यापारियों को बैंक ऋण तथा ओवरड्राफ्ट की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। इसके अतिरिक्त सरकार उन्हें स्टॉक करने की भी छूट देती है।

(iv) वह स्थान, जहाँ गाय, भैंस, भैंसों, बछड़ों, कटडों, बकरियों, भेड़ों, ऊँटों, गधों, घोड़ों आदि का क्रय-विक्रय किया जाता है, पशु बाजार कहलाता है। ये बाजार अधिकतर क्षेत्रवार एवं निश्चित दिन को निश्चित स्थान पर लगते है। अधिकांश बाजार गाँवों में सप्ताह के किसी निश्चित दिन लगते हैं। यहाँ पशुओं को व्यापारी या किसान दूर-दूर से लाते हैं। पशु बाजार को पशुओं की पैठ भी कहते हैं। इन बाजारों में थोक या खुदरा व्यापारी जैसे बातें नहीं पाई जातीं।

(v) बाजारों की एक श्रृंखला होती है, जिससे होकर सामान हम तक पहुँचता है। उत्पादक जैसे किसान सब्जियाँ उगाते हैं, वे थोक व्यापारियों को अपनी उपज बेचते हैं तथा थोक व्यापारी खुदरा व्यापारी को, और खुदरा व्यापारी से हम सब्जी खरीद लेते हैं। इस प्रकार सामान हम तक पहुँचता है।

3. 10 पंक्तियों में उत्तर :

(i) आधुनिक युग में गाँव, कस्बों और शहरों की गलियों में बनी दुकानों को गली की दुकानें कहते हैं। इन्हें पड़ोस की दुकानों के नाम से भी जानतेह ैं।इ नद ुकानदारोंक ेख ुदरा० यापारीक हतेह ैंक योंकिय े दुकानदार थोक व्यापारियों से माल खरीदते हैं। इन दुकानों में दैनिक

उपभोग की वस्तुएँ; जैसे–परचून का सामान, सब्जियाँ, आटा, दूध, कोल्ड ड्रिंक, बिजली का सामान, गन्ने का रस, दवाइयाँ, फलों का रस, कॉस्मेटिक्स आदि की बिक्री होती है। इसके अतिरिक्त सामान न बेचने वाले दुकानदार भी, जिन्हें मैकेनिक कहा जाता है, हमें अपनी सेवाएँ दकर अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं। जैसे–मोटर साइकिल, स्कूटर, कार, साइकिल, इंजन, बिजली के उपकरणों, सिलाई मशीन, गैस के चूल्हे, स्टोव, रुई धुनने की मशीन, आटा चक्की आदि की मरम्मत करने वाले इसी प्रकार के दुकानदार हैं। डॉक्टर, कोचिंग देने वाले तथा ट्यूशन पढ़ाने वाले भी एक तरह से गलियों और बाजारों में अपनी दुकानें चलाते हैं। फेरीवाले व ठेलों पर सामान बेचने वाले भी गली-मुहल्ले के दुकानदार माने जाते हैं। हर वर्ग का उपभोक्ता इन दुकानदारों की सेवाएँ लेता है या उनसे अपनी जरूरत का सामान क्रय करता है। ये दुकानदार सामान्यत: अपने ग्राहकों को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं तथा उन्हें सामान उधार देने में जरा भी नहीं हिचकते। कुछ ग्राहक महीने के अंत में इन दुकानदारों का हिसाब चुकाते हैं, क्योंकि महीने के अंत में ही उन्हें वेतन या मजदूरी मिल पाती है।

(ii) शॉपिग बिना बाजारों के भी संभव है। कछ निर्माता या व्यापारी कच्चा माल या मशीनरी के पार्ट्स उनके उत्पादकों या कारखाना मालिकों से टेलीफोन, मोबाइल फोन या इंटरनेट के माध्यम से खरीदते हैं। उदाहरण के लिए एक कार निर्माता कंपनी इंजन, धातु की चादरें, पहिए, धुरी, टायर, पेट्रोल आदि अन्य कारखानों के मालिकों से खरीदती है। उनका सामान का क्रय-विक्रय बाजारों में होते हुए नहीं दिखाई पड़ता जबकि क्रय-विक्रय अवश्य होता है। इस तरह के क्रय-विक्रय को बिना बाजारों के खरीददारी कहते हैं। इसके अतिरिक्त थोक व्यापारी और खुदरा व्यापारी अपने ग्राहकों की सेवा फोन और मोबाइल पर भी करते हैं। वे अपने ग्राहकों की

सामान की आवश्यकताओं को फोन पर नोट करते हैं तथा सामान पैक करके अपने डिलीवरी ब्वॉय या डिलीवरी मैन द्वारा उसे ग्राहक के घर पहुँचा देते हैं।

4. निम्नलिखित का उचित कारण बताइए :

(i) क्योंकि इन बाजारों में ग्राहक दुकानदारों से खूब मोल-भाव करते हैं तथा स्थायी बाजारों की अपेक्षा इन बाजारों में सस्ती दरों पर सामान उपलब्ध हो जाता है।

(ii) प्राय: ब्राण्डिड वस्तुएँ मॉलों में या बड़े-बड़े शॉपिंग कॉम्पलेक्सों में ही मिलती हैं। इन ब्राण्डिड वस्तुओं के उत्पादन में बहुत अधिक व्यय होने के कारण तथा इन मालों व शॉपिंग कॉम्पलेक्सों में दुकानों के बहुत अधिक किराए व व्यय होने के कारण ब्रांडिड वस्तुएँ ऊँची कीमत पर बेची जाती हैं।

(iii) राज्य सरकार विपणन के लिए प्रत्येक शहर में थोक बाजार (मण्डियाँ) स्थापित करती है, जिन्हें नवीन मण्डियाँ कहते हैं। प्रत्येक मंडी का नियंत्रण मंडी सचिव द्वारा किया जाता है।

(iv) क्योंकि अधिकतर पशु गाँवों के किसानों या व्यापारियों द्वारा पाले जाते हैं। अत: पशु बाजार सामान्यत: गाँवों में लगते हैं।

आदर्श प्रश्न-पत्र-I

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (a) पर्यावरण (ii) (a) स्पांतरित चट्टानों से

(iii) अब्दुल हमीद लाहौरी

(iv) (c) मुहम्मद-बिन-तुगलक

(v) (a) तमिलनाडु (vi) (a) उत्तर प्रदेश

(vii) गुगलीमो मारकोनी

2. सत्य या असत्य बताइए :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) असत्य (vi) सत्य

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) जलीय भाग (ii) चारों (iii) उच्च

(iv) दिशा (v) भौतिक (vi) प्रसारण

4. निम्नलिखित में अंतर बताइए:

(i) जैविक घटक और अजैविक घटक :

जैविक घटक	अजैविक घटक
जैविक कारकों में पौधों और मानव सहित सभी जंतुओं को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें जैविक घटक कहा जाता है।	अजैविक कारकों में वायु, जल, स्थल, धूप आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन्हें अजैविक घटक कहते हैं।

(ii) पायबोस और सिजदा :

पायबोस	सिजदा
सुल्तान के पैरों को चूमने की प्रथा पायबोस थी।	सुल्तान के पैरों के सामने सिर कोझ ुकाकरज मीनस ेछ ूनेक ी प्रथा सिजदा थी।

(iii) विधानसभा तथा विधानपरिषद

क्र.सं.	विधानसभा	विधान परिषद
1.	विधानसभा को निम्न सदन कहते हैं।	विधान परिषद को उच्च सदन कहते हैं।
2.	विधानसभा में 525 से अधिक और 60 से कम सदस्य नहीं हो सकते।	विधान परिषद के कुल सदस्य विधान सभा के कुल सदस्यों की संख्या के 1/3 होते हैं, परंतु ये 40 से कम नहीं हो सकते।
3.	विधानसभा का कार्यकाल 5 वर्ष है	विधानपरिषद एक स्थायी सदन है और इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष बाद पदमुक्त होते रहते हैं।

(iv) एन.सी.ई.आर.टी और एस.सी.ई.आर.टी

क्र.सं.	एन.सी.ई.आर.टी	एस.सी.ई.आर.टी
1.	यह राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद है।	यह राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद है।
2.	यह एक केंद्रीय शिक्षा संस्था है, जो 1 से 12 तक की कक्षाओं की पुस्तकों का हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशन करती है।	यह राज्य स्तर पर शैक्षिक उन्नयन के कार्यों को संपादित करती है।

(v) वित्त विधेयक और साधारण विधेयक

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) मनुष्य के चारों ओर पायी जाने वाली प्राकृतिक, परिस्थितियाँ पर्यावरण कहलाती हैं।

(ii) ज्वालामुखीश ािक्वाकारप र्वतह ै,ि जसकेव ाेटरस ेल ावाग ैसोंव े साथ बाहर आता है।

(iii) हर्ष को पुलकेशिन द्वितीय ने पराजित किया।

(iv) सिकन्दर लोदी ने।

(v) बिना किसी सामाजिक हैसियत के सभी वयस्क नागरिकों को मत देने का अधिकार सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार कहलाता है।

(vi) ऐसे राज्य, जिनमें विधान परिषद तथा विधानसभा दोनों सदन होते हैं, द्विसदनात्मक राज्य कहलाता है।

(vii) टीवी, रेडियो, समाचार पत्र।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) जैवमंडलप र्यावरणक ास बसेम हत्त्वपूर्णक्ष ेत्रह ै।प ौधेअ ौरज ंतु दोनों एक साथ मिलकर जैवमण्डल का निर्माण करते हैं। यह पृथ्वी का एक संकरा क्षेत्र है। यह जीवों को आवास प्रदान करता है। जैव क्षेत्रों का विकास पौधे और जंतुओं के अनुसार होता है। भूमि, वायु और जल एक-दूसरे से ताल बैठाकर जीवों को सहारा प्रदान करते

हैं।

(ii) वायुमण्डलीय ताप और दाब के कारण आग्नेय और अवसादी चट्टानों में परिवर्तन होने के कारण बनने वाली नई प्रकार की चट्टानें कायांतरित चट्टानें कहलाती हैं। उदाहरण—चीका मिट्टी से क्लेट, चूना पत्थर से संगमरमर, बलुआ पत्थर से क्वाट्र्ज आदि।

(iii) मध्यकालीन भारत में बाबर तथा जहाँगीर ने चित्रकला में बहुत रुचि ली। उनके शासनकाल में चित्रकला का बहुत विकास हुआ। उनके समय में तैयार की गई पेंटिंगों से पता चलता है कि वे लोग चित्रकला के प्रति गहरा रूझान रखते थे। उनकी चित्रकारी के विषय सुंदर महिलाएँ, पेड़-पौधे, लताएँ तथा पशु हैं। इन चित्रों से रंग-योजनाओं का भी पता चलता है। उस समय की अधिकांश धार्मिक पुस्तकों में छोटे-छोटे चित्रों का प्रयोग किया गया था। जहाँगीर स्वयं अपने समय का एक दक्ष चित्रकार था तथा उसे ऐतिहासिक चित्रों का इकट्ठा करने का शौक था।

(iv) देश के नागरिकों में जाति, वंश, कुल और ऊँच-नीच के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को असमानता कहते हैं। भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में अनेक संवैधानिक उपचारों के होते हुए भी समाज में बहुत-सी असमानताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। असमानता के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

जातिवाद या जाति व्यवस्था : भारत में अनेक स्थान ऐसे हैं, जहाँ दलित उच्च जातियों की चारपाई पर नहीं बैठ सकते। दलित जातियों और जनजाति समुदायों के बच्चों के साथ निम्न जाति का होने तथा गरीबी के कारण असमानता का व्यवहार किया जाता है।

(v) **राज्य सचिवालय :** राज्य का प्रधान राज्यपाल होता है तथा राज्य प्रशासन की वास्तविक कार्यकारी शक्तियाँ मुख्यमंत्री में निहित होती हैं। वह इस कार्य में अपने मंत्रिमंडल में सम्मिलित मंत्रियों का सहयोग प्राप्त करता है। इन मंत्रियों के अधीन अनेक प्रकार के

विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग को चलाने में मंत्री की सहायता के लिए एक सचिव होता है, जो विभाग के मंत्री का मुख्य सलाहकार होता है। वह विभाग की योजनाओं और नीतियों के विषय में मंत्री को अवगत कराता है। सामान्यत: सचिव भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) का सदस्य होता है। उसे अपने क्षेत्र के कार्यों का गहन अनुभव होता है। उसकी सहायता के लिए कई अधीनस्थ अधिकारी होते हैं।

(vi) **टेलीफोन :** टेलीफोन की सुविधा होने से हम घर बैठे ही देश-विदेश में अपने मित्रों व रिश्तेदारों से बातें कर सकते हैं।

मोबाइल फोन : मोबाइल फोन की सुविधा होने से हम घर अथवा घर से बाहर भी कहीं से भी अपने मित्रों व रिश्तेदारों को फोन कर सकते हैं। इसके द्वारा हम एस.एम.एस. (मैसेजस) भी भेज सकते हैं।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) चोल राजा हिंदू धर्म के अनुयायी थे। वे शिव और विष्णु को ईश्वर के रूप में पूजते थे। उस समय वैष्णव धर्म बहुत लोकप्रिय हो गया था। इसके अतिरित बौद्ध एवं जैन धर्म भी समाज में प्रचलित थे। चोल शासकों ने इस्लाम तथा ईसाई धर्म के मामलों में कोई दखलंदाजी नहीं की थी।

राजशाही परिवार, ब्राह्मण तथा व्यापारी वर्ग समाज में वैभवपूर्ण एवं प्रतिष्ठित जीवनयापन करते थे। समाज में उनका विशेष स्थान था। किसान, मजदूर तथा दासों की दशा ज्यादा अच्छी नहीं थी। संपूर्णस माजच ारव र्णोंम ेंि वभाजितथ ाा-ब्राह्मण,क्ष ात्रिय,व ैश्य और शूद्र। शूद्रों की दशा अच्छी नहीं थी और उन्हें अछूत समझा जाता था। उनके मंदिर प्रवेश तथा धार्मिक उत्सवों में भाग लेने पर रोक थी। उन्हें विद्यालयों में भी प्रवेश नहीं लेने दिया जाता था। समाज में नारी की स्थिति तथा दशा सम्मानजनक थी। समाज में

बालर्ि ववाहत थास तीप्रथाय दा-कदार्ि दखाईद ेतेथ ेा।म ंदिरोंम ें देवदासीप्रथा,न ारियोंव ेदद ेहश ोषणक ाम ाध्यमथ ाी।स माजम ें महिला दास भी थीं।

(ii) मिड-डे मील योजना के अंतर्गत विद्यालयों में बच्चों को मध्यावकाश में नि:शुल्क भोजन प्रदान किया जाता है। इसके लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) इस कार्यक्रम को विद्यालय में बच्चों की संख्या में वृद्धि करने हेतु लागू किया गया है ताकि जो बच्चे स्कूल में पढ़ने नहीं आते हैं, वे भोजन मिलने के कारण स्कूल में पढ़ने जरूर आएँगे।

(2) आधी छुट्टी (मध्यावकाश) में बच्चे भोजन खाने के लिए घर जाते हैं और फिर वापस विद्यालय नहीं आते। अत: मिड-डे मीलक ार्यक्रमव ेदद ्वाराब च्चोंक ोम ध्यावकाशम ेंघ ारज ानेस े रोका गया।

(3) इस कार्यक्रम का एक लाभ यह भी है कि सभी जातियों और धर्मों के बच्चे एक साथ एक ही पंक्ति में बैठकर बिना किसी भेदभाव के खाना खाते हैं।

(4) इस कार्यक्रम के द्वारा कुपोषण को खत्म किया जा रहा है।

(iii) राज्य सरकार बच्चों की शिक्षा का प्रबंध करती है। साथ ही बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा मुहैया कराना राज्य का नैतिक दायित्व है। निरक्षरता की दर को घटाने के लिए राज्य सरकारों ने बच्चों को स्कूलों के प्रति आकर्षित करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया है। सरकारी और अनुदानित (सहायता प्राप्त) विद्यालयों में फीस बहुत ही कम है, जिसे गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले माता-पिता के बच्चे आसानी से चुका सकते हैं। इसके अलावा सरकार वजीफे, अनुदान तथा ऋण सुविधाएँ प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाले बच्चों को उपलब्ध कराती है। अधिकतर सभी राज्य सरकारें कक्षा 1

से कक्षा 8 तक बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा तथा पुस्तकें उपलब्ध कराती हैं। प्रत्येक राज्य में सेकेंडरी स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट बोर्ड स्थापित किए गए हैं। पूरेद ेशम ेंस ी.बी.एस.ई.त थाअ ाई.सी.एस.सी.ब ोर्डअ ंग्रेजीत था हिंदी माध्यमों से कक्षा 1 से 12 तक की शिक्षा का प्रबंध करते हैं। राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) एक केंद्रीय शिक्षा संस्था है, जो 1 से 12 तक की कक्षाओं की पुस्तकों का हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशन करती है। यह संस्था देश के चारों कोनों में स्थित विद्यालयों के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण यथा बी.एड. तथा एम.एड. कोर्सों का आयोजन करती है। राज्य स्तर पर राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद भी एन.सी.ई.आर.टी. की भाँति शैक्षिक उन्नयन के कार्यों को संपादित करती है।

(iv) एक प्रजातांत्रिक देश में मीडिया एक उल्लेखनीय और अतिमहत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह लोगों को सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों से अवगत कराता है। यदि लोग इन कार्यक्रमों और नीतियों को पसंद नहीं करते हैं तो वे प्रश्न पूछकर, संबंधित अधिकारी या मंत्री को पत्र लिखकर, समाचार-पत्रों में आर्टिकलि लिखकर,ह स्ताक्षरअ भियानच लाकरअ ादिव ेद ्वारा अपना विरोध प्रकट कर सकते हैं। जब मीडिया की खबरें जनता, सरकार या अन्य एजेंसी किसी से नियंत्रित या प्रभावित नहीं होती तो इसे स्वतंत्र मीडिया कहते हैं। केवल स्वतंत्र मीडिया ही संतुलित रिपोर्ट लिख सकता है। स्वतंत्र मीडिया बिना समावेशों के खबरों को प्रकाशित या संचारित करता है। इसीलिए प्रजातंत्र में स्वतंत्र मीडिया अतिमहत्त्वपूर्ण है। अत: मीडिया द्वारा उपलब्ध कराई गई खबर विश्वनसीय होनी चाहिए, न कि पूर्वाग्रह पर आधारित।

कभी-कभी सरकार सेंसरशिप/प्रकाश नियंत्रण के माध्यम से

मीडिया की खबरों या टीवी पर दिखाए जाने वाले दृश्यों को नियंत्रित करती है। सरकार इस कार्य को राष्ट्रीय अशांति या संकटकाल के समय करती है। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया को स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता, उसकी स्वतंत्रता पर रोक लगा दी जाती है।

आदर्श प्रश्न-पत्र-II

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (d) ये सभी

(ii) (c) कैंचियों और खेल के सामान के लिए

(iii) (a) हम्पी में (iv) (a) जेम्स वॉट ने

(v) (b) गेहूँ की खेती (vi) (c) 933 : 1000

2. निम्नलिखित को सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
गल्फ स्ट्रीम	गर्म जलधारा
लेब्राडोर	ठंडी जलधारा
गीजर	भूमिगत जल का स्रोत
क्यूरोसिवो	उत्तरी प्रशांत महासागर
निम्न ज्वार	भाटा

3. सत्य या असत्य बताइए :

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य

(iv) सत्य (v) सत्य (vi) सत्य

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) पतझड़ (ii) टी.जी.वी (iii) चोल शासकों

(iv) कठिन (v) साधन

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) समुद्र का जल खारा होता है, जिसमें मुख्य रूप से नमक (सोडियम क्लोराइड) घुला रहता है।

(ii) अफ्रीका।

(iii) शेरशाह सूरी ने।

(iv) गोंड एक जनजाति थी, जो मध्य एशिया के जंगलों, विशेषकर महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और उड़ीसा के पश्चिमी भागों में निवास करती थी।

(v) सामाजिक पर्यावरण में पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार और समानताओं के संदर्भ में प्रयुक्त कारक लिंग कहलाता है।

(vi) मीडिया से तात्पर्य उस साधन से है, जिसके माध्यम से हम समाज में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) सुनामी एक जापानी शब्द है, जिसका तात्पर्य है कि वायु से समुद्रों में उठने वाली विकराल लहरें। समुद्र से इन उठने वाली इन विकराल लहरों से काफी बड़ी संख्या में जान-माल को हानि पहुँचती है।

(ii) लद्दाख के ऊँचाई वाले पर्वतीय क्षेत्रों में सेब, खुमानी तथा अखरोट की पैदावार खूब होती है। यहाँ के लोग जौ, आलू, शलगम, मटर तथा बीन्स की खेती करते हैं।

(iii) अबुल फजल, फैजी, मिर्जा अजीज कोका, टोडरमल, अब्दुर्रहीम, खान-ए-खाना, राजा मानसिंह, राजा बीरबल, राजा भगवानदास तथा तानसेन अकबर के दरबार में नौ रत्न थे।

(iv) रानी दुर्गावती महोबा के राजपूत राजा की पुत्री थी, जो गढ़ कटंगा के गोंड राजा संग्रामशाह के पुत्र दलपतशाह से ब्याही थी। रानी का युद्ध अकबर से 1565 ई. में हुआ था लेकिन वह अकबर के

सेनापति आसफ खाँ के द्वारा पराजित कर दी गई थी।

(v) सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के महत्त्वपूर्ण प्रावधान निम्नलिखित हैं–

(1) प्रत्येक सार्वजनिक प्रतिष्ठान (सरकार द्वारा स्थापित नियंत्रित या अनुदानित संस्था) को हिसाब का लेखा-जोखा रखना चाहिए ताकि समयानुसार उसे किसी भी सूचना के तहत आसानी से बिना देरी के उपलब्ध कराया जा सके।

(2) प्रत्येक सार्वजनिक प्रतिष्ठान को अपने संगठन, कार्यों, कर्त्तव्यों, महत्त्वपूर्ण नीतियों और निर्णयों तथा व्यय आदि के विषय में सूचनाएँ प्रकाशित करनी चाहिए।

(3) यदि कोई व्यक्ति सार्वजनिक सूचना अधिकारी, प्रशासनिक प्राधिकरण इकाइयों या कर्त्तव्यों के विषय में या किसी सरकारी निर्णय या काम की देरी या न होने के विषय में सूचना प्राप्त करना चाहता है तो उस व्यक्ति को सूचना उपलब्ध करानी पड़ेगी।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) समुद्री जलधाराएँ मानव जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित करती हैं, जिनमें प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं–

(1) जलधाराएँ उन क्षेत्रों की जलवायु को प्रभावित करती हैं, जिनसे लगे तटों से होकर ये बहती हैं। गर्म जलधारा; जैसे-गल्फ स्ट्रीम अपनी उत्पत्ति के क्षेत्र के ताप को बढ़ा देती है। ठंडी धारा अपनेक्ष ेत्रक ोि हमम ेंप रिवर्तितक रद ेतीह ै।ल ेब्राडोरज लधारा ग्रीनलैण्ड के पास स्थित महासागर के तटों से होकर बहती है, जो उस क्षेत्र को बर्फ में बदल देती है।

(2) गर्म और ठंडी धाराओं का मिश्रण मत्स्य उत्पादन के लिए समताप की स्थिति उत्पन्न करता है क्योंकि यह मछलियों के लिए एक समुद्री भोजन, प्लैंकटन को पैदा करता है। कनाडा स्थित ग्रांड बैंक मछली उत्पादन के बढ़िया क्षेत्रों में से एक है।

(3) समुद्री जलधाराएँ वर्षा को भी प्रभावित करती हैं। गर्म धाराओं के ऊपर से गुजरने वाली हवाएँ आर्द्र हो जाती हैं, जिनके कारण समुद्री तटों पर अच्छी वर्षा होती है। इसके विपरीत, ठंडी धाराओं से होकर गुजरने वाली हवाओं में बहुत ही कम वर्षा होती है।

(4) समुद्री जलधाराएँ व्यापार को भी प्रभावित करती हैं। जिन क्षेत्रों से होकर गर्म धाराएँ बहती हैं, वहाँ वर्षभर नौकायान या जल-यातायात की सुविधाएँ उपलब्ध रहती हैं। इसके विपरीत, ठंडी धाराओं वाले क्षेत्रों में बर्फ जम जाने के कारण जल यातायात संभव नहीं हो पाता है।

(5) समुद्री जलधाराएँ पर्यावरण को भी प्रभावित करती हैं। गर्म और ठंडी जलधाराओं के मिलने से घने कोहरे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे जहाजों का आवागमन रूक जाता है तथा जहाजों में संबंधित दुर्घटनाएँ होना आम बात होती है।

(ii) मसुलीपत्तनम शहर कृष्णा बेसिन तथा आंध्र के तट (कोरोमण्डल तट) पर स्थित मत्स्य बंदरगाह है। 17वीं शताब्दी में डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी और अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इस पर अपना अधिकार जमाने के लिए प्रयास किया। व्यापार की मुख्य वस्तु मछली थी, इसीलिए इस शहर का नाम मछलीपत्तनम पड़ा। गोलकुण्डा के कुतुबशाही शासकों ने अपने शाही एकाधिकार के द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर मछलीपत्तनम के साथ कपड़ा, मसालों जैसी वस्तुओं के व्यापार पर रोक लगाने का प्रयास किया। ईस्टइ ण्डियाक म्पनीव ेए कप ैक्टर,f वलियमम ेथवल्डन ेइ स शहर को इसकी घनी आबादी, बाह्य बसावट तथा टूटी-फूटी इमारतों (मकानों) के कारण गरीब मछुआरों का शहर कहकर पुकारा था, परंतु बाद में गोलकुण्डा के अमीरों, ईरानी व्यापारियों, तेलुगु कोमाती, चेट्टियों, डचों, अंग्रेजों तथा पुर्तगालियों ने इसकी जनसंख्या को और बढ़ाया तथा इसे आंतरिक व्यापारिक प्रतिस्पर्धा

के कारण एक संपन्न और समृद्ध शहर में तब्दील कर दिया।

मुगल सम्राट औरंगजेब के कारण यहाँ के व्यापारी इस नगर को छोड़कर बंबई, मद्रास और कलकता चले गए और इस तरह से मछलीपत्तनम की संपन्नता सदा के लिए समाप्त हो गई।

(iii) महिलाओं की सामाजिक असमानता निम्नलिखित प्रकार से पाई जाती है :

(1) परिवार में : अनेक परिवार लड़कियों की अपेक्षा लड़कों से अच्छा व्यवहार करते हैं। माताएँ अपने बेटों को बेटियों की अपेक्षा अच्छा भोजन, कपड़े, खिलौने और शिक्षा उपलब्ध कराती हैं। महिलाएँ होते हुए भी वे अपनी बेटियों से बुरा व्यवहार करती हैं।

(2) स्वास्थ्य की रक्षा करने में : यदि देहात में कोई लड़की बीमार पड़ जाती है तो उसे झोलाछाप डॉक्टर से दवाई दिलाकर खानापूर्ति कर दी जाती है। कभी-कभी बच्ची का इलाज ठीक न होने के कारण उसकी मौत भी हो जाती है। यदि लड़की बच जाती है तो उसे ठीक इलाज न दिलाकर भगवान भरोसे छोड़ दिया जाता है। देश के कुछ हिस्सों में गर्भ में ही कन्या भ्रूण की हत्या कर दी जाती है।

(3) शिक्षा में : कुछ लोग अपनी बेटियों की अपेक्षा, बेटों को महँगे विद्यालयों में शिक्षा दिलाने के लिए दाखिल कराते हैं तथा बेटों की शिक्षा पर बहुत अधिक पैसा खर्च करते हैं। उनका विश्वास है कि बेटे उनकी दौलत हैं और वे ही उन्हें कमाकर धन देंगे। दूसरी ओर उनके विचार में लड़कियाँ पराया धन होती हैं।

आदर्श प्रश्न-पत्र-III

रचनात्मक निर्धारण

1. सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाइए :

(i) (b) अवसादी चट्टानों में   (ii) (a) बाल्टी

(iii) (b) विदेशी यात्री

(iv) (c) गीतगोविन्द (v) (c) 25 वर्ष से कम

(vi) (b) उत्पादन का उपभोग करता है

2. निम्नलिखित को सही मिलान कीजिए :

'अ'	'ब'
बद्दू	सहारा मरुस्थल के गड़रिए
गंगोत्री	ग्लेशियर
याक	लद्दाख में पाया जाने वाला बैल जैसा पशु
काहिरा	लद्दाख की राजधानी
लेह	मिस्र की राजधानी
बाराला चाला	दर्रा

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(i) अनुपजाऊ   (ii) शाहजहाँ   (iii) बाबर

(iv) कठिन   (v) खुदरा व्यापारी, थोक व्यापारी

(vi) बाजार

4. उचित कारण बताइए :

(i) वायुमण्डलीय ताप और दाब के कारण अवसादी चट्टानें रूपांतरित चट्टानों में परिवर्तित हो जाती हैं।

(ii) याकव ेद ूधस ेप नीरत थाम क्खनअ ादिब नाएज ातेह ैंइ सके साथ-साथ याक से ऊन भी प्राप्त की जाती है। अत: याक लद्दाखियों का सबसे उपयोगी जंतु है।

(iii) यूरोपवासियों ने सूरत में अपनी फैक्ट्रियाँ और गोदाम स्थापित किए थे ताकि वे वहाँ से सूती वस्त्रों, मसालों और अन्य दूसरी वस्तुओं का व्यापार कर सकें।

(iv) क्योंकि मुजाहिन वे मुसलमान हैं, जो 1947 ई. के भारत विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए थे, इसीलिए उन्हें पाकिस्तानी नागरिकों के समान अधिकार नहीं दिए गए हैं।

(v) क्योंकि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लिंग की विभिन्न भूमिकाएँ होती हैं। लिंग की भूमिकाओं को बदला जा सकता है परंतु स्त्री या पुरुष का यौन गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) द्वारा निश्चित होता है और इसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

(vi) क्योंकि अधिकतर पशु गाँवों के किसानों या व्यापारियों द्वारा पाले जाते हैं। अत: पशु बाजार सामान्यत: गाँवों में लगते हैं।

संकलित निर्धारण

1. एक पंक्ति में उत्तर :

(i) अमेजिन बेसिन में गर्म जलवायु और अधिक वर्षा के कारण सघन वन पाए जाते हैं।

(ii) प्रेयरी उत्तरी अमेरिका में रॉकी पर्वत के पश्चिम से पूर्व में स्थित महान झीलों के क्षेत्र तक फैले हैं। ये घास भूमियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा में फैली हैं।

(iii) कैलाशनाथ एवं महाबलिपुरम मंदिर।

(iv) ताप्ती नदी।

(v) तलबंडी (पाकिस्तान)।

(vi) जब कोई भी विज्ञापन जनता, सरकार या अन्य किसी एजेंसी से नियंत्रित या प्रभावित नहीं होता, तो इसे स्वतंत्र विज्ञापन कहते हैं।

2. 5 पंक्तियों में उत्तर :

(i) गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में स्थित शहरों में अनेक प्रकार के उद्योगों की स्थापनाक ेग ईह ैंउ दाहरणव ेि लए–मेरठ,क ानपुर,व ाराणसी

और ढाका (बांग्लादेश) में सूती वस्त्र उद्योग तथा रासायनिक पदार्थों को बनाने के उद्योग स्थापित किए गए हैं। मेरठ की अपनी अलग पहचान कैंची उद्योग, खेल के सामानों के निर्माण तथा पुस्तकों के प्रकाशन स्थल के रूप में भी की जाती है। वाराणसी और ढाका रेशम उत्पादन और जूट उद्योग के लिए प्रसिद्ध हैं। असम में तेल शोधशालाएँ तथा प्राकृतिक गैस व पेट्रोकैमिकल्स के कारखाने हैं। कोलकाता में जूट मिल तथा जलयान निर्माण के उद्योग स्थापित हैं। असम और बांग्लादेश के नगरों के विभिन्न प्रकार की हस्तकलाएँ, लघु उद्योग के रूप में प्रचलन में हैं। कुछ लोग पर्यटन उद्योग में लगे हुए हैं क्योंकि इस क्षेत्र में ऐतिहासिक तथा धार्मिक महत्त्व के नगर; जैसे–आगरा, लखनऊ, वाराणसी, मथुरा, इलाहाबाद आदि बड़ी संख्या में पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

(ii) प्रेयरी में घास की विस्तृत भूमियों में लोग बड़े पैमाने पर पशुपालन करते हैं, जो उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। वे शहरों के निकट दुग्धशालाओं की स्थापना करते हैं ताकि दुग्ध उत्पाद स्थानीय बाजारों में बेचे जा सकें। गाय फसलों को खाती हैं तथा वे दूधअ ौरम ांसव र्े लएउ पयोगम ें ल ाईज ातीह ैं।इ सप्र कारव र्े व्यवसाय को मिश्रित खेती कहते हैं।

(iii) 12वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्थापत्य कला की 'कॉरबेल्ड' या 'ट्रेबीट' शैली का प्रयोग मसजिदों, मकबरों, मंदिरों और अन्य बहुत–सी इमारतों के निर्माण में किया गया, जिसमें छतों, दरवाजों और खिड़कियों का निर्माण दो ऊध्वार्धर स्तंभों के आर–पार शहतीर को क्षैतिज अवस्था में रखकर किया गया। इसके अतिरिक्त स्मारकों और इमारतों से जुड़ी हुई बड़ी सीढ़ियोंदार बावड़ियों (कुओं) का निर्माण भी किया गया था। कॉरबेल्ड शैली का प्रयोग कव्वतुल–इस्लाम मसजिद में स्क्रीन के निर्माण में किया गया है।

(iv) कबीर को वाराणसी में लहरतारा तालाब के किनारे नीरू और नामक जुलाहा दंपत्ति के द्वारा पाया गया था। उन्होंने मूर्ति पूजा, जाति प्रथा, ऊँच–नीच तथा छुआछूत आदि का विरोध किया। वह हिंदू–मुसलमान एकता तथा निर्गुण भक्ति में विश्वास करते थे। उन्होंने खड़ी बोली में दोहों की रचना की तथा भक्ति के उपदेश दिए। वे रामानंद के शिष्य थे।

(v) वे बाजार, जहाँ वस्तुएँ खुली अवस्था में, एक या कुछ की मात्रा में बेचीज ातीह ैं,ख ुदराब ाजारक हलातेह ैं।स ाप्ताहिकप ैठब ाजार, गली–मुहल्ले की दुकानें, बस स्टॉप तथा रेलवे स्टेशन पर लगे स्टॉल, मॉल, सुपर मार्केट आदि खुदरा बाजार के ही अंग हैं। इन बाजारों में वस्तुओं को थोक व्यापारियों की अपेक्षा थोड़े ज्यादा लाभ पर बेचा जाता है।

3. 10 या 12 पंक्तियों में उत्तर :

(i) सहारा के निवासियों को बद्दू कहा जाता है। ये लोग घुमक्कड़ और खानाबदोश जीवन जीते हैं। ये लोग ऊँट, घोड़े, खच्चर, गधे तथा भेड़–बकरियाँ पालते हैं। ये भोजन की तलाश में यहाँ से वहाँ घूमते रहते हैं। ऊँट तथा घोड़ों की पीठ पर ये अपना सामान एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। जानवरों से इन्हें दूध, खाल, हड्डियाँ आदि मिलते हैं। पशुओं की खाल (चमड़े) से भी लोग अपने उपयोग की चीजों का निर्माण करते हैं। यहाँ के गड़रिए तुएरेग कहलाते हैं; जो बकरी, भेड़ तथा ऊँट पालते हैं। ये लोग पूर्णतया दूध, मांस और खजूर पर निर्भर करते हैं। आधुनिक युग में बद्दू और तुएरेग लोगों ने अधिवासी जीवन शुरू कर दिया है तथा अपने रहन–सहन के ढंग कोप ूर्णत:प रिवर्तितक र ि लयाह ै।ि मस्रम ें न ीलन दीक ेघ ाटी उत्तम श्रेणी की कपास और गन्ना उत्पादन के लिए विख्यात है। खजूर के रस से शराब बनाई जाती है तथा इसकी पत्तियों से टोकरियाँ, पंखे तथा मकानों की छतें बनाई जाती हैं।

इनके अतिरिक्त व्यापार, खनन, शिल्पकारी तथा जमीन से खनिज तेल के उत्पादन आदि कुछ अन्य व्यवसायों में भी यहाँ के लोग लगे हुए हैं।

(ii) **मुगलकाल में साहित्य और भाषा :**म ुगलोंव ेस मयस रकारी काम-काज की भाषा फारसी थी। आगरा फतेहपुर सीकरी और दिल्ली मुगल की राजधानी रहे थे, इसीलिए इन नगरों के आस-पास ही साहित्य और भाषा का विकास हो सका। मुगल शासक साहित्य के महान संरक्षक थे और उन्होंने इसको काफी सीमा तक प्रोत्साहित किया। तुर्की, फारसी और हिंदी भाषाओं का प्रयोग अधिक मात्रा में होता था। इस काल में अबुल फजल का अकबरनामा, बाबर का बाबरनामा, जहाँगीर की तुजुक-ए-खाना, फैजी की फारसी में कविताएँ, अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना के हिंदी में लिखे दोहे, गुलबदन बानो बेगम का हुमायूँनामा आदि प्रमुख पुस्तकें थीं। शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह संस्कृत और फारसी का प्रकाण्ड विद्वान था। उसने संस्कृत की बहुत-सी पुस्तकों और उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया।

इसके अलावा हिंदी के महान कवि तुलसीदास ने रामचरितमानस तथा सूरदास ने सूरसागर की रचना भी इसी काल में की थी। बदायूँनी तथा अब्दुल हमीद लाहौरी ने भी फारसी में अनेक पुस्तकों की रचना की थी।

(iii) एक प्रजातांत्रिक देश में मीडिया एक उल्लेखनीय और अतिमहत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह लोगों को सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों से अवगत कराता है। यदि लोग इन कार्यक्रमों और नीतियों को पसंद नहीं करते हैं तो वे प्रश्न पूछकर, संबंधित अधिकारी या मंत्री को पत्र लिखकर, समाचार-पत्रों में आर्टिकलि लिखकर,ह स्ताक्षरअ भियानच लाकरअ ादिव ेद ्वारा अपना विरोध प्रकट कर सकते हैं। जब मीडिया की खबरें जनता,

सरकार या अन्य एजेंसी किसी से नियंत्रित या प्रभावित नहीं होती तो इसे स्वतंत्र मीडिया कहते हैं। केवल स्वतंत्र मीडिया ही संतुलित रिपोर्ट लिख सकता है। स्वतंत्र मीडिया बिना समावेशों के खबरों को प्रकाशित या संचारित करता है। इसीलिए प्रजातंत्र में स्वतंत्र मीडिया अतिमहत्त्वपूर्ण है। अत: मीडिया द्वारा उपलब्ध कराई गई खबर विश्वनसीय होनी चाहिए, न कि पूर्वाग्रह पर आधारित।

कभी-कभी सरकार सेंसरशिप/प्रकाश नियंत्रण के माध्यम से मीडिया की खबरों या टीवी पर दिखाए जाने वाले दृश्यों को नियंत्रित करती है। सरकार इस कार्य को राष्ट्रीय अशांति या संकटकाल के समय करती है। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया को स्वतंत्र नहीं छोड़ा जा सकता, उसकी स्वतंत्रता पर रोक लगा दी जाती है।